कल्याण



सन्त श्रीरामानुजाचार्यजी

मूल्य १० रुपये





मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥



मूक होइ बाचाल पंगु चढ़इ गिरिबर गहन। जास् कृपाँ सो दयाल द्रवउ सकल कलि मल दहन॥

पूर्ण संख्या ११४५

र्श्व र्श्व

[विनय-पत्रिका]

संख्या

मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम

श्रीरामचंद्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं। नवकंज-लोचन, कंज-मुख, कर-कंज, कंजारुणं॥ पद अमित छवि, नवनील कंदर्प अगणित नीरद सुंदरं। पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं॥ दिनेश दानव-दैत्य-वंश दीनबंध् निकंदनं। भज़् आनँदकंद कोशलचंद दशरथ-नंदनं॥ रघुनंद मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं। सिर शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणं॥ आजानुभुज तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं। इति वदति हृदय कंज निवास कुरु, कामादि खल-दल-गंजनं॥ मम

राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। (संस्करण १,८०,०००) कल्याण, सौर वैशाख, वि० सं० २०७९, श्रीकृष्ण-सं० ५२४८, अप्रैल २०२२ ई०, वर्ष ९६ — अंक ४ विषय-सूची पृष्ठ-संख्या पृष्ठ-संख्या विषय विषय १- मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम..... ३ १९- उपनिषदोंमें प्रणव-निरूपण (डॉ० श्रीइन्द्रमोहनजी झा 'सच्चन') ३० २- सम्पादकीय ५ २०- सर्वोत्तम धन [**बोध-कथा**]...... ३१ २१- सरल जीवन ही सच्चा ज्ञान है (श्रीदिलीपजी देवनानी)....... ३२ ३- कल्याण...... ६ ४- शेषावतार भगवानु श्रीरामानुजाचार्य [आवरणचित्र-परिचय] ७ २२- आत्माकी खोज ही गीता है (श्रीओमप्रकाशजी पोद्दार) ३३ ५- जीवन-निर्माणकी बातें २३- भगवद्गीताका अद्भुत माहात्म्य **[बोध-कथा**]...... ३६ (ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका)......८ २४- हिमाचलकी आस्थाकी प्रतीक-श्रीबज्रेश्वरीदेवी [तीर्थदर्शन] ६- जब अपवित्र विचार घेरते हैं! [हमारे आन्तरिक शत्र] (श्रीउदयजी ठाकुर)......३७ २५- श्रीनारायणदासजी भक्तमाली 'मामाजी' [संत-संस्मरण] (श्रीकृष्णदत्तजी भट्ट) ९ ७- श्रीरामनवमी (परम श्रद्धेय श्रीराधेश्यामजी खेमका, पूर्वसम्पादक 'कल्याण') .. ३९ (नित्यलीलालीन भाईजी श्रीहनमानप्रसादजी पोद्दार)......१४ २६- परमात्मा सर्वव्यापक है **[बोध-कथा]**.....४१ ८- बोझ प्रभुके कंधेपर (संत श्रीविनोबाजी भावे)......१५ २७- गोपालनमें सधारकी अनिवार्यता (श्रीमल्कराजजी विरमानी).... ४२ ९- जाग्रतमें सुषुप्ति [साधकोंके प्रति] २८- मुर्तिपुजा (ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीशरणानन्दजी महाराज) ... ४३ (ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज) १६ २९- सुभाषित-त्रिवेणी ४४ १०- तुकारामजीकी शान्ति [बोध-कथा]......१६ ३०- **व्रतोत्सव-पर्व** [ज्येष्ठमासके व्रत-पर्व]४५ ११- नन्दादेवीकी प्राकट्य-कथा १७ ३१- कृपानुभूति४६ १२- सन्त-स्वभाव [सत्यकथा] (श्रीचारुचन्द्र शीलजी)....... १९ श्रीदुर्गासप्तशतीके अनुष्ठानसे माँके दिव्य दर्शन ४६ १३- नव संवत्सर—नयी ऊर्जाके प्राकट्यका अवसर ३२- पढ़ो, समझो और करो४७ (१) सत्साहित्यके पठनसे जीवन-निर्माण ४७ (प्रो॰ डॉ॰ श्रीगिरिजाशंकरजी शास्त्री)....... २३ १४- संवत्सर-पूजन ... २४ (२) परायी वस्तुका लोभ न करो४८ १५- 'नामु राम को कलपतरु' (श्रीगजाननजी पाण्डेय)...... २५ (३) क्रोध महान् शत्रु है ४९ (४) ईमानदारीका उदाहरण......४९ १६- गुप्त नवरात्र (श्रीकौशलजी पाण्डेय)......२६ १७- भागवतकी आत्मा-चतु:श्लोकी (५) निर्भीक पत्रकारका धर्म ४९ (डॉ॰ श्रीयुत श्रीभागवर्तशरणजी मिश्रा)......२८ ३३- मनन करने योग्य ५० १८- वरणीय दु:ख है, सुख नहीं [बोध-कथा] २९ तृष्णा ही दु:खका कारण ५० चित्र-सूची २- मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम मुख-पुष्ठ जय पावक रवि चन्द्र जयति जय । सत्-चित्-आनँद भूमा जय जय॥ जय जय विश्वरूप हरि जय । जय हर अखिलात्मन् जय जय॥ एकवर्षीय शुल्क पंचवर्षीय शुल्क जगत्पते। गौरीपति विराट जय रमापते ॥ जय ₹ २५० ₹ १२५० विदेशमें Air Mail) वार्षिक US\$ 50 (₹ 3,000) Us Cheque Collection पंचवर्षीय US\$ 250 (₹ 15,000) Charges 6\$ Extra संस्थापक - ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका आदिसम्पादक — नित्यलीलालीन भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार सम्पादक-प्रेमप्रकाश लक्कड केशोराम अग्रवालद्वारा गोबिन्दभवन-कार्यालय के लिये गीताप्रेस, गोरखपुर से मुद्रित तथा प्रकाशित

website : gitapress.org e-mail : kalyan@gitapress.org & 09235400242 / 244

सदस्यता-शुल्क —व्यवस्थापक—'कल्याण-कार्यालय', पो० गीताप्रेस—२७३००५, गोरखपुर को भेजें। Online सदस्यता हेतु gitapress.org पर Kalyan या Kalyan Subscription option पर click करें।

Online सदस्यता हेतु gitapress.org पर Kalyan या Kalyan Subscription option पर click करें। अब 'कल्याण' के मासिक अङ्क gitapress.org अथवा book.gitapress.org पर नि:शुल्क पढें। संख्या ४] सम्पादकीय राम राम राम हरे। राम राम हरे। हरे हरे राम हरे हरे राम हरे राम हरे हरे॥ हरे हरे हरे हरे हरे॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण कष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे हरे हरे हरे हरे राम हरे । राम राम राम राम राम राम राम हरे हरे॥ हरे हरे हरे॥ हरे हरे हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे हरे । हरे हरे । राम हरे राम राम राम हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे हरे हरे॥ हरे ॥ कृष्ण कृष्ण हरे हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे हरे। हरे हरे हरे। हरे हरे राम राम राम राम राम राम राम राम हरे॥ हरे हरे हरे कृष्ण 2K3 हरे हरे ॥ श्रीहरि:॥ हरे हरे। राम ाम हरे हरे हरे हरे॥ कृष्ण कृष्ण 243 हमें मानव शरीर प्राप्त हुआ है, यह प्रभुकी अपार कृपा हरे हरे हरे हरे । राम SH. है। किंतु इस कृपाकी अनुभूति हमें अपनी इच्छाओंके अनन्त * हरे हरे हरे॥ हरे कृष्ण कृष्ण हरे हरे जंजालके कारण नहीं हो पाती। यदि विचार करें तो पाँच 547 हरे हरे । ** राम ाम हरे हरे॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण 243 जानेन्द्रियों और पाँच कर्मेन्द्रियोंसे युक्त यह हमारा मानव शरीर **%** हरे हरे हरे। हरे राम TН ऐसा बहुमुल्य यन्त्र है, जिसकी कोई तुलना नहीं हो सकती। ** हरे हरे हरे हरे॥ कृष्ण कृष्ण हरे हरे £ राम ीम हरे हरे । एक वैज्ञानिक अध्ययनमें पाया गया है कि यदि मानव मन-हरे हरे कृष्ण हरे॥ हरे कृष्ण **%** ** मस्तिष्क-जैसी कोई कम्प्यूटर-चालित व्यवस्था बनाना सम्भव हरे हरे हरे हरे। П राम SH. हरे हरे * भी हो तो उसे स्थापित करनेमें पूरे एक शहर जितनी जगहकी कृष्ण हरे हरे॥ कृष्ण हरे हरे हरे हरे। राम ीम # H 24 आवश्यकता होगी। अब एक छोटी-सी खोपड़ीमें इतनी हरे॥ हरे हरे हरे कृष्ण कृष्ण # H ** व्यवस्था बनाना प्रभुकी कृपाका चमत्कार ही तो है। किंतु हम हरे हरे ाम हरे हरे। राम हरे हरे # S हरे हरे॥ 2 कृष्ण इस सबके लिये कितनी बार कृतज्ञतापूर्वक प्रभुका स्मरण कृष्ण हरे हरे हरे। हरे राम TH # H 24 कर पाते हैं ? इसका प्रधान कारण है कि हमें अपनी अतुप्त हरे हरे हरे हरे॥ कृष्ण कृष्ण * हरे हरे इच्छाओंके जंजालसे फुरसत ही नहीं मिलती। हरे। हरे राम ीम हरे हरे हरे॥ हरे **H** कृष्ण कृष्ण 243 अतः हर विवेकशील मनुष्यको अपने पारिवारिक, हरे हरे हरे हरे। राम * * सामाजिक और व्यावसायिक कर्तव्योंको करते हुए ही बीच-हरे हरे॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे हरे 24 SH. हरे हरे । राम बीचमें भगवानुकी अहैतुकी कृपाका स्मरण और मन-ही-मन ाम हरे हरे॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण K K कृतज्ञता-ज्ञापन करते रहना चाहिये हरे हरे हरे हरे। राम * हरि तुम बहुत अनुग्रह कीन्हों। हरे हरे हरे॥ हरे कृष्ण कृष्ण हरे साधन धाम बिबुध दुर्लभ तनु मोहि कृपा करि दीन्हों॥ **%** हरे 243 हरे हरे । राम ĪН हरे हरे हरे॥ हरे कृष्ण कृष्ण 200 * सम्पादक हरे हरे हरे हरे। राम हरे॥ हरे कृष्ण कृष्ण हरे ॥ हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे हरे हरे। हरे । हरे राम हरे राम राम हरे हरे राम हरे राम राम राम राम हरे हरे॥ हरे हरे हरे॥ हरे हरे हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कष्ण कृष्ण हरे हरे हरे हरे । हरे हरे हरे हरे। राम राम राम राम राम राम राम राम हरे॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण हरे हरे कृष्ण हरे हरे हरे॥ कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे हरे हरे। हरे हरे । हरे राम हरे राम राम राम राम राम राम राम हरे कृष्ण हरे ॥ हरे कृष्ण हरे हरे ॥ हरे हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे हरे। हरे राम हरे हरे हरे राम हरे। राम राम राम राम राम राम हरे

हरे ॥

हरे

कृष्ण

हरे

कृष्ण

हरे

कृष्ण

कृष्ण

हरे

कृष्ण

कृष्ण

कृष्ण

हरे॥

हरे

कृष्ण

कल्याण याद रखो-तुम दूसरोंको जो कुछ दोगे, वही याद रखो-यदि तुम अपने मनमें किसीकी

कल्याण

तुम्हें मिलेगा और मिलेगा अनन्तगुना होकर। घृणा, द्वेष, वैर, द्रोह, ईर्ष्या, बुराई अथवा प्रेम, सद्भाव, मैत्री, सहानुभृति, आत्मीयता, भलाई—इनमेंसे कुछ

भी देकर देख लो। याद रखो-तुम यदि यह सोचोगे कि 'अमुक

मनुष्यमें यह बुराई है, इतनी बुराई है', तो वह और उतनी ही बुराई तुम उसे दोगे। जिसमें बुराई है,

वह दुर्बल है; क्योंकि वह बुराईका नाश करनेमें असमर्थ हो रहा है। और दुर्बलपर ही दूसरेके विचारोंका अधिक प्रभाव पड़ता है। अतएव यदि

तुम किसी विकारग्रस्त मनुष्यके साथ घृणा करते हो, उसे बुरा समझते हो, तो वह तुम्हारी दी हुई

इन चीजोंको अपनाकर तुमसे और भी घृणा, तुम्हारे साथ और भी बुराई करने लगेगा। यों उसमें बुराई बढ जायगी और जिसके पास जो चीज होती है,

वह उसीको देता है, इस न्यायसे जो भी उसके सम्पर्कमें आयेगा, उसको उससे वही वस्तु मिलेगी। इससे बुराईका विस्तार हो जायगा। याद रखो-यदि तुम यह मानते हो कि 'दूसरे

किसीमें कोई भी गुण नहीं है, दोष-ही-दोष है', तो तुम भूल करते हो। गुणकी तो बात ही क्या है,

वस्तृत: सबमें एकमात्र ईश्वर ही वर्तमान हैं; परंतृ तुम्हारी आँखें ईश्वरको न देखकर बुराई और दोष ही देखती हैं, इससे तुम्हें वही चीजें मिलती हैं,

ईश्वर नहीं मिलते। याद रखो-तुम जितना ही दूसरोंको बुरा समझते हो, उतना ही उनके प्रति बुराईके भागी होते हो और उतना ही बुराईका विष बढ़कर तुम्हारे तो शायद ही तुम्हारा कोई वैरी रहेगा; परंत यदि इसपर भी तुम्हारे प्रति कोई शत्रुता रखे-जिसकी

बुराई नहीं देखोगे, किसीको अपना वैरी नहीं मानोगे

िभाग ९६

सम्भावना बहुत कम है-बहुत बार तो तुम्हें अपने ही मनके दुषित भावसे दूसरेमें शत्रुपना दिखायी देता है-तो तुम उस शत्रुताका बदला प्रेम, हित और भलाईसे दो। तुम्हारा यह प्रेम, हित और

भलाईका व्यवहार उसकी शत्रुताके प्रयत्नको निष्फल कर देगा और परिणाममें उसके मनका शत्रुभाव मित्रभावमें परिणत हो जायगा। यों उसको तुम एक बडी विपत्तिसे बचा लोगे और स्वयं तो

बचोगे ही। याद रखों—यदि एक भी मनुष्यको तुमने प्रेम देकर घृणा तथा बुराईके विषसे बचा लिया, उसके मनमें प्रेम भर दिया, तो उसके द्वारा समाजमें घृणा तथा बुराईका विष फैलना बन्द हो जायगा।

प्रेमके अमृतका प्रसार होगा और इस प्रकार तुम समाजकी बडी सेवा कर सकोगे। याद रखो-यदि तुमने बुराईका बदला बुराईसे दिया, तो तुमने बुराईकी जलती हुई आगमें घी और

ईंधन झोंक दिया। उससे बुराईकी अग्नि और भी भडक जायगी और चारों ओर फैलकर उसको, तुमको और पास-पडोसियोंको ही नहीं; ग्राम, नगर और देशको भी जलानेमें कारण बन जायगी। याद रखो-यदि तुम प्रेम करोगे-प्रचुर प्रेम

करोगे तो बुराईकी, द्वेषकी आगमें पानीकी वर्षा कर

दोगे, इससे बुराईकी आग बुझ जायगी। तुम्हारे पास बिखरी हुई—बढ़ी हुई पवित्र प्रेमकी सरिता आयेगी, जो तुम्हारे जीवनको निर्भय, सुखी और पास लौटता है और वह शूलकी तरह तुम्हारे हृदयमें चुभक्त uर्जुम्हामी ब्रुएङ्यों हो और भी ब्रुल्स हेता.हैं /dhaर्गान्त विमिर्ट भी में LOVE BY Avinash/Sh

शेषावतार भगवान् श्रीरामानुजाचार्य संख्या ४]

शेषावतार भगवान् श्रीरामानुजाचार्य

नामसे प्रसिद्ध है और इनका सम्प्रदाय भी 'श्रीसम्प्रदाय' मध्यकालीन संतोंमें श्रीरामानुजाचार्यका नाम बडे

कहलाता है: क्योंकि इस सम्प्रदायकी आद्यप्रवर्तिका

ही आदरसे लिया जाता है। ये विद्वान्, सदाचारी, श्रीश्रीमहालक्ष्मीजी मानी जाती हैं। यह ग्रन्थ पहले-

धैर्यवान्, सरल एवं उदार थे। ये आचार्य आलवन्दार (यामुनाचार्य)-की परम्परामें थे। इनके पिताका नाम

आवरणचित्र-परिचय-

केशवभट्ट था। ये दक्षिणके तिरुकुदूर नामक क्षेत्रमें रहते थे। जब इनकी अवस्था बहुत छोटी थी, तभी इनके

पिताका देहान्त हो गया और इन्होंने कांचीमें जाकर गुरुसे वेदाध्ययन किया।

जब महात्मा आलवन्दार मृत्युकी घडियाँ गिन रहे

थे, उन्होंने अपने शिष्यके द्वारा रामानुजाचार्यको अपने

पास बुलवा भेजा। परंतु रामानुजके श्रीरंगम् पहुँचनेके पहले ही आलवन्दार (यामुनाचार्य) भगवान् नारायणके धाममें पहुँच चुके थे। रामानुजने देखा कि श्रीयामुनाचार्यके

हाथकी तीन उँगलियाँ मुडी हुई हैं। इसका कारण कोई नहीं समझ सका। रामानुज तुरंत ताड गये कि यह संकेत मेरे लिये है। उन्होंने यह जान लिया कि श्रीयामुनाचार्य मेरेद्वारा ब्रह्मसूत्र, विष्णुसहस्रनाम और

चाहते हैं। उन्होंने आलवन्दारके मृत शरीरको प्रणाम किया और कहा—'भगवन्! मुझे आपकी आज्ञा

शिरोधार्य है, मैं इन तीनों ग्रन्थोंकी टीका अवश्य लिखुँगा अथवा लिखवाऊँगा।' रामानुजके यह कहते ही आलवन्दारकी तीनों उँगलियाँ सीधी हो गयीं। इसके

बाद श्रीरामानुजने आलवन्दारके प्रधान शिष्य पेरियनाम्बिसे विधिपूर्वक वैष्णव-दीक्षा ली और वे भक्तिमार्गमें प्रवृत्त हो गये।

रामानुज गृहस्थ थे; परंतु जब उन्होंने देखा कि गृहस्थीमें रहकर अपने उद्देश्यको पुरा करना कठिन है, तब

उन्होंने गृहस्थका परित्याग कर दिया और श्रीरंगम् जाकर यतिराज नामक संन्यासीसे संन्यासकी दीक्षा ले ली। रामानजने आलवारोंके भक्तिमार्गका प्रचार करनेके

आलवन्दारोंके 'दिव्यप्रबन्धम्' की टीका करवाना

लिये सारे भारतकी यात्रा की और गीता तथा ब्रह्मसूत्रपर भाष्य लिखे। वेदान्तसूत्रोंपर इनका भाष्य 'श्रीभाष्य' के दर्शनीय है।

पहल काश्मीरके विद्वानोंको सुनाया गया था। इनके प्रधान शिष्यका नाम कूरत्तालवार (कूरेश) कुरत्तालवारके पराशर और पिल्लन् नामके दो पुत्र थे।

रामानुजने पराशरके द्वारा विष्णुसहस्रनामकी और पिल्लन्से

'दिव्यप्रबन्धम्' की टीका लिखवायी। इस प्रकार उन्होंने आलवन्दारकी तीनों इच्छाओंको पूर्ण किया। श्रीरामानुजने तिरुकोट्टियुरके महात्मा नाम्बिसे अष्टाक्षर

मन्त्र (ॐ नमो नारायणाय)-की दीक्षा ली थी। नाम्बिने मन्त्र देते समय इनसे कहा था कि 'तुम इस मन्त्रको गुप्त रखना।' परंतु रामानुजने सभी वर्णके

लोगोंको एकत्रकर मन्दिरके शिखरपर खडे होकर सब लोगोंको वह मन्त्र सुना दिया। गुरुने जब रामानुजकी इस धृष्टताका हाल सुना, तब वे इनपर बड़े रुष्ट हुए और

कहने लगे—'तुम्हें इस अपराधके बदले नरक भोगना पड़ेगा।' श्रीरामानुजने इसपर बड़े विनयपूर्वक कहा कि 'भगवन्! यदि इस महामन्त्रका उच्चारण करके हजारों

आदमी नरककी यन्त्रणासे बच सकते हैं तो मुझे नरक भोगनेमें आनन्द ही मिलेगा।' रामानुजके इस उत्तरसे गुरुका क्रोध जाता रहा, उन्होंने बडे प्रेमसे इन्हें गले लगाया और आशीर्वाद दिया। इस प्रकार रामानुजने

अपनी समदर्शिता और उदारताका परिचय दिया। श्रीरामानुजाचार्यजी (१०१७-११३७ ई०)-के जन्मकी सहस्राब्दीके उपलक्ष्यमें हैदराबादके मुचिन्तल

नामक स्थानपर चिन्ना जीयर ट्रस्टद्वारा १००० करोडकी लागतमें उनकी २१६ फुट ऊँची पंचधातुसे निर्मित 'स्टैच्यू ऑफ इक्वलिटी' (समताकी प्रतिमा)-का

अनावरण गत बसन्तपंचमी (५ फरवरी, २०२२ ई०)-को माननीय प्रधानमन्त्री श्रीनरेन्द्र मोदीजीद्वारा किया

गया। यह प्रतिमा स्वयंमें अद्वितीय, मनमोहक एवं

अनमोल वचन-

जीवन-निर्माणकी बातें

(ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका) 🕏 जो स्वावलम्बी नहीं होते, जिनका जीवन-निर्वाह दूसरोंकी कमाईसे होता है, जो दूसरोंके द्वारा रक्षित

होकर जीवन धारण करते हैं, वे अपने विचारोंकी उन्नित नहीं कर सकते। उन्हें अपने आश्रयदाताके विचारोंके

आगे दबना पडता है। कभी-कभी तो अपने सद्विचारोंकी हत्यातक करनी पडती है। विचारोंके दबते-दबते

बन जाते हैं। अतएव यथासम्भव स्वावलम्बी बननेकी चेष्टा करनी चाहिये।

चर्चा तो सबसे बढकर प्यारी है। निन्दा-स्तृति और पर-चर्चामें असत्य, द्वेष और दम्भको बहुत गुंजाइश मिल जाती है। अतएव निन्दा या व्यर्थ चर्चा तो कभी नहीं करनी चाहिये। स्वार्थ-सिद्धिके लिये स्तुति करना भी बहुत बुरा है। बिना हुए ही स्वार्थवश किसीके अधिक गुणोंका बखान करना उसको ठगना है। योग्यता प्राप्त

🕏 यद्यपि प्रमादी और विषयासक्त पुरुषोंकी अपेक्षा मान-बड़ाई-प्रतिष्ठाके लिये भी अच्छे कर्म करनेवाले

🕏 हमलोगोंने अपनेसे अधिक धनवानोंकी देखादेखी अपने दैनिक खर्च, खाने-पहननेका खर्च, ब्याह-

🕏 विचारवान् पुरुषोंने लोभको पापका जन्मदाता बताया है। लोभवृत्ति जागनेपर न्यायान्याय और

सत्यासत्यका विचार नहीं ठहर सकता। दूसरोंको धोखा देना, ठगना, धनके लिये नीच-से-नीच कर्म कर बैठना

उत्तम हैं, तथापि आत्माके कल्याण चाहनेवालोंकी तो मान-बडाईसे बडी हानि हो सकती है, उनका वह सब साधन मान-बड़ाईमें चला जाता है। यह बड़ी भयानक, गम्भीर और संक्रामक व्याधि है, जो हृदयके अन्तस्तलमें

न्यायका नाश हो, देश या जाति या पड़ोसी भाइयोंका दु:ख बढ़ जाय, हमें धन मिलना चाहिये। इस

नवीन सद्विचारोंकी सृष्टि होनी रुक जाती है, शरीरकी भाँति उनकी बुद्धि और उनका विवेक भी परमुखापेक्षी

比 आजके कामको कलपर छोड़ना। काम करनेमें दिलको लगाना ही नहीं—यह बहुत ही बुरी आदत

है। इस आदतके वशमें रहनेवाले मनुष्यका इस लोक या परलोकमें उन्नत होना अत्यन्त ही कठिन है। समय

बहुत थोड़ा है, मार्ग दूर है। मृत्यु प्राप्त होने और शरीरपर रोगोंका आक्रमण होनेसे पहले ही तत्पर होकर कर्तव्य-पालनमें लग जाना चाहिये। प्रत्येक सत्कार्यकी प्राप्ति होते ही उत्साहके साथ उसी समय उसे सम्पन्न करनेके

🕏 बड़े-बूढ़े अनुभवी गुरुजनोंकी स्नेहभरी आज्ञाकी अवहेलना करते रहनेसे सन्मार्गपर प्रवृत्त होनेमें बड़ी

बाधा होती है। गुरुजनोंके आशीर्वादसे आयु, विद्या, यश और बलकी वृद्धि होती है। उनके अनुभवपूर्ण वाक्योंसे

हमें जीवन-निर्वाहका मार्ग सुझता है, अतएव यथासाध्य गुरुजनोंकी आज्ञाका पालन करनेमें तत्पर होना चाहिये। 🕏 परायी निन्दा-स्तुति या व्यर्थ चर्चा मनुष्यको बहुत ही मीठी लगती है, जिसमें पर-निन्दा और पर-

शादीका खर्च इतना बढ़ा लिया है कि जिसके कारण आज हमारा जीवन महान् दुखी और अशान्त बन गया है। इसीलिये आज हम धन कमानेके किसी भी साधनको अनुचित नहीं समझते। चाहे जैसे भी हो धर्म जाय,

लोभी मनुष्यका स्वभाव-सा बन जाता है।

होनेपर यथार्थ शब्दोंमें स्तुति करनेपर कर्ताके लिये कोई हानि नहीं है।

न्यायान्यायशुन्य धन-लोलुपताकी इतनी वृद्धिमें अनावश्यक व्यय एक प्रधान कारण है। 🕸 धनलोलुप लोग परमार्थके साधन या आत्मोन्नतिके कार्यमें सहजमें नहीं लग सकते। अतएव मनुष्यको

छिपी रहती है।

लिये प्रस्तुत हो जाना चाहिये।

चाहिये कि यथासाध्य अपनी आवश्यकताओंको घटाये। जितना अधिक कम खर्चमें जीवन-निर्वाह हो, उतना ही कम खर्च करे, धन ज्यादा हो तो उसका उपयोग गरीब, निर्धन, अपाहिज भाई-बहनोंकी सेवामें करे।

संख्या ४] जब अपवित्र विचार घेरते हैं! हमारे आन्तरिक शत्रु-जब अपवित्र विचार घेरते हैं! [काम, कारण और निवारण] (श्रीकृष्णदत्तजी भट्ट) हैं, सिर धुनते हैं और हाथ मलते हैं। 'ब्रह्मचर्येण देवा मृत्युमुपाघ्नत।' ब्रह्मचर्यसे क्या नहीं हो सकता? उससे मृत्युपर विजय प्राप्त की जा सकती है। तब पछिताये होत का, जब चिड़िया चुग गयी खेत। जीवनमें सर्वत्र सफलता प्राप्त की जा सकती है। माखी बैठी शहदपर पंख गये लिपटाय। उससे स्वास्थ्यकी प्राप्ति होती है। हाथ मले अरु सिर धुने लालच बुरी बलाय॥ बलकी वृद्धि होती है। ओजकी प्राप्ति होती है। जरूरत है कि हम शुरूसे सचेत रहें। क्षणिक सुखोंके प्रलोभनसे अपनेको रोकें। कौन नहीं जानता ब्रह्मचर्यसे होनेवाले लाभोंको? इन्द्रियाँ जैसे ही भटकनेके लिये आतुर हों, वैसे ही फिर भी हम ब्रह्मचर्यके पालनके लिये सचेष्ट नहीं उनपर 'ब्रेक' लगा दें। होते। उसकी रक्षाके लिये प्रयत्नशील नहीं होते। कछुएकी तरह जरा-सा खटका होते ही, संकटकी महज इसलिये कि विषयोंमें हमने सुखकी, आनन्दकी जरा-सी आशंका होते ही हम शरीरको समेट लें! कल्पना जो कर रखी है। यदा संहरते चायं कुर्मोऽङ्गानीव सर्वशः। गीताका यह उपदेश हमने सर्वथा भुला दिया है-इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥ ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते। (गीता २।५८) आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः॥ सभी इन्द्रियोंके विषयोंमें हमें सावधान होना (4122) स्पर्शसे, विषयोंसे, इन्द्रियोंके संयोगसे प्राप्त होनेवाले भोग दु:खके ही हेतु हैं। आदि और अन्तवाले हैं, जरा ढील दी कि गये! अनित्य हैं। बुद्धिमान् पुरुष उनमें नहीं रमते। पर, यहाँ तो कुएँमें भाँग जो पड़ी है। अपवित्र विचार आता है, बढ़ता-पनपता है, पुष्पित-पल्लवित होता है, भोग्य प्राणीके प्रति आकर्षण इतना अधिक बढ़ जाता है कि मानवकी बुद्धि हमने बुद्धिको उठाकर ताकपर रख दिया है। दिवाला बोल जाती है। वह रोक नहीं पाता अपने जानते हैं, विषयोंमें क्षणभरके लिये दाद खुजलानेका आनन्द मिलता है और जिन्दगीभरके लिये आपको। मुसीबतमें फँस जाना पड़ता है, रोग-बीमारी, झंझट-इन्द्रियाँ उत्तेजित हो उठती हैं। स्पर्शकी, भोगकी परेशानी, दु:ख-क्लेश, कलह-अशान्ति सदाके लिये आकुलता इतनी बढ़ती है कि उसकी समाप्ति होती है घेर लेती है, फिर भी हम हैं कि मानते ही नहीं! वीर्य और रजके स्खलनमें। और, यह वीर्य और रज क्या है? यह है वह अलभ्य पदार्थ, जिससे प्रजोत्पत्ति होती दु:खोंको हम जान-बूझकर आमन्त्रित करते हैं। ठोंक-बजाकर मुसीबत मोल लेते हैं। है। और जब, दु:खों और कष्टोंमें फँस जाते हैं तो रोते पुरुषका चेहरा इसीसे दमकता है।

इसीसे उसके रोम-रोममें स्फूर्ति रहती है। सो भी किस हिसाबसे? यही उसका बल है, यही उसकी शक्ति है, यही पक्का १मन=४० सेर भोजन=१ सेर रक्त=२ तोला उसका ओजस् है। वीर्य! नारीका लावण्य, उसकी लोनाई, उसका नमक, हम रोज यदि १ सेर भोजन करें, तो तीस दिनमें उसका सलोनापन यही है। मुश्किलसे डेढ़ तोला वीर्य तैयार होगा। सृष्टिका चक्र इसीसे चलता है। माताओंकी गोद इसीसे हरी-भरी होती है। जो वीर्य इतना मूल्यवान् है, उसीकी बर्बादीमें हम आँगनकी खिलखिलाहटका रहस्य इसीमें छिपा कैसे शाहखर्च हैं, सोचकर आश्चर्य होता है! हुआ है। एक बारके सहवासमें डेढ़ तोलेसे कम वीर्यका क्षरण नहीं होता। वीर्य ही वह संजीवनी शक्ति है, जिसपर मानवके मतलब, एक बारके सम्भोगमें महीनेभरकी कमाई शरीरका सारा ढाँचा खड़ा है। गोल! आयुर्वेद कहता है कि रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और वीर्य—ये सात धातुएँ स्वयं स्थित रहकर बापूके शब्दोंमें हम पलभरके लिये भी नहीं सोचते मानव-शरीरको धारण करती हैं। कि 'क्षणिक रसके लिये मैं क्यों तेजहीन होऊँ? जिस वीर्यमें प्रजोत्पत्तिकी शक्ति भरी हुई है, उसका पतन क्यों एते सप्त स्वयं स्थित्वा देहं दधित यन्नृणाम्। होने दूँ? और इस तरह ईश्वरकी दी हुई बख्शीशका रसासृङ्मांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राणि धातवः॥ दुरुपयोग करके मैं ईश्वरका चोर क्यों बनूँ? जिस जानते हैं, वीर्य कितनी मूल्यवान् वस्तु है? वीर्यका संग्रहकर मैं वीर्यवान् बन सकता हूँ, उसका पतन सुश्रुतमें उसकी व्याख्या की गयी है-करके वीर्यहीन क्यों बन्ँ?' रसाद्रक्तं ततो मांसं मांसान्मेदः प्रजायते। मेदसोऽस्थि ततो मज्जा मज्जायाः शुक्रसम्भवः॥ कहा गया है— हम जो भोजन करते हैं, उससे सबसे पहले रस मरणं बिन्दुपातेन जीवनं बिन्दुधारणात्। बनता है। कूड़ा मल-मूत्र-पसीना आदिके रूपमें बाहर मक्खन निकालनेके लिये जिस तरह दुध मथा निकल जाता है। जाता है, ईखसे रस निकालनेके लिये जिस तरह ईखको रससे रक्त बनता है। निचोड़ना पड़ता है, उसी तरह विन्दुपातके लिये सारे रक्तसे मांस बनता है। शरीरको मथ डाला जाता है! मांससे मेद और मेदसे अस्थि बनती है। तभी तो वीर्यके क्षरणके उपरान्त शरीरकी सभी नस-नाड़ियाँ शिथिल हो जाती हैं। लगता है शरीरमें अब अस्थिसे मज्जा बनती है। मज्जासे वीर्य बनता है। कोई दम नहीं रह गया है। चाणक्यने इसीलिये लिखा है-एक धातुसे दूसरी धातु बननेमें ५ दिन लगते हैं। पुराणान्ते श्मशानान्ते मैथुनान्ते च या मितः। ६ धातुओंके बननेमें ६×५=३० दिन लगते हैं। सा मितः सर्वदा चेत् स्यात् को न मुच्चेत बन्धनात्॥ अर्थात् हम आज जो खायेंगे, वह एक महीने बाद 'पुराण सुननेके बाद, श्मशानसे लौटनेके बाद वीर्वाक्षप्रसंख्या मुद्धि दक्षात्रा Server https://dsc.gg/dhattinea मृत्यू A प्रेहिन अपित्र प्रिम्न प्रम्न प्रम्न प्रमाणित प्रम प्रमाणित प्रमाण

संख्या ४] जब अप	वित्र विचार घेरते	हैं!	88
**************************************	******	**************	************
वह यदि सदैव बनी रहे, तो कौन न बन्धनसे	मुक्त यहींसे ह	वेती है।	
हो जाय!'	र्की	र्तिन —गन्दे विषयोंकी	चर्चा करना, मुखसे
× × ×	गन्दी अश	श्लील बातें निकालना, वि	कारोत्तेजक गीत गाना,
विषयवासनासे हमारी अक्लपर पर्दा पड़ जात	है। गन्दा अश	रलील साहित्य पढ़ना, विष्	ग्यवार्तामें रस लेना भी
तभी न हम बार-बार गिरकर और पछता-पछताकर	फिर पतनका	एक प्रकार है।	
भी गिरते ही चले जाते हैं।	केर्र	लि —कामवासनासे केलि ।	(क्रीड़ा) करना, हँसना,
× × ×	गुदगुदान	ा, अंगोंका स्पर्श करना,	, ताश-चौपड़ आदि
आज हमारा राष्ट्र इतना दुर्बल है, अशक्त	है, खेलना १	भी पतनका एक प्रकार है	है ।
कमजोर है, क्षय–जैसे भयंकर रोगोंका शिकार है, व	यों ? प्रे8	भ्रण —कामासक्त होकर 1	किसीको टेढ़ी-तिरछी
जवानीमें ही हमारी आँखें गढ़ोंमें धँस जार्त	हैं, नजरोंसे	देखना, किसीको अस्त	-व्यस्त रूपमें, नग्न
गाल पिचक जाते हैं, युवतियाँ एकाध बच्चेको ही	जन्म अथवा	अर्धनग्न-अवस्थामें, स्ना	न करते हुए, बाल
देनेके बाद वृद्धा बन जाती हैं, बच्चे अकाल ही का	लके झाड़ते हु	ुए देखना, गन्दे चित्र, ना	टक, सिनेमा, नौटंकी
गालमें समा जाते हैं—इसका कारण क्या है?	आदि देख	बना, उसमें रस लेना भी प	ातनका एक प्रकार है।
यही कि हम वासनाके कीड़े बन गये हैं। भ	ग- गु ह	ग्रभाषण —एकान्तमें, पत	निवषयक गुप्त और
विलासके पीछे दीवाने बने घूमते हैं। वीर्यनाशके	गाना रहस्यपूर्ण	िं बातें करना भी पतनक	ा एक प्रकार है।
उपायोंद्वारा अपनेको निचोड़ डालनेमें ही हमने उ	पपने सं व	कल्प —अपवित्र संकल्प	करना, कामवासना
जीवनकी सार्थकता मान ली है। क्षणिक सुखके	लये चरितार्थ	करनेका विचार करना भी	ो पतनका एक प्रकार
अपना सर्वनाश करनेमें ही हमें 'मज़ा' आता है!	है।		
और, यह 'मज़ा' ही हमें ले डूबता है।	अध	ध्यवसाय —पतनके लिये !	प्रयत्नशील होना, उसके
नतीजा सामने है।	लिये अ	ागे बढ़ना, वासनापूर्तिके	लिये भाँति-भाँतिकी
हमारा स्वास्थ्य चौपट हो रहा है, हमारा च	रित्र चेष्टाएँ व	करना भी पतनका एक !	प्रकार है।
स्वाहा हो रहा है, धन नष्ट हो रहा है और हम वि	वश क्रि	ज्यानिष्पत्ति —इन्द्रियोंके ह	ाथका खिलौना बनकर
हो रहे हैं—कीड़ों-मकोड़ोंसे भी गया-गुजरा ज	विन पतनके ग	गड़हेमें गिर जाना पतनकी	पराकाष्ठा है। पिछले
बितानेके लिये!	सभी प्रव	कारोंकी अन्तिम परिणति	इसीमें होती है।
× × ×	×	×	×
इसीसे बचानेके लिये हमारे शास्त्रोंमें ब्रह्म	र्य- पुर	ष हो या स्त्री, युवक हो	या युवती, किशोर हो
पालनपर इतना जोर दिया गया है। अष्ट प्रकारके मैश्	नसे या किशो	ोरी—जो भी व्यक्ति पतनवे	ь इन आठ प्रकारोंमेंसे
बचनेके लिये इसीलिये कहा गया है कि उ	तीमें एक भी	प्रकारमें रस लेता है, व	ह अपने पतनका पथ
मानवजातिका कल्याण निहित है। उसका विवेचन	भी प्रशस्त व	करता है।	
कितना सूक्ष्म है, देखिये—	ये	सभी साधन गिरानेवाले हैं	हैं, वीर्यनाश करनेवाले
स्मरणं कीर्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्यभाषणम्।	हैं। इनसे	ने शक्तिका क्षय होता है,	रोग और बीमारियाँ
संकल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिष्पत्तिरेव च॥	पनपती	हैं, शरीर खोखला हो	ता है, धन-सम्पत्ति
स्मरण—पतनकी पहली सीढ़ी है—अप	वित्र नष्ट होत	ती है, स्वास्थ्य चौपट हो	ोता है, चरित्र स्वाहा
स्मरण। कामका चिन्तन, गन्दी बातोंका स्मरण	जहाँ होता है,	, सम्मान जाता है, अप	ग्मान और तिरस्कार
किया कि पापका पथ प्रशस्त हुआ। पतनकी शुरु	आत होता है	l	

१२ कल्प	गण [भाग ९६
**************************************	**************************************
इनसे व्यक्तिका पतन होता है, समाजका पतन होता	विकासका रास्ता रुक जाता है। हृदयमें ऐसी ग्रन्थियाँ
है, राष्ट्रका पतन होता है।	पड़ जाती हैं कि मानव झेंपने लगता है, शर्माने
और क्या नहीं होता?	लगता है। काम करनेकी उसकी स्फूर्ति मारी जाती
कामवासनाके चलते कितना नहीं जलील होना	है। ऐसी एक नहीं, अनेक बातें!
पड़ता मानवको!	× × ×
× × ×	ऐसा नहीं कि मनोविज्ञानकी ये सब बातें बिना
और कहीं छुटकारा भी है इस बलासे?	तथ्यकी हों।
घर तो घर, बाहर सड़कपर, मैदानमें, बाग–	उसने अनेक प्रयोग करके दिखा दिया है कि
बगीचेमें, यहाँतक कि जेलमें भी वह हमारा साथ नहीं	अवदमित वासनाएँ ही विभिन्न विकृत रूपोंमें हमारे
छोड़ती !	समक्ष उपस्थित होती हैं।
कैद जिंदा में न छोड़ा साथ,	× × ×
नफ्स मूज़ी भी बड़ा बदज़ात है!	यह मनोविज्ञान भोगोंको इतना भोगनेकी छूट देता
× × ×	है कि भोगते-भोगते उनसे अरुचि हो जाय।
आज तो हमारे चारों ओर भोग-विलासका ही	परंतु क्या ऐसा सम्भव है ?
गन्दा पनाला बह रहा है। जिधर देखिये अपवित्र	हम तो यही समझते हैं कि—
वातावरण, अपवित्र क्रियाकलाप, अपवित्र वार्ता, अपवित्र	'बुझै न काम अगिनि 'तुलसी' कहुँ, बिषय-भोग बहु घी ते।'
साहित्य, अपवित्र मनोविनोद। सर्वत्र दूषित विकारोंकी	× × ×
ही आराधना! पतनके न जाने कितने घृणित मार्ग खोज	कहते हैं कि स्वामी रामतीर्थ ध्यान करने बैठते तो
निकाले हैं हमने!	उनके ध्यानमें सेव आ जाता।
तभी तो मर्यादित सहवासकी बात हमें काटती है।	बड़े हैरान। जब देखो तब सेव!
वह हमें असम्भव-सी लगती है। घरकी मर्दुमशुमारी	एक दिन वे बाजारसे एक सेव ले आये और उसे
बढ़ते देख, बच्चोंके लालन-पालनमें अपनी असमर्थता	रख दिया अपने सामनेवाले ताखमें।
देख हम सन्तति-निग्रहके बनावटी उपायोंकी ओर	शीघ्र बिगड़नेवाला फल धीरे-धीरे उसका रंग-रूप
बेतहाश दौड़ रहे हैं!	विकृत होने लगा।
वासनापर काबू करना हमसे पार नहीं लगता, पर	कुछ दिनोंमें वह सड़ गया। बदबू आने लगी
उसके कटु परिणामोंसे बचनेके लिये, बच्चोंसे अपना	उससे।
पिण्ड छुड़ानेके लिये, जिम्मेदारियोंसे बचनेके लिये हम	तब स्वामी रामने उसे उठाकर फेंक दिया।
जमीन-आसमानके कुलावे एकमें मिला रहे हैं।	फिर कभी सेव उनके ध्यानमें नहीं आया।
कैसा घृणित है हमारा यह सारा आयोजन!	× × ×
× × ×	भोगोंको भोगकर उनसे अरुचि हो जानेकी बात
हमारा मनोविज्ञान आगमें घीका काम कर रहा है!	सबपर लागू नहीं हो सकती।
वह कहता है—भोगोंकी इच्छाओंको जबरन् दबाना	हो भी तो सबलोग मनोऽनुकूल भोग पा कहाँसे
ठीक नहीं। उससे मानसिक रोग पनपते हैं। हीनताकी	सकेंगे ?
भावना आती है। स्नायुदौर्बल्य आता है। मानवके	अजी, सबकी बात तो छोड़िये, ययातिके अनुसार,

जब अपवित्र विचार घेरते हैं! संख्या ४] सारे संसारकी सम्पत्ति, सारे संसारकी सुन्दरियाँ एक लंगोटी उसकी ममताका सार-सर्वस्व बन बैठती है। जैसे व्यक्तिके पास लाकर जुटा दी जायँ, फिर भी यह कहना छोटेसे नोटमें हजार रुपये भरे रहते हैं, वैसे ही उस कठिन है कि उस व्यक्तिकी तृप्ति हो जायगी। छोटी-सी लंगोटीमें भी अपार आसक्ति भरी रहती है। चाहे घरमें रहो या जंगलमें, आसक्ति तो पास ही बनी रहती है।' पैर कब्रमें लटक रहे हैं, शरीर जर्जर है, हाथ उठते नहीं, आँखोंसे सूझता नहीं, कानोंसे ठीक सुन नहीं जरूरत है इस आसक्तिको मिटानेकी। पड़ता, सभी अंग जवाब दे चुके हैं—ऐसे वृद्धोंमें भी फिर चाहे घरमें रहो, चाहे वनमें, गृहस्थ रहो या विकार जाग्रत् होते देखा गया है! जिन्दगीभर भोग भोग संन्यासी—सब ठीक है। चुके हैं, फिर भी उनसे अरुचिका कोई नाम नहीं! सुलभ अपवित्र विचार तभीतक आते हैं, जबतक यह आसक्ति बनी हुई है। यह मिट जाय तो अपवित्र विचार हो और मकरध्वज तथा तिलामस्ताना उनकी नसोंमें रवानी ला सके, तो वे उसका भी उपभोग करनेसे नहीं आ ही नहीं सकते। चकेंगे। अपवित्र विचारोंसे मुक्त होनेके लिये, जीवन और मुसकराकर कह उठेंगे—'शरीर बूढ़ा हो गया तो जगत्में सफलता पानेके लिये, सुखी और स्वस्थ रहनेके क्या दिल भी बूढ़ा हो गया!' लाख कोई समझाये-लिये अपना, राष्ट्रका और विश्वका कल्याण करनेके लिये हमें अपने स्वेच्छाचारपर रोक लगानी होगी और ब्रह्मचर्यका 'कदम सूए मरकद नजर सूए दुनिया, व्रत लेकर पूरी सावधानीसे उसका पालन करना होगा। कहाँ जा रहे हो, किधर देखते हो!' हमपर कोई असर होनेवाला नहीं। ब्रह्मचर्यका पालन करनेमें हम इसीलिये असमर्थ मतलब, जबतक विषयोंमें आसक्ति बनी है, भोगोंकी रहते हैं कि हम हृदयसे उसका पालन नहीं करना वासना जीवित है, तबतक बुढा हो या जवान, अपवित्र चाहते। हम चाहें तो क्या नहीं कर सकते? विचार घेरेंगे ही। बापुने ठीक लिखा है-'व्रत बन्धन नहीं, स्वतन्त्रताका द्वार है। व्रतसे माथा मुडा लेनेसे, कपडे रँग लेनेसे, घर-बार छोड अपनेको बाँधना मानो व्यभिचारसे छूटकर एक पत्नीसे देनेसे, परिग्रहसे छुटकारा ले लेनेसे, धर्मोपदेशक, कथावाचक, सम्बन्ध रखना है। 'मेरा तो विश्वास प्रयत्नमें है। व्रतके द्वारा में बँधना नहीं चाहता-यह वचन निर्बलतासूचक साधु-संन्यासी, मुल्ला-पादरीका चोगा पहन लेनेसे विषयोंकी है। इसमें छिपे-छिपे भोगकी इच्छा रहती है। जो वस्तु वासना जाती रहेगी—ऐसा सोचना भी गलत है। त्याज्य है, उसे सर्वथा छोड़ देनेमें कौन-सी हानि हो **'मन न रँगाये, रँगाये जोगी कपड़ा!'**—वाली स्थिति जबतक बनी है, तबतक पतनका खतरा बना ही सकती है? जो साँप मुझे डँसनेवाला है, उसे मैं निश्चयपूर्वक हटा देता हूँ, हटानेकी केवल चेष्टा ही नहीं रहेगा। करता; क्योंकि मैं जानता हूँ कि महज प्रयत्नका परिणाम X विनोबाने ठीक ही कहा है-होनेवाला है-मृत्यु।' 'कोई यदि गुफामें जाकर बैठ जाय, तो भी उसकी ब्रह्मचर्यका व्रत लिया नहीं, कि अपवित्र विचारोंसे बित्तेभर लंगोटीमें संसार ओत-प्रोत (भरा) रहता है। यह छुटकारा मिला।

श्रीरामनवमी (नित्यलीलालीन श्रद्धेय भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार) श्रीरामनवमी सारे जगतुके लिये सौभाग्यका दिन है; प्राप्त करनेका अधिकारी बनना। अतएव विशेष ध्यान क्योंकि अखिल विश्वपति सिच्चदानन्दघन श्रीभगवान् श्रीरामके आदर्श चरित्रके अनुकरणपर ही रखना चाहिये। इसी दिन दुर्दान्त रावणके अत्याचारसे पीड़ित पृथ्वीको विधि इस प्रकार की जा सकती है— सुखी करने और सनातन-धर्मकी मर्यादा-स्थापन करनेके १-चैत्र शुक्ल १ से चैत्र शुक्ल ९ तक नौ दिन लिये मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामके रूपमें प्रकट हुए थे। उत्सव मनाया जाय। श्रीराम केवल हिन्दुओं के ही 'राम' नहीं हैं, वे अखिल २-प्रत्येक मनुष्य (स्त्री, पुरुष, बालक) प्रतिदिन विश्वके प्राणाराम हैं। भगवान् श्रीराम और भगवान् अपनी रुचिके अनुसार श्रीरामके दो अक्षरी, पंचाक्षरी या चार अक्षरी* मन्त्रका नियमपूर्वक जप करे। पहले दिन

श्रीकृष्णको केवल हिन्दुजातिकी सम्पत्ति मानना उनके गुणोंको घटाना है, असीमको सीमाबद्ध करना है। विश्वचराचरमें आत्मरूपसे नित्य रमण करनेवाले और स्वयं ही विश्व-चराचरके रूपमें प्रतिभासित सर्वव्यापी सर्वान्तर्यामी सर्वरूप नारायण किसी एक देश या व्यक्तिकी ही वस्तु कैसे हो सकते हैं? वे सबके हैं, सबमें हैं, सबके साथ सदा संयुक्त हैं और सर्वमय हैं। जो कोई भी जीव उनकी आदर्श मर्यादालीला—उनके पुण्यचरित्रका श्रद्धापूर्वक गान, श्रवण और अनुकरण करता है, वही पवित्र-हृदय होकर परम सुखको प्राप्त कर सकता है। श्रीरामके समान आदर्श पुरुष, आदर्श धर्मात्मा, आदर्श नरपति, आदर्श मित्र, आदर्श भाई, आदर्श पुत्र, आदर्श गुरु, आदर्श शिष्य, आदर्श पति, आदर्श स्वामी, आदर्श

आदर्श पूर्वपुरुषके रूपमें अवतरित मानते हैं, श्रीराम-

सेवक, आदर्श वीर, आदर्श दयालु, आदर्श शरणागत-वत्सल, आदर्श तपस्वी, आदर्श सत्यवादी, आदर्श दृढ्प्रतिज्ञ और आदर्श संयमी और कौन हुआ? जगत्के इतिहासमें श्रीरामकी तुलनामें एक श्रीराम ही हैं। श्रीरामने साक्षात् परमपुरुष परमात्मा होनेपर भी जीवोंको सत्यपथपर आरूढ़ करानेके लिये ऐसी आदर्श लीलाएँ कीं, जिनका अनुकरण सभी लोग सुखपूर्वक कर सकते हैं। उन्हीं हमारे श्रीरामका पुण्य प्राकट्य-दिवस चैत्र

वाल्मीकि, अध्यात्म या श्रीगोसाईंजीकृत मानस इनमेंसे अपनी रुचिके अनुसार किसी भी रामायणका पाठ कर सकते हैं। जो ऐसा न कर सकें, वे कुछ समयतक प्रतिदिन रामायण बाँचें या सुनें। ५-माता-पिताके चरणोंमें प्रतिदिन प्रात:काल प्रणाम ६-यथासाध्य खूब सावधानीसे सत्य भाषण करें।

नियम कर ले, उसीके अनुसार नौ दिनतक करते रहना

चाहिये। कम-से-कम १०८ मन्त्रका जप प्रतिदिन हो

जाना चाहिये। उत्साह और समय मिले, तो नौ दिनमें

३-प्रतिदिन सुबह या शामको कुछ समयतक

४-श्रीरामायणका नौ दिनोंमें पुरा पाठ किया जाय।

७-घरमें माता, पिता, भाई, भौजाई, स्वामी, स्त्री,

नौकर, मालिक सभी आपसमें प्रेम रखें, अपने अच्छे

बर्तावसे सबको प्रसन्न रखें, किसीसे झगडा न करें।

नौ लाख नामका जप कर सकते हैं।

नियमित रूपसे श्रीराम-नामका कीर्तन हो।

िभाग ९६

९-रामनवमीका व्रत करें। १०-रामनवमीके दिन श्रीरामजन्मोत्सव मनाया शुक्ला नवमी है। इस सुअवसरपर सभी लोगोंको, खास श्रीराम-कथा हो, सभाएँ की जायँ, जिनमें करके उनको, जो श्रीरामको साक्षात् भगवान् और अपने रामायणका प्रवचन और रामायण-सम्बन्धी शिक्षाप्रद व्याख्यान हो। कहने और सुननेवाले अपने अन्दर श्रीरामके-से गुण लावें, इसके लिये दृढ़ निश्चय करें जन्मका पुण्योत्सव मनाना चाहिये। इसलिये उत्सवका प्रधान उद्देश्य होना चाहिये श्रीरामको प्रसन्न करना और और श्रीरामसे प्रार्थना करें। श्रीरामके आदर्श गुणोंका अपनेमें विकासकर श्रीरामकृपा ११-आपसके मेलमें बाधा न आती हो तो श्रीरामकी Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shartari, 'रामाय नमः' या सीताराम।

८-ब्रह्मचर्यका पालन करें।

बोझ प्रभुके कंधेपर संख्या ४] सवारीका जुलूस नगर-कीर्तनके साथ निकाला जाय। प्रेम, ब्रह्मचर्यका अधिक-से अधिक पालन, सत्य-इन ग्यारह बातोंमेंसे जिनसे जितनी पालन हो भाषण आदि बातें तो जीवनभर पालन करनेयोग्य हैं। सकें, उतनी ही करनेकी चेष्टा करें। श्रीरामनामका इनका अभ्यास अधिक-से-अधिक बढाना चाहिये। जप, कीर्तन, माता-पिता आदिके चरणोंमें प्रणाम, सबसे श्रीरामकी भक्तिके लिये इन्हीं व्रतोंकी आवश्यकता है। बोझ प्रभुके कंधेपर (संत श्रीविनोबाजी भावे) प्रभुको चिन्ता सबकी रहती है, पर विशेष चिन्ता राजा बलिने जब राजत्वका साज हटाकर मस्तक उसे दीनोंकी होती है। और लोग भी प्रभुके हैं, पर दीन झुकाया, तब प्रभुने उसके आँगनमें खडे रहना अंगीकार किया। तो प्रभुके ही हैं। औरोंका आधार और भी होता है, पर गजेन्द्रको जबतक अपने बलका घमंड रहा, दीनोंका आधार तो दीनदयाल ही होता है। समुद्रके बीच तबतक उसने सब कुछ करके देख लिया और जब गर्व जहाजके मस्तूलसे उड़े हुए पंछीको मस्तूलके सिवा और गला, तब उसे दीनबन्धुकी याद आयी। उसी दिनकी घटनाका नाम तो 'गजेन्द्रमोक्ष' है। ठिकाना कहाँ हो सकता है? उससे हटकर वह कहाँ और अर्जुन? जिस दिन वह अपनी जानकारीके

जहाजक मस्तूलस उड़ हुए पछाका मस्तूलक सिवा आर ठिकाना कहाँ हो सकता है? उससे हटकर वह कहाँ रह सकता है? दीनका चित्त प्रभुसे छूटे भी तो किससे लगे? इसीलिये दीन प्रभुके कहलाते हैं, प्रभु दीनोंका कहलाता है। दीनताका यही वैशिष्ट्य देखकर कुन्तीने उस समय, जब उसे प्रभुने वर माँगनेको कहा, दीनता माँगी। कोई कह सकता है कि प्रभु तो देता था कटोरीमें, पर अभागिनीने माँगा दोनेमें! फूटी कटोरीसे साबित दोना सौ दर्जे अच्छा।

कदाचित् कोई तार्किक बीचमें ही पूछ बैठे—'तो

फूटी कटोरीकी बात ही क्यों?' मैं स्पष्ट कहूँगा—'नहीं, पानी पीनेकी दृष्टिसे तो साबित दोने और साबित कटोरीका मूल्य समान है; पर अन्दर पैठकर देखें तो वह धातुकी कटोरी घातकी वस्तु बन जाती है। कटोरीकी छातीमें एक बड़ी धुकधुकी लगी रहती है—'मुझे कोई चुरा तो नहीं ले जायगा?' दोनेके लिये यह भय असम्भव है, अत: वह निर्भय है।' फिर कटोरी और साबितका योग ही मुश्किलसे मिलता है। रामदासके शब्दोंमें—'जो बड़ा, सो चोर।'

प्रभुने उसे अपने निकट खींच लिया।

फिर कटोरी और साबितका योग ही मुश्किलसे मिलता है। रामदासके शब्दोंमें—'जो बड़ा, सो चोर।' ऐसे उदाहरण बहुत थोड़े हैं कि आदमी बड़ा हो और प्रभु उसपर न्योछावर हों। ऐसे उदाहरणोंका प्रायः अभाव ही है; और जो कहीं और कभी दीख पड़ा, तो इस रूपमें कि जन्मका बड़ा, किंतु बड़प्पन खोकर— अत्यन्त दीन होकर—भगवानुके शरण आया, उसी दिन अधिष्ठित मतके पाँव डगमगाने लगे, तब उसने निकटस्थ प्रभुके पाँव पकड़े। 'मैं तो इन्द्रियोंका गुलाम हूँ, और मेरा 'मत' क्या? मेरी तो इन्द्रियाँ चाहे जैसा निश्चय करती हैं और मनरूपी मल्ल उसपर अपनी सही कर देता है। वहाँ धर्मको देख सकनेवाली दृष्टिका गुजर कहाँ! प्यारे, मैं तुम्हारे द्वारका सेवक हूँ। मुझे तुम्हीं बचाओ।' तब भगवान्की वाणी प्रस्फुटित हुई। गीता कही

ज्वरसे जीवित छूटा, प्रभुने उसे गीता सुनायी। पार्थका

प्रभुसे ही मतभेद हो गया। बड़ा आदमी जो ठहरा!

प्रभुके मतसे उसके मतका सौतियाडाह क्यों न हो ? किंतु

बारह वर्षके वनवासने उसे 'महत्ता' से उतारकर 'संतता'

की सेवा करनेका अवसर दिया। जब जानकारीपर

जाने लगी। परंतु गीता कहते-कहते भी श्रीकृष्णने एक

बात तो कह ही डाली—'बडप्पनकी बात तो खुब करते

हो!' गर्ज यह कि बड़े लोगोंमें यदि किसीके प्रभुका

प्यारा होनेकी बात सुनी जाती है तो वह उसीकी, जो

अपना बड़प्पन खोकर, अपनी महत्ता एक ओर रखकर छोटे-से-छोटा, दीन, निराधार बन गया। तब वह प्रभुका आत्मीय कहलाया। जिसे जगत्का आधार है, उसकी जगदाधारसे कैसी रिश्वेटारी 2 जिसके खावेमें जगवका आधार जमा नहीं रह

देन रिश्तेदारी ? जिसके खातेमें जगत्का आधार जमा नहीं रह गया, उसीका बोझ प्रभु अपने कंधोंपर ढोते हैं। साधकोंके प्रति-

जाग्रत्में सुषुप्ति

(ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज)

एक बहुत सुगम बात है। उसे विचारपूर्वक गहरी

है। उस सर्व-प्रकाशक, सर्वाधारमें हमें स्थित रहना है।

वह सत्ता सदा ज्यों-की-त्यों रहती है। जाग्रत्, स्वप्न,

राजाका राज्यभरसे सम्बन्ध होता है, वैसे ही परमात्मतत्त्वका

रीतिसे समझ लें तो तत्काल तत्त्वमें स्थित हो जायँ। जैसे

सुषुप्ति, स्थिरता, चंचलता, योग्यता, अयोग्यता, बालकपन, मात्र वस्तु, व्यक्ति, क्रिया आदिके साथ सम्बन्ध है। राजाका

जवानी, वृद्धावस्था, विपत्ति, सम्पत्ति, विद्वत्ता, मूर्खता आदि

सम्बन्ध तो मान्यतासे है, पर परमात्माका सम्बन्ध वास्तविक सभी उस सत्तासे प्रकाश पाते हैं। वस्तृत: उसमें आपकी

सत्ताकी ओर दृष्टि न करें, तब भी वह वैसी-की-

वैसी ही रहती है। पर उस ओर दृष्टि न करनेसे आप अपनी

स्थिति क्रियाओं, पदार्थीं, अवस्थाओं आदिमें मानते हैं।

भोजन करते समय 'में खाता हूँ', जल पीते समय 'में पीता

हूँ', जाते समय 'मैं जाता हूँ' आदि सब स्थितियोंमें 'हूँ'

समान ही रहता है। यदि 'मैं' को हटा दें तो 'हूँ' नहीं रहेगा,

अपितु 'है' रहेगा। वह 'है' सदा ज्यों-का-त्यों रहता है।

खोया कहे सो बावरा पाया कहे सो कूर।

पाया खोया कुछ नहीं ज्यों-का-त्यों भरपूर॥

इस 'है' में स्थित होते ही अखण्ड समाधि, जाग्रत,

है। हम परमात्माको भले ही भूल जायँ, पर उसका सम्बन्ध स्थिति स्वत:सिद्ध है। केवल उसकी ओर लक्ष्य, दृष्टि

करनी है। शरीर, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि आदिके साथ सम्बन्ध

कभी नहीं छूटता। आप चाहे युग-युगान्तरतक भूले रहें तो ही मोह है। इस मोहका नाश होनेपर स्मृति जाग्रत् हो

भी उसका सम्बन्ध सबसे एक समान है। आपकी स्थिति

जाग्रत्, स्वप्न या सुषुप्ति किसी अवस्थामें हो, आप योग्य

जाती है—'नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा' (गीता १८। ७३)। हों या अयोग्य, विद्वान् हों या अनपढ़, धनी हों या निर्धन, स्मृतिका अर्थ—जो बात पहलेसे ही थी, उसकी याद आ

परमात्माका सम्बन्ध सब स्थितियोंमें एक समान है। इसे गयी। कोई नया ज्ञान होना स्मृति नहीं है। अब चाहे कुछ

समझनेके लिये युक्ति बताता हूँ। आप मानते हैं कि बालकपनमें

हो जाय, चाहे कोई व्यथा आ जाय, अपनी सत्तामें क्या में था, अभी मैं हूँ और आगे वृद्धावस्थामें भी मैं रहूँगा। फर्क पडता है ? केवल अपनी सत्ताकी ओर दुष्टि करनी है, फिर इसी क्षण जीवन्मुक्ति है। इसमें कोई अभ्यास नहीं

बालकपन, जवानी और वृद्धावस्था—तीनोंका भेद होनेसे 'था', 'हूँ' और 'रहूँगा' ये तीन भेद हुए, पर अपने होनेपनमें करना है।

क्या फर्क पड़ा ? भूत, वर्तमान और भविष्य—तीनोंमें अपना होनापन (सत्ता) तो एक ही रहा। अत: आप कैसे भी हों,

कैसे भी रहें, आपकी सत्ता एक समान अखण्ड रहती है। आपका कभी अभाव नहीं होता। वह सत्ता ही शरीर,

इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि आदिको सत्ता-स्फूर्ति देती है। वह शरीरादिके आश्रित नहीं है। इससे यह सिद्ध हुआ कि

आप हरदम 'है' में स्थित रहते हैं। जड वस्तु, क्रिया आदिका सम्बन्ध न रखकर 'है' से सम्बन्ध रखना है। यह

जाग्रत्में सुष्पित है। वह सत्ता मन, बुद्धि, इन्द्रियों, शरीरकी क्रियाओंमें

सुषुप्ति हो जाती है। अनुस्यृत है। वही मन, बुद्धि आदिका प्रकाशक, आधार

—— तुकारामजीकी शान्ति -बोध-कथा

संत तुकारामजी अपने खेतसे गन्ने ला रहे थे। रास्तेमें लोगोंने गन्ने माँगे, उन्होंने दे दिये। एक गन्ना

बच रहा, उसे लेकर वे घर पहुँचे। घरमें बड़ी गरीबी थी और भोजनका अभाव था। फिर, उनकी पत्नी

जीजीबाई थी भी बड़े करारे स्वभावकी। उसने झुँझलाकर गन्ना उनके हाथसे छीन लिया और उसे बड़े जोरसे उनकी पीठपर दे मारा। गन्नेके दो टुकड़े हो गये। तुकारामजीने हँसकर कहा—'हम दोनोंके खानेके

लिये मुझे दो टुकड़े करने ही पड़ते। तुमने सहज ही कर दिये, बड़ा अच्छा किया।'

संख्या ४] नन्दादेवीकी प्राकट्य-कथा नन्दादेवीकी प्राकट्य-कथा भगवती नन्दा देवी आदिशक्ति जगज्जननी पराम्बाकी लिये बैठ गया था। साक्षात् अंगभूता मूर्ति हैं। रहस्यत्रयके अन्तर्गत मूर्तिरहस्यमें इस प्रकार बहुत समय बीत जानेपर पवित्र नदी वेत्रवती इस प्रकारसे इनके स्वरूपका प्रतिपादन किया गया है— (मध्यप्रदेशकी बेतवा नदी)-ने अत्यन्त सुन्दर मानुषी स्त्रीका रूप धारणकर एवं अनेक अलंकारोंसे सज-धजकर सिन्धुद्वीप ऋषिरुवाच जहाँ बैठकर महान् तप कर रहा था, वहाँ पहुँची। उस ॐ नन्दा भगवती नाम या भविष्यति नन्दजा। स्तुता सा पूजिता भक्त्या वशीकुर्याज्जगत्त्रयम्॥ सुन्दरी स्त्रीको देखकर राजाका मन क्षुब्ध हो उठा, अत: उसने पूछा—'सुन्दर कटिभागवाली भामिनि! तुम कौन कनकोत्तमकान्तिः सा सुकान्तिकनकाम्बरा। कनकवर्णाभा कनकोत्तमभूषणा॥ हो ? सब सच्ची बात बतानेकी कृपा करो।' कमलाङ्कशपाशाब्जैरलङ्कृतचतुर्भुजा नदीने उत्तर दिया—मेरा नाम वेत्रवती है। मेरे मनमें आपको प्राप्त करनेकी इच्छा हो गयी है। अत: मैं यहाँ इन्दिरा कमला लक्ष्मी: सा श्री रुक्माम्बुजासना॥ आ गयी हूँ। महाराज! इस बातपर तथा मेरे भावोंको (मूर्तिरहस्य १-३) ऋषि कहते हैं - राजन्! नन्दा नामकी देवी जो विचारकर आप मुझ दासीको स्वीकार करनेकी कृपा करें। नन्दसे उत्पन्न होनेवाली हैं, उनकी यदि भक्तिपूर्वक स्तुति वेत्रवतीके इस प्रकार कहनेपर राजा सिन्धुद्वीपने भी और पूजा की जाय तो वे तीनों लोकोंको उपासकके उसे स्वीकार कर लिया। समय पाकर शीघ्र ही उससे अधीन कर देती हैं। उनके श्रीअंगोंकी कान्ति कनकके पुत्रकी उत्पत्ति हुई। उस बालकमें बारह सूर्यों-जैसा तेज समान उत्तम है। वे सुनहरे रंगके सुन्दर वस्त्र धारण था। वेत्रवतीके उदरसे जन्म होनेके कारण वह वेत्रासुरके करती हैं। उनकी आभा सुवर्णके तुल्य है तथा वे नामसे प्रसिद्ध हुआ। उसमें पर्याप्त बल था। उसके सुवर्णके ही उत्तम आभूषण धारण करती हैं। उनकी चार तेजकी सीमा न थी। धीरे-धीरे वह प्राग्ज्योतिषपुर भुजाएँ कमल, अंकुश, पाश और शंखसे सुशोभित हैं। (कामरूप-आसाम)-का नरेश बन गया और युवा वे इन्दिरा, कमला, लक्ष्मी, श्री तथा रुक्माम्बुजासना होनेपर तो उसके बल-विक्रम बहुत बढ़ गये। उसने (सुवर्णमय कमलके आसनपर विराजमान) आदि नामोंसे अब महायोगशक्तिद्वारा सात द्वीपोंवाली इस सम्पूर्ण पुकारी जाती हैं। पृथ्वीको जीत लिया। बादमें कालकेयोंको जीतनेके लिये वाराहपुराणमें वर्णित है कि प्राचीन समयमें वरुणके उसने मेरु-पर्वतपर चढ़ाई की। जब वह असुर इन्द्रके अंशसे उत्पन्न सिन्धुद्वीप नामका एक प्रबल प्रतापी नरेश पास गया तो वे भयसे वहाँसे भाग चले। अग्निने तो उसे था। वह इन्द्रको मारनेवाले पुत्रकी कामनासे जंगलमें जाकर देखते ही अपना स्थान छोड़ दिया। ऐसे ही यम, निर्ऋति तप करने लगा। इस प्रकार एक ही आसनसे भीषण तप और वरुण-ये सब-के-सब उसके आनेपर अपने करते हुए उसने अपने शरीरको सुखा दिया। स्थानसे हटते गये। अन्तमें इन्द्रप्रभृतिको साथ लेकर सिन्धुद्वीप पिछले जन्ममें विश्वकर्माका पुत्र नमुचि वरुणदेवता वायुदेवताके संनिकट गये। फिर पवनदेव भी नामक दैत्य था, जो वीरोंमें प्रधान था। वह सम्पूर्ण इन्द्र आदि समस्त देवताओं के सहित धनाध्यक्ष कुबेरके पास पहुँचे। शंकरजी कुबेरके मित्र हैं; अत: धनाध्यक्ष शस्त्रोंद्वारा अवध्य था। अतः इन्द्रद्वारा जलके फेनसे उसकी मृत्यु हुई थी। वही पुन: ब्रह्माजीके वंशमें कुबेर देवताओंको साथ लेकर शंकरजीके पास पधारे। सिन्धुद्वीपके नामसे उत्पन्न हुआ। इन्द्रके साथ उसी राजन्! इतनेमें बलाभिमानी वेत्रासुर भी गदा लिये हुए कैलासपर जा पहुँचा। इधर भगवान् शिव उसे अवध्य वैरको स्मरणकर वह अत्यन्त कठिन तपस्या करनेके

भाग ९६ ************************ समझकर देवताओंके साथ ब्रह्मलोक पहुँचे। वहाँ पुण्यकर्म तत्पश्चात् देवतालोग भी बड़े उच्चस्वरसे उन करनेवाले बहुत-से देवता और सिद्धोंका समाज उनकी परमेश्वरीकी जयध्विन करने लगे। अबतक ब्रह्माजी जलमें जप ही कर रहे थे। अब जब जयध्विन उन्हें स्तृति कर रहा था। उस समय जगत्की रचना करनेमें श्रवणगोचर हुई तो वे जलसे बाहर निकले और देखा, कुशल ब्रह्माजी भगवान् विष्णुके चरणसे प्रकट हुई गंगाके पावन जलमें प्रविष्ट होकर क्षेत्रज्ञ परमात्माकी परम कुशल देवी सम्पूर्ण कार्य सम्पन्न करके सामने विराजमान हैं। अब उन्होंने यह तो भलीभाँति जान लिया माया गायत्रीका नियमपूर्वक जप कर रहे थे। अब देवता कि देवताओंका कार्य सिद्ध हो गया, परंतु भविष्यके बड़े जोरसे चिल्लाकर कहने लगे—'प्रजाओंकी रक्षा कार्यको परिलक्ष्यकर ब्रह्माजी बोले—देवताओ! अनुपम करनेवाले भगवन्! हमें बचाइये। वेत्रासुरसे हम समस्त अंगोंसे शोभा पानेवाली ये देवी अब हिमालय पर्वतपर देवता और ऋषि अत्यन्त भयभीत हो गये हैं। आप पधारें और आपलोग भी अब तुरंत वहाँ चलकर हमारी रक्षा करें! रक्षा करें!' आनन्दसे रहें। नवमी तिथिके दिन इन देवीकी सदा देवताओं के इस प्रकार पुकार मचानेपर ब्रह्माजीकी स्थिरचित्त एवं ध्यान-समाधिद्वारा आराधना करनी चाहिये। दृष्टि वहाँ आये हुए उन देवताओंकी ओर गयी। वे सोचने ऐसा करनेसे ये सम्पूर्ण प्राणियोंको वर देंगी, इसमें लगे—' अहो! भगवान् नारायणकी माया बडी विचित्र है। लेशमात्र संदेह नहीं। इस (नवमी) तिथिको जो पुरुष इस विश्वका कोई भी स्थान उससे रिक्त नहीं है। असुरों अथवा स्त्री पक्वान्न प्रसादरूपसे भोजन करेंगे, उनके और राक्षसोंसे भला मेरा क्या सम्बन्ध?' वे इस प्रकार सभी मनोरथ सिद्ध हो जायँगे। अभी चिन्तन कर ही रहे थे कि तबतक वहाँ एक अयोनिजा तत्पश्चात् उन्होंने पुनः देवीसे कहा—'देवि! आपके कन्या प्रकट हो गयी। उसका शरीर श्वेतवस्त्रोंसे सुशोभित द्वारा यह कार्य सम्पन्न हुआ। किंतु अभी हमारा एक हो रहा था। उसके गलेमें माला तथा मस्तकपर किरीट दूसरा बहुत बड़ा कार्य शेष है। वह यह कि आगे उद्धासित हो रहा था। उसकी कान्ति अत्यन्त उज्ज्वल थी महिषासुर नामका एक राक्षस उत्पन्न होगा, जिसका तथा उसकी आठ भुजाएँ थीं, जिनमें क्रमसे शंख, चक्र, विनाश भी आपके ही द्वारा सम्भव है।' गदा, पाश, शक्ति, तलवार, घण्टा और धनुष—ये दिव्य राजन्! इस प्रकार कहकर ब्रह्माजी तथा सम्पूर्ण आयुध सुशोभित हो रहे थे। वह देवी तृणीर आदि अन्य देवता देवीको हिमालय पर्वतपर प्रतिष्ठितकर यथास्थान सभी युद्धोपकरणोंसे भी सुसज्जित होकर जलसे बाहर प्रस्थित हो गये। हिमवान् पर्वतपर आनन्दसे विराजनेके निकल पडी। वह महायोगेश्वरी परब्रह्म परमात्माकी शक्ति कारण उनका नाम 'नन्दादेवी' हुआ। सिंहपर समासीन थी। अब सहसा वह अनेक रूप धारणकर डॉ॰ राजबली पाण्डेयके अनुसार हिमालयमें गढ़वाल सभी असुरोंके साथ युद्ध करने लगी। उस देवीमें अपार जिलेके बधा परगनेसे ईशानकोणकी ओर 'नन्दादेवी' पर्वत शक्ति थी। उसके पास बहुत-से दिव्य अस्त्र थे। इस शिखर है। यह गौरीशंकरके बाद विश्वका सर्वोच्च शिखर प्रकार देवताओं के वर्षसे यह युद्ध एक हजार वर्षींतक है। नन्दा देवी इसमें विराजती हैं। भाद्र शुक्ल सप्तमीको चलता रहा और अन्तमें इस संग्राममें देवीद्वारा भयंकर प्रति बारहवें वर्ष यहाँकी यात्रा होती है। इसका आयोजन वेत्रासुर मार डाला गया। अब देवताओंकी सेनामें बड़े गढ्वालका राजकुटुम्ब करता रहा है। नन्दगृहमें उत्पन्न जोरसे आनन्दकी ध्वनि होने लगी। उस दैत्यकी मृत्यु हो हुई नन्दादेवीने असुरोंको मारकर जिस कुण्डमें स्नान कर जानेपर सभी देवता युद्धभूमिमें ही—'भगवती! आपकी सौम्यरूपता पायी थी, वह यहाँ रूपकुण्ड कहलाता है। जय हो! जय हो!' कहकर स्तुति-प्रणाम करने लगे। भागान शंकरने और उनकी उन्नित्र की https://dsc.gg/dharma 'अँ नित्र ये आप में भगवती नहरादेवीका मन्त्र है। संख्या ४] सन्त-स्वभाव सत्य-कथा सन्त-स्वभाव (श्रीचारुचन्द्र शीलजी) बात पुरानी है। रामतन् चाटुर्ज्ये हुगली जिलेके एक छोटी-सी सुनसान गली थी। निश्चित स्थानपर वह स्त्री छोटे-से गाँवमें रहते थे। उनके पिता पुरोहितीका काम खड़ी थी। रामतनु उसके पाससे निकले कि उसने बड़े करते थे। पर उनकी इच्छा लड़केको पढ़ाकर उसे अच्छी जोरोंसे चिल्लाकर पुकारा—'छोड़ दे, छोड़ दे—बदमाश नौकरीमें लगा देनेकी होनेसे उन्होंने रामतनुको इंट्रेंसकी कहींका-हाय! हाय! तू ब्राह्मण मास्टर होकर मेरा परीक्षा पास करवाकर कलकत्ते भेज दिया और वहाँ एक शील लूटना चाहता है। अरे कोई बचाओ।' रामतनु तो सरकारी महकमेमें बतौर नौकर रखवा दिया। वे वहाँ हक्के-बक्के रह गये। वह रामतनुके बिलकुल समीप पढ़ते भी रहे। धीरे-धीरे एफ०ए० कर लिया। उन्नति आ गयी थी। कपड़े अस्त-व्यस्त कर रखे थे उसने। करते-करते दो सौ रुपये महीनेपर एक सरकारी स्कूलमें अधरचन्द्र तो गुंडोंको लिये छिपा खड़ा ही था। तुरंत हेडमास्टरी करने लगे। उस जमानेमें दो सौ रुपये आकर हल्ला मचाने तथा रामतनुको गालियाँ बकते हुए महीनेकी नौकरी बहुत बड़ी चीज थी। इससे रामतन् उन्हें मारने लगा। गुंडे भी प्रहार करने लगे। रामतनुकी बाबुका गाँवमें गौरव बढ गया था। गाँवमें उनका एक तो कुछ समझमें ही नहीं आया कि यह सब क्या और क्यों हो रहा है। हल्ला सुनकर आस-पासके घरोंमेंसे पड़ोसी अधरचन्द्र था। वह रामतनुकी इस उन्नति तथा गौरवसे बहुत जलता था और समय-समयपर रामतनुकी लोग निकल आये। खासी भीड़ इकट्ठी हो गयी। बदनामी करने, उनपर लांछन लगाने तथा नुकसान गाँवके लोग तो रामतनुके स्वभावसे परिचित और उनके पहुँचानेकी चेष्टा किया करता था। रामतनु तथा उनकी प्रति अत्यन्त सहानुभूति तथा श्रद्धा रखते थे। प्राय: सभी स्त्री दोनोंके स्वभाव बहुत अच्छे थे। वे अभिमान तो उनसे उपकृत हुए थे। रामतनुके उपकार तो अधरचन्द्रपर करते ही नहीं, किसीका बुरा करनेकी कल्पना तो उनके भी कम नहीं थे। पड़ोसीके नाते वह बीसों बार उनकी मनमें कभी आती ही नहीं, वे गाँवभरका सहज ही भला सहायता प्राप्त कर चुका था। एक बार तो अधरचन्द्रको प्लेग हो गया था। डबल गिल्टी थी। सारे गाँवमें प्लेग चाहते थे और यथासाध्य किया भी करते थे। इससे गाँवमें उनकी शोभा कीर्ति और भी बढ़ गयी थी। यह फैला था। घरवाले भी सब अधरचन्द्रको छोड़कर चले भी अधरचन्द्रकी जलन बढानेमें एक खास कारण था। गये थे। उस समय एक रामतनु ही ऐसे थे, जो अपने रामतनुकी उसकी इस मनोवृत्तिका कुछ भी पता नहीं पड़ोसी अधरकी सेवामें चौबीसों घंटे लगे रहे, दवा-दारू की और उसे बचाया। घरवाले तो दस दिनके बाद लौटे था। एक समय छुट्टियोंमें रामतनु गाँवपर आये हुए थे। थे। पर कृतघ्न तथा दूसरेको दु:ख देनेमें ही सुखका अधरचन्द्रने दो-तीन गुंडोंको पहलेसे ही तैयार करके अनुभव करनेवाले अधरचन्द्रपर रामतनुके उपकारोंका एक दुष्ट-योजना बना रखी थी। बाहरसे किसी एक कोई असर नहीं था। इसी दुष्ट स्वभाववश यह आज दुश्चिरत्रा स्त्रीको वहाँ बुला लिया था। योजना थी कि अपनी आसुरी क्रियामें लग रहा था। उसने तो हो-हल्ला किसी दिन वह स्त्री व्यर्थ ही हो-हल्ला मचाये, इसलिये मचाया था-गाँववालोंको वह अपने पक्षमें कर रामतनुपर लांछन लगाये और उसी समय वे गुंडे तथा ले। रामतनुके प्रति वे सब नाराज हो जायँ तथा गाँवभरमें अधरचन्द्र उस स्त्रीकी रक्षाके बहाने रामतनुपर टूट पडें। रामतनुकी बदनामी हो जाय। पर भगवान् तो सब देखते योजनाके अनुसार ही काम हुआ। एक दिन रामतनु कहीं ही हैं। वहाँ एकत्र हुए गाँववालोंमें एकाधको छोडकर बाहरसे घर आ रहे थे। दोपहरका समय था। एक प्राय: सभी रामतनुको सच्चा सत्पुरुष तथा निर्दोष मानते

भाग ९६ ******************** थे और अधरचन्द्रको दोषी! वे अधरचन्द्रके दुष्ट धारा बह निकली। यह सब देखकर रामतनु बाबू बहुत स्वभावसे भी परिचित थे। उनमेंसे एकने उस स्त्रीको भी दुखी हो रहे थे। उन्हें अपने अपमान तथा चोटका कष्ट पहचान लिया, वह समीपके गाँवकी ही एक बडी तो भूल गया। वे अधरचन्द्रके दु:खसे दुखी होकर उसे बदनाम दुश्चरित्रा थी। उसका पेशा यही था। गुंडे भी छोड़ देनेके लिये दारोगाजीसे विनम्र अनुरोध करने लगे। पहचाने गये। लोगोंने तुरंत रामतनुको बचा लिया। दारोगाजीने बड़े आदरसे, परंतु कड़ाईसे कहा कि— गुंडोंपर तथा अधरचन्द्रपर उनको रोष आ गया। वे सब 'रामतनु बाबू! आप पुलिसके काममें दखल न दीजिये। इनपर टूट पड़े, पर सात्त्विक हृदयके श्रीरामतनु महाराज हमने दुष्टोंको रँगे हाथों पकड़ा है और हमारे पास इनको सजा दिलानेके लिये सबूत तथा गवाह मौजूद हैं। अपराधोंका इसको नहीं सह सके। उन्होंने हाथ जोडकर स्वयं बीचमें अपनेको डालकर उन सबको बचाया। हालाँकि उस घटना अपराधियोंको दण्ड मिलनेसे ही सम्भव है। हम इस समय उनके सारे शरीरमें मारके कारण बड़ी पीड़ा हो सम्बन्धमें आपका कोई अनुरोध नहीं सुनना चाहते।' रही थी। कनपटीके पास तथा बायें कंधेपर लाठीकी रामतनुजीने फिर बहुत कहा, तब दारोगाजीने कहा कि— चोटसे खून बह रहा था। पर वे इसकी परवा न करके 'हमने तो आपके घावों तथा चोटोंकी जाँच करके रिपोर्ट अपने स्वभाववश उन दुष्टोंको बचानेमें लग गये। देनेके लिये हुगलीसे सरकारी डॉक्टरको बुलाया है और आखिर अपनी शपथ दिलवायी तथा मारनेवालोंकी मार आप इन दुष्टोंको छुड़ाना चाहते हैं।' स्वयं सहनेको तैयार हो गये। तब उन दुष्टोंकी जान पुलिसवालोंने रामतनु बाबूको आदरसहित उनके बची। वह स्त्री तो पहचाने जाते ही भाग गयी। घर पहुँचा दिया। वहाँ एक सिपाही इस कामके लिये इधर यह सब देखकर दो आदमी भागकर दो मील बैठा दिया गया, जो डॉक्टर आनेपर उनकी रिपोर्ट लेकर दूर एक गाँवमें थाना था, वहाँ खबर देने पहुँच गये थे। थानेपर आ जाय। गाँवके बहुत-से लोग रामतनु बाबूके घरपर जमा हो गये। सभी चाहते थे दुष्टोंको दण्ड मिले। उनसे इस जुल्मकी बातें सुनते ही दारोगाजी सिपाहियोंको साथ लेकर तुरंत चल दिये। दारोगाजी भी भाग्यसे पर रामतनु बाबुको बड़ा मानस-क्लेश हो रहा था। वे रामतनुजीके द्वारा उपकृत थे। रामतनुजी विद्वान् तथा किसी भी उपायसे अधरचन्द्रको बचाना चाहते थे। बड़ी उच्च पदपर नौकरी करते थे, इससे सरकारी क्षेत्रमें उनका व्याकुलता थी उनके कोमल हृदयमें— बडा आदर था, सभी उनकी इज्जत करते थे। उन्होंने दुख द्रवहिं संत सुपुनीता।' वे गाँववालोंसे बोले—'देखिये, मनुष्य अपने-अपने ही आरम्भमें दारोगाजीकी नौकरी लगायी थी। दारोगाजीने पहुँचते ही जाँच की और गुंडोंसहित अधरचन्द्रको पकड़ स्वभावके अनुसार बर्ताव व्यवहार करता है। परंतु दु:ख लिया। पचासों आदमी गवाही देनेको तैयार थे। सिपाहियोंको तो सभीको होता है। आज मेरे कारणसे अधरचन्द्र तथा भेजकर दारोगाजीने उस बदचलन स्त्रीको भी पकड़ उनके परिवारको कितनी पीड़ा हो रही है। सचमुच मॅंगवाया। उसने आते ही अपराध स्वीकार किया और उनकी इस पीड़ामें मैं ही कारण हूँ। किसी भी हेतुसे हो, बताया कि 'यह तो अधरचन्द्रके द्वारा पंद्रह रुपये पाकर अधरबाबू मेरे कारणसे दुखी थे, और उस दु:खने ही उसके कथनानुसार करनेको आयी थी। उसे जैसा उनसे ऐसा व्यवहार करवा दिया। वस्तुत: मुझपर जो करनेको अधरचन्द्रने कहा था, वैसा ही किया। उसे यह मार पड़ी, वह तो मेरे अपने ही पूर्वकृत कर्मका फल है। पता नहीं था कि ये लोग रामतनु बाबूको मारेंगे।' मेरा प्रारब्ध ऐसा न होता तो अधरचन्द्रमें क्या शक्ति थी गुंडे भी पुलिसके भयसे ढीले पड रहे थे। यह सब कि वे मुझको कष्ट पहुँचा सकते। यह तो मेरे ही कर्मका देखकर अधरचन्द्रके होश हवा हो गये। वह बिलकुल फल मुझे मिला। वे भूलसे इसमें निमित्त बनकर अपना घबरा गया, काँपने लगा और उसकी आँखोंसे आँसुओंकी बुरा कर बैठे, यह उनकी भूल है। भूला हुआ आदमी

संख्या ४] सन्त-स	वभाव २१
*****************	*************************************
दया तथा क्षमाका पात्र होता है। वह तो पागल है न?	बाबूका कुछ भी अनिष्ट नहीं होगा।' वह अपने भले
अतएव मेरी प्रार्थना है—एक बार हमलोग चलकर	पति रामतनु बाबूके सत्-स्वभावसे परिचित थी और इस
दारोगाजीसे प्रार्थना करें कि वे इस मामलेको आगे बढ़ावें	स्वभावके रक्षण तथा संवर्धनमें उनकी सहायक भी थी।
ही नहीं। वे न मानें तो फिर ऐसी व्यवस्था करें कि	अस्तु! इस समय रामतनु बाबू गाँववालोंसे जो कुछ कह
अधरचन्द्रके विरुद्ध कोई भी भाई गवाही न दें। मैंने तो	रहे थे, सब अधरचन्द्रकी स्त्री सुन रही थी और उसके
अभी बयान दिया ही नहीं है। मैं अपने बयानमें कह दूँगा	हृदयमें रामतनु तथा उनकी पत्नी अबलाके प्रति श्रद्धा
कि पैर फिसलकर गिर पड़नेसे मेरे चोट आ गयी।'	बढ़ी जा रही थी और अपने पतिके दुष्ट स्वभावके
आपलोग एक बातपर और विचार कीजिये—	कारण अपने प्रति लज्जा और घृणा!
अबतक अपने गाँवका यश सर्वत्र फैला है। किसीको भी	गाँववालोंमें श्रीहरिपद नामक एक सात्त्विक स्वभावके
किसी अपराधपर कभी सरकारी दण्ड नहीं मिला। कभी	वृद्ध सज्जन थे। उनको रामतनुकी बातें बहुत अच्छी लगीं
अपने गाँवके नामपर दाग लगा ही नहीं। अब यदि	और उन्होंने रामतनु बाबूकी प्रशंसा करते हुए तथा
अधरबाबू दण्डित हो गये तो गाँवपर धब्बा लग जायगा।	उनका समर्थन करते हुए गाँववालोंको समझाया।
लोग चर्चा करेंगे कि उस गाँवमें ऐसे लोग रहते हैं। अत:	गाँववालोंका मन कुछ पलटा। इतनेमें डॉक्टर आ गये।
प्रकारान्तरसे गाँवका ही नाम बदनाम होगा। आगे	डॉक्टर भी रामतनु बाबूसे परिचित तथा उनके प्रति श्रद्धा
चलकर इससे कोई लोग अनुचित लाभ उठाकर	रखते थे। रामतनु बाबूने समझाकर डॉक्टरसे यह लिखवा
गाँववालोंको परेशान भी कर सकते हैं। अत: इस भावी	लिया कि 'उन्होंने सब जाँच कर ली है। रिपोर्ट पीछे
विपत्ति तथा कलंकके टीकेसे बचनेके लिये भी अधरबाबूपर	देंगे।' रामतनु बाबूने अधरचन्द्रके अनुकूल रिपोर्ट लिखनेके
कोई कार्यवाही नहीं होनी चाहिये, और वे निर्दोष ही	लिये डॉक्टरसे बहुत अनुरोध किया, पर डॉक्टरको
छूट जाने चाहिये। गाँवभरको निष्कलंक बनाये रखनेके	उनकी बात नहीं जँची। आखिर वे इस बातपर राजी हो
लिये यह बड़ा आवश्यक है। गाँववाले तो यह सब	गये कि 'हम रिपोर्ट अभी नहीं दे रहे हैं। इस बीच आप
सुनकर दंग थे। कोई मन-ही-मन रामतनु बाबूकी प्रशंसा	दारोगाजीको राजी कर लीजिये; केस ही न चले तो फिर
कर रहे थे और कोई-कोई उनकी इस दयाको कायरता,	हमारी रिपोर्टकी आवश्यकता ही नहीं रहेगी। सारा
देश-काल-पात्रका विरोधी आचरण, अपराध बढ़ानेकी	मामला ही समाप्त हो जायगा।' इसीके अनुसार उन्होंने
चेष्टा और मूर्खता बतला रहे थे। रामतनु बाबूकी	रिपोर्ट पीछे देनेकी बात लिख दी थी।
आँखोंसे परदु:खकातरताके कारण आँसू बह रहे थे।	डॉक्टरके लौट जानेपर रामतनु बाबू गाँवके चार-
उधर पुलिसके आते ही गाँवभरमें समाचार फैल	पाँच सम्भ्रान्त वृद्ध पुरुषोंको लेकर थानेपर गये। दारोगाजीको
गया था। अधरबाबूकी स्त्री बड़ी घबरा रही थी। वह	सब बातें समझायीं और रो-रोकर श्रीअधरचन्द्र तथा
भली थी, पतिको यह सब दुष्कर्म करनेसे रोका भी करती	उसके साथियोंको बिना केस चलाये छोड़ देनेका
थी। पर वह खल-हृदय उसकी बातको मानता नहीं	अनुरोध किया। दारोगापर रामतनुजीके इस विलक्षण
था। रामतनु बाबूकी स्त्री अबलासे उसकी बहुत प्रीति	व्यवहारका प्रभाव पड़ा। उस दिन भाग्यसे थानेमें
थी। रामतनु बाबूकी पत्नी—यह सोचकर कि कहीं	पुलिसके सर्कल इन्सपेक्टर प्रमथ बाबू आये हुए थे। वे
आवेशमें आकर गाँवके लोग अधरबाबूकी स्त्रीको	भी यह सब सुन-देख रहे थे। उनपर प्रभाव पड़ा।
परेशान न करें—दौड़कर उसको अपने घर ले आयी थी	दारोगाजीने उनसे बात की। ये सारी बातें अधरचन्द्र तथा
और उसको समझा दिया था कि 'हमलोगोंके द्वारा अधर	उनके साथी भी सुन रहे थे। गाँवमें भी रामतनुकी चेष्टा

भाग ९६ तथा बातें वे देख चुके थे। अत: उनका हृदय अपने जमानत-मुचलका जो कुछ आप कहें, देनेको तैयार हूँ। दुष्कर्मपर पश्चात्तापकी आगसे जल रहा था और वह यह सून-देखकर इन्सपेक्टर प्रमथ बाब तथा क्रमशः बदलकर निर्मल हुआ जा रहा था। जो काम दारोगाजी दोनोंका हृदय द्रवित हो गया। वे भी आखिर बड़े-बड़े दण्डों तथा जेलोंसे नहीं हो सकता, वह मनुष्य ही थे। उन्होंने अधरचन्द्रको बुलाकर कहा— रामतनुजीने सद्व्यवहारसे अनायास हो रहा था। देखा तुमने ? सुनी सब बातें ? कहाँ तुम और तुम्हारा प्रमथ बाबूने बीचमें पड़कर गाँववालोंसे कहा-बर्ताव और कहाँ ये और इनका बर्ताव! अब तुम क्या 'देखिये! आपलोग एक अपराधीको, जो अपराध करते कहते हो? अधरचन्द्रकी आँखें तो सावन-भादोंके समय पकड़ा गया है, बचाने जाकर अपराध बढ़ानेमें बादल बनी हुई थीं। उसने रोते तथा घिघियाते हुए सहायक बन रहे हैं और प्रकारान्तरसे समाजका तथा कहा—'हुजूर! पश्चात्तापकी आगने मेरे हृदयकी सारी अपने गाँवका अहित करने जा रहे हैं। ऐसे अपराधीको कालिमाको जलाकर खाक कर दिया है। मैं प्रत्यक्ष देख रहा हूँ, मैं पिशाच हूँ और ये महान् संत हैं, जरा भी दण्ड नहीं मिलेगा तो अपराध करनेवाले लोगोंका दु:साहस बढ़ेगा, जो समाजके लिये बड़ा देवता नहीं, देवताओंके भी पूजनीय महात्मा हैं। पर मैं घातक होगा। ये रामतनु बाबू तो साधुहृदय हैं, ये इस बचना नहीं चाहता। मुझे आजन्म कालापानी मिलना बातको नहीं समझ सकते। पर आपलोग इनके इस चाहिये। पर मेरे अपराधोंको देखते तो आजन्म कालापानी पागलपनका साथ क्यों दे रहे हैं?' भी पर्याप्त नहीं होगा। मैंने जीवनभर अपराध-ही-अपराध किये हैं। सदा भला करनेवालोंका भी सदा इसपर श्रीहरिपद तथा रामतनु बाबूने अनेकों युक्तियोंसे प्रमथ बाबुको समझानेकी चेष्टा की कि वास्तवमें दण्डसे बुरा किया है। यद्यपि इनकी कुपासे मेरे हृदयकी सारी अपराध नहीं घटते। अपराध घटेंगे तो प्रेम तथा कालिमाका विषभरा कूड़ा जल गया है। इसीसे मैं सहानुभृतिसे ही घटेंगे। कष्टके समय अहैतुक सेवा प्राप्त बचना नहीं चाहता। आप मेरा चालान कीजिये। मैं करनेपर ही अपराधीका हृदय-परिवर्तन होगा। फिर स्वयं अपना अपराध स्वीकार करूँगा।' उन्होंने यह भी कहा कि 'हमलोगोंने निश्चय किया है यह सुनकर रामतनु बाबू रो पड़े और लपककर कि न तो आपको अधर बाबुके विरुद्ध एक भी गवाह उन्होंने अधरचन्द्रको हृदयसे लगा लिया और उसके मिलेगा, न कोई सबूत ही। तब आप क्या करेंगे?' आँसू पोंछने लगे। प्रमथ बाबू प्रभावित तो पहलेसे ही थे। अब उनपर प्रमथ बाबूकी रायसे दारोगाजीने उन लोगोंको छोड़ और भी प्रभाव पड़ा। पर उन्होंने जरा रुखाईसे कहा— दिया। सब कागज फाड दिये गये। सब सानन्द विदा हुए। प्रमथ बाबूने तथा दारोगाजीने रामतनु बाबूकी चरण-'देखिये, मुझे आपलोगोंके प्रति आदर है—आपकी उदारताका मैं सम्मान करता हूँ, पर इस प्रकार सहसा धूलि ली। रामतन् बाब् बड़े आदरसे अधरचन्द्रके गलेमें अपराधीको छोड़कर हमलोग कर्तव्यविमुख नहीं होना हाथ डाले चले जा रहे थे। रामतनु बाबूका चेहरा खिल चाहते। हम सोचेंगे—क्या किया जा सकता है। आपलोग रहा था और उनके नेत्रोंमें हर्षके आँसू थे। अधरचन्द्रका अभी उन्हें छुड़ाना चाहते हैं तो हमलोग अस्थायी रूपसे सिर नीचा था, मुख उदास था और नेत्रोंसे पश्चात्तापके इन्हें छोड़ देते हैं, परंतु कोई इनकी जमानत देनेवाले आँसुओंकी धारा बह रही थी। गाँववाले घेरे चल रहे आपलोगोंमेंसे तैयार हो जायँ।' थे। गुंडे भी भले मानस बनकर घर लौट रहे थे। Hinह्यपुर तो प्रांतर वाल इंदारोहा नरहेड: /तहार वाल प्रंतर के ते काल कर के लिए के साम के अपने काल कर के लिए के स

नव-संवत्सर—नयी ऊर्जाके प्राकट्यका अवसर संख्या ४] नव-संवत्सर—नयी ऊर्जाके प्राकट्यका अवसर (प्रोफेसर डॉ० श्रीगिरिजाशंकरजी शास्त्री) हिन्दू पंचांगका नया संवत् यानी विक्रम संवत् तुम्हारा सिर (मुख) है।' इससे यह ज्ञात होता है कि २०७९ आज चैत्र शुक्ल प्रतिपदासे आरम्भ हो रहा है। वैदिक कालमें वसन्त ऋतु चैत्रमासमें ही होती थी। यह समय उल्लास और उमंगका होता है। इस समय तैत्तिरीयोपनिषद्में कहा गया है—'मुखं वा एतत् संवत्सरस्य सम्पूर्ण धरा रंग-बिरंगी हो जाती है। चैती फसल नवान्न यच्चित्रा पौर्णमासः।' इसका अर्थ है कि चैत्रकी होकर घरोंमें आ जाती है। मनसे आनन्द फूट पड़ता है। पूर्णिमा ही संवत्सरका मुख है। आमके वृक्षोंमें बौरका आना, महुएके फूलका झड़ना, संवत्सरका स्वरूप-सूर्य नक्षत्रमण्डलके किसी कटहलका पुलिकत होना, पृथ्वीका धन-धान्यसे सम्पन्न बिन्दुसे चलकर जब पुन: उसी बिन्दुपर आ जाता है होना, शीतल-मन्द-सुगन्ध त्रिविध वायुका बहना, वृक्षोंमें अर्थात् ३६० डिग्री पूरा कर लेता है, उस समयावधिको नयी कोपलोंका आना, लाल टेसू, पीली सरसोंके पुष्प ही एक सौरवर्ष कहते हैं। इसे हम वर्ष कहते हैं। यह ३६५ नहीं, अपितु प्राय: सभी रंगोंके फूलोंके खिलनेसे समूची दिनोंका होता है। चन्द्रमाका वर्ष (चान्द्र वर्ष) ३५४ धराका सतरंगी हो जाना, मादकतासे मनका आनन्दातिरेकसे दिनोंका होता है। दोनोंमें ११ दिनोंका अन्तर हो जाता भर जाना ही नहीं, लताकुंजोंमें पक्षियोंका कलरव, है। अतएव तीसरे वर्ष, एक अधिकमास दोनोंके वर्षोंके भौंरोंका गुंजन, कोयलका कूकना, समशीतोष्ण वातावरण अन्तरका मेल करा देता है। ही नये संवत्सरके प्राकट्यका ज्ञान करा देता है। एक और वर्ष है, बार्हस्पत्य वर्ष, जो बृहस्पतिकी कालगणना और संवत्सर—भारतीय काल गतिपर आश्रित है। बृहस्पति ३६१ दिनोंमें एक राशि चलता है। एक राशि ३० डिग्रीकी होती है। बृहस्पति (समय)-गणना हमारे ऋषियोंकी सबसे महत्त्वपूर्ण खोज है, जिसका सबसे महत्त्वपूर्ण अंग संवत्सर-निर्णय लगभग बारह सौर वर्षोंसे बारह राशियोंको पूरा करता है। मैत्रेय्युपनिषद् कहता है कि काल स्वयं परमात्मा है। है। बृहस्पतिके एक राशि चलनेके कालको एक संवत्सर इस कालरूपी ब्रह्मके दो भेद हैं, प्रथम अकल अर्थात् कहा गया है। वैदिक कालके पाँच वर्षींके युगको कला (अवयव)-रहित, दूसरा सकल जो अवयवसहित हटाकर संहिताकारोंने जय, विजय आदि साठ संवत्सर है। अकल काल प्रलयमें भी बना रहता है, जबकि स्थापित कर दिये। कह दिया गया—'बृहस्पतेः मध्यमराशिभोगात्सांवत्सरं सांहितिका वदन्ति।' जिस सकल काल सूर्यकी उत्पत्तिके बाद आता है। कालका विभाग सूर्यके अधीन ही है। सूर्यसे ही घटी, पल, दिन, दिन बृहस्पति राशि-परिवर्तन करता है, उस दिनसे बार्हस्पत्य वर्ष आरम्भ होता है। यह प्राय: सौरवर्षके रात्रि, मास, ऋतु, अयन एवं संवत्सरकी उत्पत्ति होती है। संवत्सर एक वर्षके समयको कहते हैं। कहा गया मध्यमें परिवर्तित होता है, किंतु वर्षपर्यन्त चान्द्र वर्षारम्भके है कि 'संवसन्ति ऋत्वादयः यत्र' अर्थात् जिसमें ऋतुएँ, समयमें विद्यमान संवत्सरका ही संकल्प किया जाता है। अयन, मास, पक्ष, तिथि तथा दिन एवं रात्रि निवास करते इन तीनोंके अतिरिक्त दो और संवत्सर—नाक्षत्र एवं हैं, वह संवत्सर है। भगवान् श्रीकृष्णने श्रीमद्भगवद्गीतामें सावन हैं, जो वैदिक कालमें भी विद्यमान थे। इस तरह स्वयंको ऋतुओंमें वसन्त कहा है। वैदिककालमें संवत्सरका कुल पाँच संवत्सर—सौर, चान्द्र, बार्हस्पत्य, सावन एवं आरम्भ इसी ऋतुसे होता था। उन दिनों पाँच वर्षोंका नाक्षत्र हैं। वैदिक कालमें इन्हीं पाँचों अंगोंके समाहारकी पंचांग संज्ञा थी। कालान्तरमें उपर्युक्त पाँचों अंगोंका ही एक युग माना गया था। तैत्तिरीयारण्यकमें कहा गया है सुक्ष्मातिसुक्ष्म रूप पंचांगका परिवर्तित रूप है। तिथि, कि, 'हे कालरूप ब्रह्म! तुम संवत्सर हो, परिवत्सर हो, इदावत्सर हो, इदुवत्सर हो तथा इद्वत्सर हो, वसन्त योग तथा करण नाक्षत्र कलासे उद्भृत हैं। वर्तमान समयमें

सौरादि पाँचों अंगोंमें केवल दो—सौर एवं चान्द्र संवत्सरोंका नवसंवत्सर महाराज विक्रमादित्यकी गौरवमयी ही प्रयोग व्यवहार-जगत्में चल रहा है। वर्तमान कीर्तिगाथा गा रहा है। युधिष्ठिरका सिंहासनारोहण, सतयुगका पंचांगोंमें वर्षके राजा, मन्त्री, धान्येश आदि लिखे जाते प्रारम्भ, मत्स्यावतार इसी तिथिको हुआ था। पुराणोंके अनुसार, हैं। संहिता ग्रन्थोंमें लिखा गया है कि जिस दिन चैत्र ब्रह्माजीने जगत्की सर्जना इसी तिथिसे आरम्भ की थी। शुक्ल प्रतिपदा हो, वह जिस दिन हो वही राजा तथा ऋषियोंने कालमानोंको प्रकृतिके आधारपर निर्धारित किया मेष संक्रान्तिके दिनका स्वामी वर्षका मन्त्री होगा। है। प्रकृतिको देखकर संवत्सरके आनेका बोध हो जाता है। संवत्सर-पूजन चैत्रमासके शुक्लपक्षकी प्रतिपदा तिथिसे नवसंवत्सरका या केसरसे रँगे अक्षतसे अष्टदलकमल बनाकर उसपर आरम्भ होता है, यह अत्यन्त पवित्र तिथि है। इसी ब्रह्माजीकी सुवर्णमूर्ति स्थापित करे। गणेशाम्बिका-

तिथिसे पितामह ब्रह्माने सृष्टिनिर्माण प्रारम्भ किया था— चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहिन। शुक्लपक्षे समग्रे तु तदा सूर्योदये सित॥

इस तिथिको रेवती नक्षत्रमें, विष्कुम्भ योगमें दिनके समय भगवान्के आदि अवतार मत्स्यरूपका प्रादुर्भाव भी माना जाता है—

कृते च प्रभवे चैत्रे प्रतिपच्छुक्लपक्षगा। रेवत्यां योगविष्कुम्भे दिवा द्वादशनाडिकाः॥ मत्स्यरूपकुमार्यां च अवतीर्णो हरिः स्वयम्।

मत्स्यरूपकुमाया च अवताणा हारः स्वयम्।
(स्मृतिकौस्तुभ)
युगोंमें प्रथम सत्ययुगका प्रारम्भ भी इस तिथिको
हुआ था। यह तिथि ऐतिहासिक महत्त्वकी भी है, इसी

हुआ या। यह तिय एतिहासिक महत्यका मा ह, इसा दिन सम्राट् चन्द्रगुप्त विक्रमादित्यने शकोंपर विजय प्राप्त की थी और उसे चिरस्थायी बनानेके लिये विक्रम-

संवत्का प्रारम्भ किया था। इस दिन प्रातः नित्यकर्म करके तेलका उबटन लगाकर स्नान आदिसे शुद्ध एवं पवित्र होकर हाथमें गन्ध, अक्षत, पुष्प और जल लेकर देश-कालके

'मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य स्वजनपरिजन-सिहतस्य वा आयुरारोग्यैश्वर्यादिसकलशुभ-फलोत्तरोत्तराभिवृद्ध्यर्थं ब्रह्मादिसंवत्सरदेवतानां पूजनमहं करिष्ये।'

उच्चारणके साथ निम्नलिखित संकल्प करना चाहिये-

—ऐसा संकल्पकर नयी बनी हुई चौरस चौकी या बालूकी वेदीपर स्वच्छ श्वेतवस्त्र बिछाकर उसपर हल्दी संवत्सरोपसर्गा मे विलयं यान्त्वशेषतः॥
पूजनके पश्चात् विविध प्रकारके उत्तम और
सात्त्विक पदार्थोंसे ब्राह्मणोंको भोजन करानेके बाद ही
स्वयं भोजन करना चाहिये।
इस दिन पंचांग-श्रवण किया जाता है। नवीन पंचांगसे
उस वर्षके राजा, मन्त्री, सेनाध्यक्ष आदिका तथा वर्षका

पूजनके पश्चात् 'ॐ ब्रह्मणे नमः' मन्त्रसे ब्रह्माजीका

कल्याणकारक तथा शुभ होनेके लिये ब्रह्माजीसे निम्न

भगवंस्त्वत्प्रसादेन वर्षं क्षेमिमहास्तु मे।

फल श्रवण करना चाहिये। सामर्थ्यानुसार पंचांग-दान करना

चाहिये तथा प्याऊ (पौसला)-की स्थापना करनी चाहिये। आजके दिन नया वस्त्र धारण करना चाहिये तथा घरको

पूजनके अनन्तर विघ्नोंके नाश और वर्षके

आवहनादि षोडशोपचार पूजन करे।

प्रार्थना की जाती है-

ध्वज, पताका, बन्दनवार आदिसे सजाना चाहिये। आजके दिन निम्बके कोमल पत्तों, पुष्पोंका चूर्ण बनाकर उसमें काली मिर्च, नमक, हींग, जीरा, मिस्री और अजवाइन डालकर खाना चाहिये, इससे रुधिर-विकार नहीं होता और आरोग्यकी प्राप्ति होती है। इस दिन नवरात्रके लिये

घट-स्थापन और तिलकव्रत भी किया जाता है। इस व्रतमें यथासम्भव नदी, सरोवर अथवा घरपर स्नान करके संवत्सरकी

मूर्ति बनाकर उसका 'चैत्राय नमः', 'वसन्ताय नमः' आदि नाम-मन्त्रोंसे पूजन करना चाहिये। इसके बाद विद्वान्

भाग ९६

की या आदि नाम-मन्त्रोंसे पूजन करना चाहिये। इसके बाद विद्वान् हल्दी _, ब्राह्मणका पूजन-अर्चन करना चाहिये।

संख्या ४] 'नाम् राम को कलपतरु' 'नामु राम को कलपतरु' (श्रीगजाननजी पाण्डेय) एक बहुत लोकप्रिय भजन है—'जय जय राम, है कि 'सन्तोषरूपी धनके आगे, सभी प्रकारके धन व्यर्थ हैं।' यदि सारी सुख-सुविधाएँ होनेके बावजुद मनमें जय सियाराम, दो अक्षरका प्यारा नाम, राम नामके जपनेसे ही बन जाते सब बिगडे काम।' शान्ति नहीं है तो वह दौलत किस कामकी? अत: हमें अच्छे दिनोंमें भी ईश्वरको नहीं भूलना कितनी सीधी एवं सच्ची बात इस भजनमें आयी है कि यदि हमें इस भवसागरसे पार उतरना है तो 'राम' चाहिये, ताकि दु:ख ही क्यों हो? के नामको दृढ़तासे अपने जीवनका आधार बना लेना दुःख में सुमिरन सब करे सुख में करे न कोय। होगा। तुलसीदासजी अपना उदाहरण देते हुए, 'राम' जो सुख में सुमिरन करे तो दु:ख काहे को होय॥ का नाम लेनेसे 'कल्याण' की बात कहते हैं। (कबीरदास) अत: मनमें ईश्वरके प्रति अटूट श्रद्धा और विश्वास नामु राम को कलपतरु कलि कल्यान निवासु। हो और सत्कर्मका साथ हो तो कोई बाधा हमारा मार्ग जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदासु॥ नहीं रोक पायेगी। इसलिये तुलसीदासजी इस जीवके (रा०च०मा० १।२६) उद्धारके लिये संजीवनी मन्त्र बता रहे हैं कि-अर्थात् कलियुगमें रामका नाम कल्पतरु (मनचाहा पदार्थ देनेवाला) और कल्याणका निवास (मुक्तिका राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरीं द्वार। घर) है, जिसको स्मरण करनेसे भाँग-सा (निकृष्ट) तुलसी भीतर बाहेरहुँ जौं चाहसि उजिआर॥ तुलसीदास तुलसीके समान पवित्र हो गया। (रा०च०मा० १।२१) अमुल्य मानव जीवनकी सार्थकता इसमें है कि हम अर्थात् यदि तू भीतर और बाहर दोनों ओर उजाला सत्कर्मद्वारा सर्वोच्च लक्ष्य अर्थात् ईश्वरप्राप्तिको अपने चाहता है तो मुखरूपी द्वारकी जीभरूपी देहलीपर रामनामरूपी मणि-दीपकको रख। जीवनका लक्ष्य बनायें, अन्यथा यदि तुच्छ बातोंमें, भौतिक सुख-सुविधाओंके जालमें फँसकर, यदि हमने भारत संतोंकी भूमि है। यहाँ अनेक महापुरुषोंने इस जीवनको यूँ ही गवाँ दिया तो हमारे हाथ क्या जन्म लिया है। उनका जीवन हमारे लिये प्रकाश-लगेगा? स्तम्भके समान है। इस दोहेमें इस ओर संकेत किया गया है-गीताका सार यही है कि 'जो भी होता है, हमारे अच्छेके लिये होता है।' इसपर हमारी आस्था बनी रहे हरि माया कृत दोष गुन बिनु हरि भजन न जाहिं। भजिअ राम तजि काम सब अस बिचारि मन माहिं॥ अर्थात् हम जैसे भी हैं, सूत्र (डोरी) उस ईश्वरके हाथमें दे दें तो वह हमें उबार लेगा। (रा०च०मा० ७।१०४क) श्रीहरिकी मायाके द्वारा रचे हुए दोष और गुण अतः हमें अपने धर्मका पालन करते हुए, बुराईसे श्रीहरिके भजन बिना नहीं जाते। मनमें ऐसा विचारकर, दूर रहना है। राम भजनमें, आलस्यका परित्याग करना सब कामनाओंको छोड़कर (निष्काम भावसे) श्रीरामजीका है और उसकी शरणमें जाकर ही इस जीवको मुक्ति मिल सकती है। तब ईश्वरके रूपमें हमारा पथ-प्रदर्शन करते भजन करना चाहिये। दुर्मार्गसे कमाई हुई रकम, सन्तोष नहीं देती और हुए, इस जीवनको निष्कण्टक बनायेंगे, इसमें तनिक न धनसे सुख खरीदा जा सकता है, इसलिये कहा गया सन्देह नहीं है।

गुप्त नवरात्र (श्रीकौशलजी पाण्डेय) माघमासके शुक्लपक्षकी प्रथम नौ तिथियाँ गुप्त माँ ताराकी पूजा की थी। आर्थिक उन्नति और बाधाओंके नवरात्र कही जाती हैं। निवारणहेतु माँ तारा महाविद्याका महत्त्वपूर्ण स्थान है। एक वर्षमें कुल चार नवरात्र होते हैं, जिनमेंसे इसकी सिद्धिसे साधककी आयके नित्य नये साधन सामान्यत: दो नवरात्रियोंके बारेमें सबको पता रहता है. बनते हैं। जीवन ऐश्वर्यशाली बनता है। इसकी पूजा पर शेष दो गुप्त नवरात्र हैं। गुरुवारसे आरम्भ करनी चाहिये। इससे शत्रुनाश, वाणी-माँ दुर्गाकी आराधना वैसे तो प्रत्येक दिन की जानी दोष-निवारण और मोक्षकी प्राप्ति होती है। चाहिये, लेकिन नवरात्रमें देवीकी पूजा का विशेष महत्त्व **३-छिन्नमस्ता**—माँ छिन्नमस्ताका स्वरूप गोपनीय है। चैत्र और आश्विनमासके शुक्लपक्षकी प्रतिपदासे है। इनका सर कटा हुआ है। इनके कबन्धसे रक्तकी तीन धाराएँ निकल रही हैं। जिसमें-से दो धाराएँ नवमीतक नौ दिनोंमें देवीके नौ रूपोंकी आराधनाका उनकी सहेलियाँ और एक धारा स्वयं देवी पान कर विधान है। इन नवरात्रोंको वासन्तिक नवरात्र और शारदीय नवरात्रके रूपमें जाना जाता है। रही हैं। चतुर्थ संध्याकालमें छिन्नमस्ताकी उपासनासे साधकको सरस्वतीकी सिद्धि हो जाती है। राहु इस इनके अलावा भी सालमें दो नवरात्र ऐसे आते हैं, जिनमें माँ दुर्गाकी दस महाविद्याओंकी पूजा-अर्चना की महाविद्याका अधिष्ठाता ग्रह है। जाती है। तंत्र-विद्यामें आस्था रखनेवाले लोगोंके लिये **४-त्रिप्रभैरवी** — आगम ग्रन्थोंके त्रिपुरभैरवी एकाक्षररूप हैं। शत्रु-संहार एवं तीव्र तन्त्र-यह नवरात्र बहुत महत्त्व रखते हैं। बाधा-निवारणके लिये भगवती त्रिपुरभैरवी महाविद्या-इन नवरात्रको गुप्त नवरात्र कहा जाता है, आषाढ्

और माघमासके शुक्लपक्षकी प्रतिपदासे नवमीतक साधना बहुत महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। इससे साधकके नवरात्रको गुप्त नवरात्र कहा जाता है। गुप्त नवरात्रका समय शाक्त एवं शैव-धर्मावलंबियोंके लिये तन्त्र साधनाओंके लिये अधिक शुभ होता है। तन्त्र-साधकोंके

लिये यह समय महत्त्वपूर्ण है, इन दिनों दस महाविद्याकी साधना कल्याणकारी सिद्ध होगी। जो मुक्तिका मार्ग बताती है, उसे 'विद्या' कहते हैं और जो भोग और मोक्ष दोनों देती है; उसे महाविद्या कहते हैं। दस

महाविद्या इस प्रकार हैं-इन महाविद्याओंके प्रकट होनेकी कथा महाभागवत-देवीपुराणमें वर्णित है। इनका नाम तथा कृपाफल कुछ ऐसा है— १-काली—दस महाविद्याओं में यह प्रथम है।

सौन्दर्यमें निखार आ जाता है। इसका रंग लाल है और यह लाल रंगके वस्त्र पहनती हैं। गलेमें मुण्डमाला है तथा कमलासनपर विराजमान है। त्रिपुरभैरवीका मुख्य लाभ बहुत कठोर साधनासे मिलता है। ५-धूमावती — धूमावतीका कोई स्वामी नहीं है। इसकी उपासनासे विपत्तिनाश, रोग-निवारण तथा युद्धमें

िभाग ९६

६-वगलामुखी — बगलामुखी शत्रु-बाधाको पूर्णतः समाप्त करनेके लिये बहुत महत्त्वपूर्ण साधना है। इस विद्याके द्वारा दैवी प्रकोपकी शान्ति, धन-धान्य-प्राप्ति, भोग और मोक्ष दोनोंकी सिद्धि होती है। इसके तीन कलियुगमें इनकी पूजा-अर्चनासे शीघ्र फल मिलता है। प्रमुख उपासक ब्रह्मा, विष्णु एवं भगवान् परशुराम रहे २-तारा—सर्वदा मोक्ष देनेवाली और तारनेवालीको हैं। परशुरामजीने यह विद्या द्रोणाचार्यजीको दी थी

विजयकी प्राप्ति होती है।

तारीकार्यभावताहर्मा उद्याप है Saskerdattp अंशिविड बाब्राइटिया कार्या देव स्पेत पृष्ट के V विज्ञाने प्रसिद्ध के प्रतिकार के प्

संख्या ४] गुप्त नवरात्र निष्प्रभावी कर दिया था। युधिष्ठिरने भगवान् कृष्णके हैं। शुक्र इनका अधिष्ठातृ ग्रह है। परामर्शपर कौरवोंपर विजय प्राप्त करनेके लिये बगलामुखी इन महाविद्याओंकी उपासनाके फलके रूपमें कहा देवीकी ही आराधना की थी। गया है कि पूर्वकालमें साधक यदि दुराचारी भी रहा ७-षोडशी महाविद्या--शक्तिकी सबसे मनोहर हो तो सत्संगादिके प्रभावसे भगवतीके प्रति अनन्यता सिद्ध देवी हैं। इनके ललिता, राजराजेश्वरी महात्रिपुर हो जानेसे उसके पापोंका प्रक्षालन हो जाता है और सुन्दरी आदि अनेक नाम हैं। षोडशी साधनाको उसकी मुक्ति हो जाती है-राजराजेश्वरी इसलिये भी कहा जाता है; क्योंकि यह अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्। अपनी कृपासे साधारण व्यक्तिको भी राजा बनानेमें सोऽपि पापविनिर्मुक्तो मुच्यते भवबन्धनात्॥ समर्थ हैं। इनमें षोडश कलाएँ पूर्णरूपसे विकसित हैं, गुप्त नवरात्र पूजा-विधि इसलिये इनका नाम माँ षोडशी है। इनकी उपासना मान्यतानुसार गुप्त नवरात्रके दौरान अन्य नवरात्रोंकी श्रीयन्त्रके रूपमें की जाती है। यह अपने उपासकको तरह ही पूजा करनी चाहिये। नौ दिनोंके उपवासका भक्ति और मुक्ति दोनों प्रदान करती हैं। बुध इनका संकल्प लेते हुए प्रतिपदा यानी पहले दिन घटस्थापना अधिष्ठातु ग्रह है। करनी चाहिये। घटस्थापनाके बाद प्रतिदिन सुबह और ८-भुवनेश्वरी-महाविद्याओंमें भुवनेश्वरी महा-शामके समय माँ दुर्गाकी पूजा करनी चाहिये। अष्टमी विद्याको आद्याशक्ति कहा गया है। माँ भुवनेश्वरीका या नवमीके दिन कन्या-पूजनके साथ नवरात्र-व्रतका स्वरूप सौम्य और अंग कान्तिमय है। माँ भुवनेश्वरीकी उद्यापन करना चाहिये। साधनासे मुख्य रूपसे वशीकरण, वाक्-सिद्धि, सुख, गुप्त नवरात्रका महत्त्व लाभ एवं शत्रुओंपर विजय प्राप्त होती है। पृथ्वीपर देवीभागवतके अनुसार जिस तरह वर्षमें चार बार जितने भी जीव हैं, सबको इनकी कृपासे अन्न प्राप्त नवरात्र आते हैं और जिस प्रकार नवरात्रमें देवीके नौ होता है। इसलिये इनके हाथमें शाक और फल-रूपोंकी पूजा की जाती है, ठीक उसी प्रकार गुप्त फुलके कारण इन्हें माँ 'शाकम्भरी' नामसे भी जाना नवरात्रमें दस महाविद्याओंकी साधना की जाती है। जाता है। चन्द्रमा इनका अधिष्ठातृ ग्रह है। गुप्त नवरात्र विशेषकर तान्त्रिक क्रियाएँ, शक्ति-**९-मातंगी**—इस नौवीं महाविद्याकी साधनासे साधना, महाकाल-उपासना आदिसे जुड़े लोगोंके लिये सुखी गृहस्थ जीवन, आकर्षक और ओजपूर्ण वाणी विशेष महत्त्व रखती है। इस दौरान देवी भगवतीके तथा गुणवान् पति या पत्नीकी प्राप्ति होती है। इनकी साधक बेहद कठिन नियमके साथ व्रत और साधना साधना वाममार्गी साधकोंमें अधिक प्रचलित है। करते हैं। इस दौरान लोग लम्बी साधना करके दुर्लभ **१०-कमला**—माँ कमला कमलके आसनपर शक्तियोंकी प्राप्ति करनेका प्रयास करते हैं। गुप्त नवरात्रकी प्रमुख देवियाँ विराजमान रहती हैं। श्वेत रंगके चार हाथी अपनी सूँडोंमें जलभरे कलश लेकर इन्हें स्नान कराते हैं। शक्तिके इस गुप्त नवरात्रके दौरान कई साधक महाविद्या (तन्त्र-विशिष्ट रूपकी साधनासे दरिद्रताका नाश होता है और साधना)-के लिये माँ काली, तारादेवी, त्रिपुरसुन्दरी, आयके स्रोत बढते हैं। जीवन सुखमय होता है। यह भुवनेश्वरी, माता छिन्नमस्ता, त्रिपुरभैरवी, माँ धूमावती, माता दुर्गाका सर्वसौभाग्य रूप है। जहाँ कमला हैं, वहाँ विष्णु बगलामुखी, मातंगी और कमलादेवीकी पूजा करते हैं।

भागवतकी आत्मा—चतुःश्लोकी (डॉ० श्रीयुत श्रीभागवतशरणजी मिश्रा) बदरीनाथ धामके समीप माणा गाँवमें स्थित व्यास ४-उपर्युक्त बातोंके सच्चे विश्लेषणसे ही शुद्ध

गुफामें महर्षि वेदव्यास वेदोंका विभाजन, पुराणोंका प्रणयन और पंचम वेदके नामसे विख्यात महाभारतकी रचना करनेके यह प्रकरण तथा सभी बातें मेरे पिता श्रीब्रह्माजीने



वेदव्यासजीने कहा कि इतने ग्रन्थोंका निर्माण करनेके बाद भी मुझे शान्ति नहीं मिल रही है। नारदजीने कहा—'महर्षे! यहाँ आपसे थोड़ी भूल हुई, आपने पुराणोंमें ज्ञानयोग समझाया, कर्मयोग समझाया।

कहीं-कहीं ज्ञानको बहुत महत्त्व दिया है, परंतु ज्ञान और कर्म दोनों श्रीकृष्ण-प्रेमसे सफल होते हैं। आपने प्रेममें

पागल होकर विस्तारपूर्वक श्रीकृष्णकी लीला-कथा नहीं कहीं, इसलिये आपका मन अशान्त है।' व्यासजीने मार्गदर्शन करनेका अनुरोध किया। तब

हुए भगवान् विष्णुके नाभिकमलसे उत्पन्न ब्रह्माजीको विष्णुजीने सृष्टि करनेका आदेश दिया तथा अपने ऐश्वर्य

नारदजीने बताया—क्षीरसागरमें शेषनागकी शय्यापर लेटे

एवं विस्तारके बारेमें बताया— १-सृष्टिके पूर्व, मध्य तथा अन्तमें मैं ही रहता हूँ।

२-सृष्टिके बाद निर्मित सभी वस्तुएँ केवल मेरी माया होंगी।

रहूँगा, पर दिखायी नहीं दुँगा।

३-सृष्टिमें निर्मित सभी वस्तुओंमें मैं उपस्थित

ज्ञानकी प्राप्ति होगी।

स्वयं बतायीं। इसलिये इन्हें ध्यानमें रखकर सरल भाषामें ईश्वरके ऐश्वर्य तथा विस्तारके बारेमें आप एक और पुराणका निर्माण करें, जिससे सभी लोग लाभान्वित हों।

इसीके पश्चात् व्यासजीने श्रीमद्भागवत-महापुराणकी रचना प्रारम्भ की और दूसरे स्कन्धके नौवें अध्यायमें इस प्रकरणका उल्लेख किया, इन्हीं चार श्लोकोंको चतुःश्लोकी भागवत कहा जाता है।

इन चार श्लोकोंका ही विस्तार पूरा पुराण है, जिसे बहुत ही रोचक ढंगसे व्यासजीने वर्णन किया है। अहमेवासमेवाग्रे नान्यद् यत् सदसत्परम्।

पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्येत सोऽस्म्यहम्॥

ऋतेऽर्थं यत् प्रतीयेत न प्रतीयेत चात्मनि। तद् विद्यादात्मनो मायां यथाऽऽभासो यथा तमः॥ महान्ति भूतानि भूतेषुच्यावचेष्वनु। प्रविष्टान्यप्रविष्टानि तथा तेषु न तेष्वहम्॥

एतावदेव जिज्ञास्यं तत्त्वजिज्ञासुनाऽऽत्मनः। अन्वयव्यतिरेकाभ्यां यत् स्यात् सर्वत्र सर्वदा॥ (श्रीमद्भा०२।९।३२—३५)

इसे भागवतका अमृत तथा भागवतकी आत्मा भी

कहा जाता है। पहले श्लोककी व्याख्या—सृष्टिके पूर्व केवल मैं था। सारे सुक्ष्म तथा स्थूल तथा इनका कारण अज्ञान

भी मैं ही हूँ। जहाँ सृष्टि नहीं है, वहाँ भी मैं हूँ। सृष्टिके रूपमें जो कुछ प्रतीत होता है, वह भी मैं ही हूँ। सृष्टिके

बाद जो बचा रहेगा, वह भी मैं ही हूँ। इन विचारोंको जनमानसमें स्थापित करनेके लिये अनेक कथाएँ भागवत-पुराणमें व्यासजीने लिखी हैं।

कुछ उद्धरण तथा उदाहरण निम्न हैं—१-भगवान्के दस अवतारोंकी कथाएँ, २-द्रौपदीके चीर-हरणकी कथा,

३-गज-ग्राहको कथा, ४-रासलीलाको कथा, ५-नृसिंह-

वरणीय दु:ख है, सुख नहीं संख्या ४] अवतारकी कथा इत्यादि। पुनर्जन्म, ५-धुन्धकारीका उद्धार। इस प्रकारकी अनेक रोचक कथाएँ विचारोंको इस प्रकार पूरा पुराण कथाओंसे भरा है, जो सर्वत्र प्रतिष्ठित करनेके लिये पुराणमें भरी हैं। भगवानुकी उपस्थितिको उजागर करती हैं। चतुर्थ श्लोककी व्याख्या—यह ब्रह्म है, यह ब्रह्म द्वितीय श्लोककी व्याख्या—सृष्टिमें उपस्थित सभी वस्तुएँ वास्तविक होते हुए भी उसी प्रकार मिथ्या नहीं है, इसका विश्लेषण एवं संश्लेषण उपर्युक्त तीन हैं, जैसे दो चन्द्रमाओंकी उपस्थिति। ये सारी वस्तुएँ मेरी श्लोकोंको ध्यानमें रखकर करनेवाला ही सच्चा ज्ञानी है। १-कंस वध एवं वसुदेव-देवकीकी बन्धन-मृक्ति, माया हैं, वास्तविक नहीं। १-जैसे अन्धकार तथा प्रकाश दोनों मेरी माया है, २-गजकी मुक्ति एवं ग्राहका उद्धार, ३-पूतनाकी मुक्ति एवं पृतनाको मातृत्वका प्यार, ४-बलिका उद्धार एवं उसकी अन्धकारमें प्रकाश विल्प्त तथा प्रकाशमें अन्धकार बेटीकी इच्छापूर्ति, ५-रासलीलामें संयोग एवं वियोग। विलुप्त हो जाता है, २-सभी सांसारिक सम्बन्ध माता, इस प्रकार विभिन्न तत्त्वोंका अर्थ गहन विचार, पिता, पुत्र, पुत्री, पत्नी, मित्र तथा ब्रह्माण्ड सब मेरी माया है, ३-अशोक-वाटिकामें सीता मेरी माया है, ४-संश्लेषण एवं विश्लेषण करके ही असली ज्ञानकी प्राप्ति श्रीकृष्णकी बाल एवं सभी लीलाएँ माया हैं, ५-सूर्य, तथा अज्ञानका विनाश सम्भव है। चन्द्रमा, तारे, सूर्योदय तथा सूर्यास्त सब मेरी माया है। उपसंहार—१-इस प्रकार हम देखते हैं कि व्यासजीने पूरे पुराणमें भगवान्की मायाकी कथाएँ हैं। सुन्दर कथाओंके द्वारा अज्ञानका नाश तथा ज्ञानका प्रकाश तृतीय श्लोककी व्याख्या—सृष्टिकी सारी उत्पन्न किया, २-परीक्षितके मनसे मृत्युका भय समाप्त वस्तुओंमें मैं आत्माके रूपमें उपस्थित हूँ, पर मैं दिखता किया, ३-ईश्वरकी नाम-महिमाका प्रदर्शन, नारायण नामसे उद्धारकी ओर इशारा किया, ४-सृष्टिके प्रारम्भकी कथा नहीं हूँ; जैसे दुधमें मक्खनके रूपमें उपस्थित हूँ तथा आत्मदृष्टिसे उपस्थित नहीं भी हँ। तथा पुण्य और पापका परिणाम बताया, ५-स्वर्ग एवं नरकका १-द्रौपदीके चीरमें उपस्थिति, २-रासलीलामें हर वर्णन करके परोपकारकी ओर ध्यान दिलाया। गोपीके साथ उपस्थिति, ३-खम्भेसे नृसिंहभगवान्का नि:सन्देह चतु:श्लोकी भागवत श्रीमद्भागवत-प्राकट्य, ४-बलिकी पुत्री रत्नमालाका पूतनाके रूपमें महापुराणकी आत्मा तथा हृदय है। ——— वरणीय दु:ख है, सुख नहीं बोध-कथा— महाभारतका युद्ध समाप्त हो चुका था।विजयी धर्मराज सिंहासनासीन हो चुके थे।अश्वत्थामाने पाण्डवोंका वंश ही नष्ट करनेके लिये ब्रह्मास्त्रका प्रयोग किया; किंतु जनार्दनने पाण्डवोंकी और उत्तराके गर्भस्थ शिशुकी भी उससे रक्षा कर दी। अब वे श्रीकृष्ण द्वारका जाना चाहते थे। इसी समय देवी उनके पास आयीं। वे प्रार्थना करने लगीं। बड़ी अद्भुत प्रार्थना की उन्होंने। अपनी प्रार्थनामें उन्होंने ऐसी चीज माँगी, जो कदाचित् ही कोई माँगनेका साहस करे। उन्होंने माँगा—'हे जगद्गुरो! जीवनमें बार-बार हमपर विपत्तियाँ ही आती रहें; क्योंकि जिनका दर्शन होनेसे जीव फिर संसारमें नहीं आता, उन आपका दर्शन तो उन (विपत्तियों)-में ही होता है।' यह देवी कुन्तीका अपना अनुभव है। उनका जीवन विपत्तियोंमें ही बीता और विपत्तियाँ भगवान्का वरदान हैं, उनमें वे मंगलमय निरन्तर चित्तमें निवास करते हैं, यह उन्होंने भली प्रकार अनुभव किया। अब उनके पुत्रोंका राज्य निष्कण्टक हो गया। उन्हें लगा कि विपत्तिरूपी निधि अब हाथसे चली गयी। इसीसे श्यामसुन्दरसे विपत्तियोंका वरदान माँगा उन्होंने। प्रमादी सुखी जीवन धिक्कारके योग्य है। धन्य है वह विपद्ग्रस्त जीवनका दुःखपूरित क्षण, जिसमें वे अखिलेश्वर स्मरण आते हैं। [श्रीमद्भागवत-महापुराण]

उपनिषदोंमें प्रणव-निरूपण (डॉ० श्रीइन्द्रमोहनजी झा 'सच्चन')

प्रणव या 'ॐ'के जपयोगकी साधनाका विवेचन ओम् यह ब्रह्म है। ओम् यह सब कुछ है। ओम्

प्राय: सभी उपनिषदों एवं अन्य आध्यात्मिक योग-अंगीकारका वाचक है। ओम् कहनेपर [ऋत्विज] मन्त्र सुनाते हैं। ओम शोम् कहकर शस्त्रों (ऋग्वेदके प्रार्थना-

साधनात्मक ग्रन्थोंमें किया गया है। मुण्डकोपनिषद् (२।२।४)-में कहा गया है कि-मन्त्रविशेष)-का पाठ करते हैं। ओम् कहकर (सोमयागमें) अध्वर्यु और यजुर्वेदी प्रतिगर (प्रोत्साहक मन्त्रविशेष)

प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते। अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत्॥

अर्थात् 'प्रणव धनुष है, आत्मा तीर है, ब्रह्म उसका

लक्ष्य है। इसे प्रमादरहित होकर, तीरकी भाँति तन्मय

होकर बींधना चाहिये।' श्वेताश्वतरोपनिषद् (१।१४)-के शब्दोंमें साधक अपने शरीरको एक लकड़ी बनाये

और प्रणवको दूसरी लकड़ी।ध्यानरूपी रगड़के अभ्याससे छिपी हुई आगके सदृश परमात्मदेवको देखे—

स्वदेहमरणिं कृत्वा प्रणवं चोत्तरारणिम्। ध्याननिर्मथनाभ्यासाद् देवं पश्येन्निगृढवत्॥

छान्दोग्योपनिषद्में ओंकारकी स्तुतिसे अमर होनेका संकेत देते हुए कहा गया है-

'यदा वा ऋचमाप्नोत्योमित्येवातिस्वरत्येवः सामैवं यजुरेष उ स्वरो यदेतदक्षरमेतदमृतमभयं तत्प्रविश्य देवा अमृता अभया अभवन्।' (१।४।४)

अर्थात् जब उपासक ऋग्वेदको पढता है, तो ऊँचे स्वरमें ओम् बोलता है। इसी प्रकार सामवेद और यजुर्वेदको

भी पढता है। यही ओम् शब्द स्वर है। यह अक्षर, अमृत और अभय है। जो उपासक ऐसा जानकर ॐकी स्तुति करता है, वह उस स्वरमें प्रवेश करता है। जैसे देव उसमें प्रवेश करके

अमर हो गये हैं, वैसे ही वह भी अमर हो जाता है।

'तैत्तरीय शीक्षावल्ली'के अष्टम अनुवाकमें ओंकारको ब्रह्मप्राप्तिका साधन बताते हुए कहा गया है-

ओमिति ब्रह्म। ओमितीद्र सर्वम्। ओमित्येतद्नुकृतिर्ह

स्म वा अप्यो श्रावयेत्याश्रावयन्ति। ओमिति सामानि गायन्ति। ओःशोमिति शस्त्राणि शःसन्ति। ओमित्यध्वर्युः

प्रतिगरं प्रतिगृणाति। ओमिति ब्रह्मा प्रसौति। ओमित्यग्नि-

मकारकी ध्वनि कण्ठदेशसे आज्ञाचक्रतक व्याप्त होकर

ब्रह्मग्रन्थिका भेदन होता है। इसके पश्चात् जिसे तुरीया

मात्रा अथवा अर्धमात्रा कहा गया है, उसकी सूक्ष्म

ध्वनियोंसे आत्मसाक्षात्कारकी अवस्था आती है।

योगतत्त्वोपनिषद् (१३८-१३९)-में कहा गया है-अकारे रेचितं पद्ममुकारेणैव भिद्यते॥

मकारे लभते नादमर्धमात्रा तु निश्चला।

अकारसे स्फुट होनेवाले हृत्पद्मका उकारसे भेदन होता है। मकारसे नादसिद्धि प्राप्त होती है और

पढ़ता है। ओम् कहकर ब्रह्माको अनुज्ञा देता है। ओम्

हुआ कहता है—'मैं ब्रह्मको प्राप्त होऊँ और इस प्रकार

एक मात्राके जपको अन्तरायरूप पापोंका नाशक, दो

मात्राओंके दीर्घ जपको ऋद्धि-सिद्धियोंका प्रदायक तथा

ह्रस्वो दहित पापानि दीर्घः संपत्प्रदोऽव्ययः।

अर्धमात्रासमायुक्तः प्रणवो मोक्षदायकः॥

कहा गया है। ओम् ओम् ओम् इस प्रकार स्फुट

उच्चारणको दीर्घ कहा जाता है। ओ३म् ओ३म् ओ३म्

इस प्रकार 'ओ' का हृदयसे विशुद्धिचक्रतक उकारकी

ध्वनि व्याप्त होकर विष्णु-ग्रन्थिका भेदन होता है।

'ओमोमोम्' इस प्रकार निरन्तर उच्चारणको ह्रस्व

प्लुप्त जपको मोक्षका प्रदायक माना है। यथा—

इनके उच्चारणके तीन प्रकार हैं-

वेदाध्ययन करनेवाला ब्राह्मण ओम् उच्चारण करता

ध्यानबिन्दूपनिषद् (१।१७)-के अनुसार प्रणवके

कहकर अग्निहोत्रकी अनुज्ञा देता है।

वह ब्रह्मको अवश्य पा लेता है।'

[भाग ९६

अर्धमात्रासे निश्चलावस्था प्राप्त होती है। प्रणवकी इस

होत्रमनुजानाति। ओमिति ब्राह्मणः प्रवक्ष्यन्नाह ब्रह्मोपाप्नवा-नामांndyisan Dispard Server https://dsc.gg/dhatimen.https://dsc.gg/dhatimen संख्या ४] सर्वोत्तम धन आगे उसे व्यस्तक्रमसे उच्चारण करनेकी विधि बतायी शिखा तु दीपसंकाशा तस्मिन्तुपरि वर्तते। जाती है। अकार, उकार, मकार और तुरीयामात्रा—इस अर्धमात्रा तथा ज्ञेया प्रणवस्योपरि स्थिता॥ प्रकार व्यस्तक्रमसे इसे तीन मात्रा और चतुर्थ अनुस्वारको (ब्रह्मविद्योपनिषद्, मन्त्र ९) अर्थात् जिस प्रकार दीपककी ज्वाला होती है, उसी आधी मात्रा मानकर सार्धत्रयमात्रात्मक कहा जाता है। प्रकार अर्धमात्रा प्रणवके ऊपर स्थित है। इसका उच्चारण ओंकारके व्यस्त उच्चारणमें अकारकी ध्वनि मूलाधारसे तार स्वरके रूपमें किया जाता है, इसीलिये इसे तार भी उत्थित होकर मणिपुरमें नाभिपर्यन्त व्याप्त होकर रुद्र-कहा जाता है। इसके उच्चारणके सम्बन्धमें कहा गया है— ग्रन्थिका भेदन करती है। नाभिसे ऊपर अर्थात् 'जिस कांस्यघण्टानिनादस्तु यथा लीयति शान्तये। प्रकार काँसेके घंटाकी ध्वनि धीरे-धीरे कम होकर विलीन ओङ्कारस्तु तथा योज्यः शान्तये सर्वमिच्छता॥ हो जाती है, उसी प्रकार सभी प्रकारकी कामनापूर्तिके लिये ओंकारका प्रयोग करना चाहिये।' योगतत्त्वोपनिषद् (ब्रह्मविद्योपनिषद्, मन्त्र १२) जहाँ प्लुत उच्चारण होता है, उसे प्लुत कहा जाता (१।६३-६४)-के अनुसार साधकको चाहिये कि वह एकान्तमें बैठकर पहले किये हुए पापोंका नाश करनेके है। नृसिंहपूर्वतापिन्युपनिषद्के तीसरे अध्यायमें ओंकारके लिये प्लूत मात्रासे प्रणवका जप करे। यह मन्त्र सब उच्चारणका फल इस प्रकार बताया गया है— यदि हस्वा भवति सर्वं पाप्पानं दहत्यमृतत्वं च गच्छति पापोंको और सब प्रकारके दोषोंको दूर करनेवाला है— यदि दीर्घा भवति महतीं श्रियमाप्नोत्यमृतत्वं च गच्छति ततो रहस्युपाविष्टः प्रणवं प्लुतमात्रया। यदि प्लुता भवति ज्ञानवान् भवत्यमृतत्वं च गच्छति। जपेत् पूर्वार्जितानां तु पापानां नाशहेतवे॥ अर्थातु 'ओंकारका जो ह्रस्व उच्चारण करता है, सर्वविघ्नहरो मन्त्रः प्रणव: सर्वदोषहा। उसके सब पाप नष्ट हो जाते हैं, और वह अमृतत्वको एवमभ्यासयोगेन सिद्धिरारम्भसम्भवा॥ प्राप्त होता है। ओंकारके दीर्घ उच्चारणसे जप करनेपर अतः साधकोंको प्रणव-चिन्तनके प्रमुख तत्त्वोंका अत्यन्त लक्ष्मीवान्—धनधान्य और वैभवसे सम्पन्न हो ज्ञान प्राप्त करके उपासनामें आगे बढना चाहिये, तभी जाता है और अमृतत्वको प्राप्त करता है। प्लुत उच्चारण इसके शास्त्रोक्त फल प्राप्त होनेमें सुगमता होगी तथा करनेसे ज्ञानी होता है और अमृतत्व प्राप्त करता है।' साधकको किसी योग्य सद्गुरुसे मन्त्रदीक्षा लेकर साधन योगसाधना करनेवालेको जब ओंकारका समस्त मन्त्रका जप आरम्भ करना चाहिये: क्योंकि विशेष ज्ञान गुरुकृपासे ही प्राप्य है। क्रमसे उच्चारण करनेका अच्छा अभ्यास हो जाता है तो ———— सर्वोत्तम धन -बोध-कथा— महर्षि याज्ञवल्क्यकी दो स्त्रियाँ थीं। एकका नाम था मैत्रेयी और दूसरीका कात्यायनी। जब महर्षि संन्यास ग्रहण करने लगे, तब दोनों स्त्रियोंको बुलाकर उन्होंने कहा—'मेरे पीछे तुमलोगोंमें झगड़ा न हो, इसलिये मैं सम्पत्तिका बँटवारा कर देना चाहता हूँ।' मैत्रेयीने कहा—'स्वामिन्! जिस धनको लेकर मैं अमर नहीं हो सकती, उसे लेकर क्या करूँगी? मुझे तो आप अमरत्वका साधन बतलानेकी दया करें।' याज्ञवल्क्यने कहा—'मैत्रेयी! तुमने बड़ी सुन्दर बात पूछी। वस्तुत: इस विश्वमें परम धन आत्मा ही है। उसीकी प्रियताके कारण अन्य धन, जन आदि प्रिय प्रतीत होते हैं। इसलिये यह आत्मा ही सुनने, मनन करने और जाननेयोग्य है। इस आत्मासे कुछ भी भिन्न नहीं है। ये देवता, ये प्राणीवर्ग तथा यह सारा विश्व—जो कुछ भी है, सभी आत्मा है। ये ऋगादि वेद, इतिहास, पुराण, उपनिषद्, श्लोक, सूत्र, मन्त्रविवरण और सारी विद्याएँ इस परमात्माके ही नि:श्वास हैं।' 'यह परमात्म-तत्त्व अनन्त, अपार और विज्ञानघन है।' ऐसा उपदेश करके महर्षिने संन्यासका उपक्रम किया तथा

उन्हींके उपदेशके आधारपर चलकर मैत्रेयीने भी परम कल्याणको प्राप्त कर लिया। [बृहदारण्यकोपनिषद्]

सरल जीवन ही सच्चा ज्ञान है

(श्रीदिलीपजी देवनानी)

ऐसा लगता है कि बडी-बडी ज्ञानकी बातोंमें यमेवैष वृण्ते तेन लभ्य-

उलझकर मनुष्य सहज और सरल जीवनको खो बैठता स्तस्यैष आत्मा विवृण्ते तनुःस्वाम्॥ है। जैसे संसारकी उलझन है, वैसे ही यह भी है। सरलता यह आत्मा केवल प्रवचनसे नहीं मिलता, न मेधासे

और सच्चाईसे जीवन बिताना ही तो ज्ञान है। बहुत-से दृष्टान्त याद कर लेना, बहुत-से भजन याद कर लेना,

यह तो दिमागपर बहुत बड़ा वजन लादना हुआ। जिन्हें

प्रवचन करना हो उनके लिये यह बात है। अपनी मुक्तिके लिये बहुत-से शास्त्र पढ़नेकी जरूरत नहीं, गीताके किसी

एक श्लोकको ही जीवनमें उतार लेनेसे ही काम बन जाता है। स्वामी विवेकानन्द कहा करते थे कि जो पाँच परखे

हुए विचारोंको आत्मसात् करके अपना जीवन गठन करता है, वह उस व्यक्तिसे श्रेष्ठ है, जिसने पूरा ग्रन्थालय

कण्ठस्थ कर लिया है। मैं अपने गुरुसे कहता था कि मुझे यह ग्रन्थ पढ़ना है, वह ग्रन्थ पढ़ना है, तब वे कहते थे कि 'बेटा! पूरा समुद्र तू थोड़े पी सकेगा। सच्चाईसे

रख और अपने धर्मका पालन कर। बस, इतनेसे ही तू भवसागर पार हो जायगा।' एक व्यक्ति स्वामी विलासानन्दजीके पास आया

जीवन बिता, भगवानुका नाम ले, सबके प्रति सद्भावना

और बोला कि स्वामीजी! एक पुस्तक लिखना चाहता हूँ, तब स्वामीजी बोले पहलेसे क्या कम पुस्तकें हैं, जो

तुम और बोझ बढ़ाना चाहते हो। गीता है, रामायण है, वेद हैं, पुराण हैं—इनमेंसे कोई एक ही पढ़ लो तो कल्याण हो जाय।

शास्त्र पढ़नेसे हमारा कोई विरोध नहीं, परंतु इसकी अत्यधिक वासना थका देती है। श्रीउडिया बाबाजी महाराज कहते थे कि 'शास्त्रोंके जंगलमें मत भटको।'

कभी-कभी बहुत बड़ी-बड़ी ज्ञानकी बातोंमें उलझ जानेके कारण हम यह भूल जाते हैं कि हमारे लिये कौन-सी एक-दो बातें हैं, जो हम जीवनमें उतारकर

अपना कल्याण कर सकें।

नायमात्मा

कठोपनिषद्में यह आया है कि-प्रवचनेन लभ्यो

श्रुतेन।

न मेधया न बहुना

और न बहुत सुननेसे, बल्कि यह जिसका वरण करता है, उसके आगे अपना रहस्य प्रकट कर देता है। शंकराचार्य भगवान्ने इसका भाष्य लिखते हुए यह

कहा है कि केवल आत्मलाभके लिये प्रार्थना करनेवालेका ही यह आत्मा वरण करता है। कबीर, सूर, नानक, मीरा, रैदास आदि संत ज्यादा

पढ़े-लिखे न थे, परंतु ये सब भगवत्प्राप्त व्यक्ति थे। आज सारा संसार इनको श्रद्धासे सर झुकाता है। भगवान् शंकराचार्य विवेकचूडामणि नामक ग्रन्थमें लिखते हैं—

वाग्वैखरी शब्दझरी शास्त्रव्याख्यानकौशलम्। वैदुष्यं विदुषां तद्वद् भुक्तये न तु मुक्तये॥ वाणीका कौशल, शब्दोंका चमत्कार, शास्त्रकी

व्याख्या करनेका कौशल—यह सब विद्वानोंका मनोरंजन है, इसका मोक्षसे सम्बन्ध नहीं है। वाचिक ज्ञानी मत बनो, बातको सही समझो एवं अपने जीवनको श्रेष्ठ बनाओ। एक साधुकी डायरी देखी

तो उसमें सिर्फ 'राम' नाम लिखा था, बाकी कुछ भी नहीं। राजा पृथुने अन्तमें प्रजाजनोंको उपदेश देते हुए कहा कि अपने धर्मका पालन करो एवं भगवान्को याद

करो। बस, इतनेसे ही कल्याण हो जायगा। गीतामें भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं, अपने स्वाभाविक कर्मोंद्वारा भगवान्की पूजा करके मनुष्य परम सिद्धिको प्राप्त करता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि ईश्वरप्राप्तिका

मार्ग बहुत ही सहज और सरल है, वह तो ज्ञानका अभिमान करनेवाले लोग बातको उलझा देते हैं और बडे-बडे व्याख्यानोंमें असल बात छोड बैठते हैं। गिद्ध उड़ता आकाशमें है, परंतु नजर मांसके टुकड़ेपर होती

है, उसी प्रकार बात तो 'अहं ब्रह्मस्मि' की करते हैं, परंतु नजर कामिनी-कांचनपर रहती है। जीवनमें त्याग आना चाहिये, सच्चाई आनी चाहिये, सरलता आनी चाहिये।

आत्माकी खोज ही गीता है (श्रीओमप्रकाशजी पोद्दार) आत्मा ही वह दिव्यमणि (जीवनका मुलतत्त्व) है, दूरीमें सिमटकर रह जाता है, सृष्टिका सारा-का-सारा जिसके प्रकाशमें संसारकी अविद्याका समूल नाश हो पदार्थ काकभुशुण्डिजीसहित भगवानुके मुँहमें समा जाता जाता है। है और यह देखकर तो वे अत्यन्त आश्चर्यमें पड़ जाते मनुष्य तनसे पशु, मनसे मनुष्य और आत्मासे ईश्वर हैं कि उनके स्वयंके द्वारा अनन्त कालका बिताया हुआ है। यह संसार हमारी ईश्वरीय सत्ताद्वारा हमारे अपने ही समय केवल कुछ पलमें ही घटा हुआ दिख जाता है। महान् चित्तकी समय, स्पेस और पदार्थकी चतुर्आयामी पिछली सदीमें आईन्स्टाइनने प्रकाशकी गतिपर कल्पनाका कमाल है, जिसमें हम अपने शरीरद्वारा प्रवेश भिन्न-भिन्न प्रयोग करके यह सिद्ध कर दिया कि समय करके इन्द्रियों और मनके द्वारा इसे भोगना चाहते हैं। और स्पेस निरपेक्ष (Absolute) सत्य नहीं हैं, बल्कि इसीको हमारे शास्त्रोंमें 'तत्सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत्' सापेक्ष (Relative) सत्य हैं यानी सिकुड़ या फैल सकते हैं अर्थात् 'स्वयं रचकर स्वयं ही इसमें प्रवेश कर जाना' तथा पदार्थ भी सिर्फ एनर्जी (शक्ति)-का पुंजमात्र है। इन कहा है। शरीररूपमें हममें अहं आ जाना स्वाभाविक दोनों अर्थात् काकभुशुण्डि-आख्यान और आधुनिक है और मन है तो मोहमें तो हम पड़ ही जाते हैं। फलत: विज्ञान दोनोंसे यह सिद्ध होता है कि संसारके तीनों ही संसार हमें सत्य लगने लग जाता है और आँखसे आत्मा घटक समय, स्पेस और पदार्थ असत्य होते हुए भी हमें नहीं दिखनेसे हमारा मन स्वतः ही पशुभावमें चला जाता इसलिये सत्य प्रतीत होते हैं: क्योंकि हमें अपने शरीर और है। हमें लगता है हमारा तन है, मन है और संसार तो इन्द्रियोंसे इनका अनुभव होता है। इसलिये आत्मा जिसमें है; लेकिन आत्माके अस्तित्वके बारेमें हम संशयमें पड़ न स्पेस है, न समय है, न पदार्थ है; सत्य होते हुए भी हमें जाते हैं। आत्माकी विस्मृति हो जानेसे हम जनमते-मरते सत्य प्रतीत नहीं होती। आत्माका यह अदृश्य 'सत्य' हमें

आत्माकी खोज ही गीता है

संख्या ४]

रहते हैं और अनन्त कालतक संसारमें ही पड़े रहते हैं। कैसे दिखायी दे, इसी समस्याका हल गीता है। बाहर निकल नहीं पाते। हमें संसारका निर्गम ही नहीं विज्ञानकी नवीनतम खोजोंसे हमें अवगत करानेके मिलता। अतः अब सबसे बडा प्रश्न हमारे सामने यह लिये संसारके विभिन्न देशोंमें TED सम्मेलन आयोजित उपस्थित हो जाता है कि यदि आत्मा है तो वह कहाँ किये जाते हैं। ऐसे ही एक सम्मेलनमें मेडिकल साइंसके गयी। गीता कहती है कि आत्मा मरती नहीं है—'नैनं एक खोजकर्ताने बताया कि ऑपरेशन करनेके पहले **छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः""**' आदि-मरीजको जो एनेस्थिसिया दी जाती है, वह दिमागको आदि। इसलिये गीता उस आत्माकी खोजमें लग जाती निश्चेष्ट नहीं करती, बल्कि दिमागमें एक ऐसा 'मुकशोर'

है। और आप गीता पढेंगे तो पायेंगे कि गीता अपने

मिशनमें सफल हो जाती है।

हो जाता है कि शरीरकी सुधि ही 'भूल' जाता है। और काल (समय), स्पेश और पदार्थ—ये तीनों इतने तब डॉक्टर आरामसे ऑपरेशन कर देता है। भारी भ्रम हैं, जिनमेंसे हमारी सोच बाहर निकल ही नहीं ठीक इसी प्रकार दृश्य संसारको ही सत्य मानकर पाती है। तुलसीदासजीने इस भ्रमको पहचाना, हम उसमें डूब गये हैं। इसलिये अपनी ही आत्माको

(Silent Noise) मचा देती है, जिसमें दिमाग इतना व्यस्त

इसलिये रामचरितमानसमें उत्तरकाण्डमें भगवान् राम बिलकुल 'भूल' गये हैं। क्या आत्माकी यह प्रतिध्वनि गीताके इस श्लोकमें सुनायी नहीं देती— काकभुशुण्डिजीके सामने अपनी इस मायाका बहुत

रोचक ढंगसे संवरण (निराकरण) करते हैं। काकभृश्णिडजी या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी। देखते हैं कि विराट् स्पेस सिर्फ और सिर्फ दो अंगुलकी यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुने:॥

भाग ९६ ****************** सिर्फ इन दो पंक्तियोंका अर्थ हम समझ जायँ तो आत्माका ज्ञान होता हो तो मूर्खको तो कभी आत्माका पूरी गीता समझमें आ जायगी। प्रथम पंक्ति 'वैराग्य' और ज्ञान नहीं होगा, जबिक आत्मा तो ज्ञानी और मूर्ख दूसरी पंक्ति 'ज्ञान' की है। जबिक शास्त्रोंमें 'ज्ञान' पहले दोनोंमें है। ज्ञानी हो या मूर्ख, निर्बल हो या बलवान्, आता है और 'वैराग्य' बादमें। लेकिन यहाँ ठीक उलटा आस्तिक हो या नास्तिक गीता सबके लिये है। इसीलिये है; क्योंकि भगवान् पहले हमें हमारी आत्माको संयम आत्मज्ञानकी दिशामें अग्रसर होनेमें भगवान्ने वेदोंके यानी वैराग्यद्वारा जगाये रखनेकी बात करते हैं कि ज्ञानको भी बाधा बताया है—'त्रैगुण्यविषया वेदा औरोंकी देखा-देखी तुम भी मत सो जाना और उसके **निस्त्रेगुण्यो भवार्जुन।** यह वेदोंकी अवमानना नहीं है, बाद मुनियोंके दृष्टान्तसे यह ज्ञान भी दे देते हैं कि जिस बल्कि वेदोंकी सबसे बड़ी प्रशंसा है। यह इस बातका सांसारिकतामें दुनियावाले जगे हुए हैं, उसकी तरफसे प्रमाण है कि वेदोंसे बढ़कर कोई ज्ञान नहीं है। यदि अपनी आँखें बन्द रखो, वह तो वास्तवमें घोर रात्रि है। वेदोंसे बड़ा कोई ज्ञान-शास्त्र होता तो भगवान् उसी इस प्रकार गीताको शास्त्रीय ज्ञानकी आवश्यकता नहीं शास्त्रका नाम लेते, वेदोंका नाम नहीं लेते। क्योंकि भगवानुका तात्पर्य यहाँ 'बड़े-से-बड़े ज्ञान' से है। है। गीताको तो सिर्फ हमारा दृष्टिकोण सही करना है, जिससे 'आत्मा' हमारे 'ध्यान' में आ जाय। संसारको महान् ज्ञानके पर्याय चूँिक वेद हैं, इसलिये वेदोंका पूर्ण रूपसे (या आंशिक रूपसे ही) मिटा देना हम-जैसे उदाहरण दिया है। क्षुद्रजीवके वशकी बात नहीं है। लेकिन गीता हमारे ज्ञानके काँटेसे अज्ञानके काँटे (यानि संशय)-को दृष्टिकोणको सही कर देती है। हमारे बुद्धिके टेलिस्कोपको निकाल देनेके बाद ज्ञान और अज्ञान दोनों काँटोंको फेंक घुमाकर उस कोणपर स्थिर कर देती है, जिसमें संसार देना चाहिये। ज्ञानके काँटेको सहेजकर रख लेनेसे मन तो बिलकुल मिट जाता है, लेकिन आत्मा 'फोकस' में सदा असहज ही रहता है। अत: अपनी सहज अवस्था आ जाती है। यानि आत्मस्वरूपकी प्राप्ति नहीं हो सकती। अत: वह 'आत्मतत्त्व' जिसको आज हम भूल गये स्वस्थ शरीर, सही सोच और निर्मल मनमें ही आत्माकी हैं, उसकी याद दिलाना ही गीताका मूल उद्देश्य है। अनुभृति जागती है। अर्जुनका शरीर स्वस्थ था, मन निर्मल गीता, यद्यपि ज्ञानका अथाह सागर है, लेकिन गीताका था, लेकिन सोच सही नहीं थी। उसके सोचको सही मूल उद्देश्य ज्ञान देना नहीं बल्कि अर्जुन ही नहीं, जन-दिशामें ले जानेका उपक्रम ही गीता है, जो अर्जुन ही नहीं जनको आत्माका प्रत्यक्ष अनुभव कराना है। इसीलिये हर युगमें हर व्यक्तिकी सोच सही दिशामें ले जानेमें सक्षम भगवानुने ज्ञान नहीं बल्कि 'ज्ञानयोग', कर्म नहीं बल्कि है। इसीलिये गीता मनुष्यकी शाश्वत मित्र है। 'कर्मयोग' तथा ज्ञान और कर्म दोनोंकी पराकाष्ठा हर नकारात्मक विचारको निरस्त करना और हर 'भक्तियोग' पर सबसे ज्यादा जोर दिया है। सकारात्मक विचारको प्रशस्त करना गीताका स्वाभाविक ज्ञान और अज्ञान दोनोंसे मुक्त हुए बिना 'आत्मा' गुणधर्म है। गीताजीमें भगवान् स्वयं बैठकर ज्ञान दे रहे का दर्शन नहीं हो सकता, क्योंकि आत्मा सारे बन्धनोंसे हैं। इसलिये गीतामें अनन्त ज्ञान है, जिसका कोई पार मुक्त है। इसलिये शास्त्रोंका ज्ञान कितना भी हो जाय, नहीं पा सकता। पिछले पाँच हजार वर्षोंमें अनेक सन्त उससे आत्माका ज्ञान कभी नहीं हो सकता, क्योंकि और विद्वानोंने जीवनभर गीताजीका अध्ययन किया, ब्रह्मके ज्ञानकी तुलनामें हमारा ज्ञान सदा अपूर्ण, नगण्य लेकिन गीताके ज्ञानका अन्त नहीं पा सके। गीतारूपी

न्हीं ineduisan Piscored Server शास्त्रक्षे dse agaleha हुण वर्गा वर्षि रहेते प्राप्त म्यानियाक छे प्रमुख

नावमें बैठकर वे निस्सन्देह भवसागर तर गये, क्योंकि वह बृद्धि धन्य है, जो ईश्वरके ध्यानमें सतत लगी हुई

और तुच्छ ही नहीं बल्कि जडता है। अत: उसे तज

देनेमें ही भलाई है। उससे चेतन आत्माका ज्ञान कभी

संख्या ४] आत्माकी खो	ज ही गीता है ३५

मानकर उनकी अभ्यर्थना करते हैं। लेकिन गीताका	अर्जुनकी भावनाको उभाड़ते हैं और जब अर्जुन मन, बुद्धि
करिश्मा, गीताजीका सत्त्व, गीताका वह सहज और	और शरीरसे हार मानकर बैठ जाता है तो भगवान्
सत्वर ज्ञान (Spontaneous knowledge) है, जो अर्जुनके	मुसकराकर अत्यन्त द्रुत गतिसे उसको आत्माका रहस्य
बहाने हमें कह रहा है कि तपस्वीसे श्रेष्ठ कर्मठ व्यक्ति	बतलाना प्रारम्भ कर देते हैं और उसकी सारी जिज्ञासाओंका
होता है, कर्मठसे श्रेष्ठ ज्ञानी होता है और ज्ञानीसे श्रेष्ठ	युक्तिसंगत समाधान करते हुए छठे अध्यायतक उसको
योगी होता है। अतः तू योगी बन।	आत्माका पूरा–का–पूरा रहस्य और आत्माको जाननेकी
युद्ध छिड़नेके ठीक पहले कोई भी विवेकवान्	योग-विधि समझाकर आत्माको जाननेका अनुपम फल
व्यक्ति ज्ञानकी पाठशाला खोलकर नहीं बैठेगा। अत:	बतला देते हैं। जबतक हमारे मन, बुद्धि और शरीरमें-से
भगवान्का (तात्कालिक) उद्देश्य सिर्फ अर्जुनको यह	एक भी काम करता रहता है, तबतक हमें आत्माकी
याद दिलाना था कि तुम वह नहीं हो जो तुम सोचते	जरूरत ही नहीं पड़ती। जब ये तीनों फेल हो जाते हैं, तभी
हो। ये योद्धागण भी वह नहीं हैं, जो तुम इनको समझ	आत्माका रोल शुरू होता है। मनुष्य मरनेके लिये पैदा नहीं
बैठे हो। भगवान् चाहते थे कि किसी भी तरह जल्द-	हुआ है, संसार-सागर पार करनेके लिये पैदा हुआ है।
से-जल्द अर्जुनको अपने असली स्वरूप, अपनी आत्माका	मनुष्य स्वयं ही अपना मित्र है और स्वयं ही अपना शत्रु
पता चल जाय ताकि वह निर्द्वन्द्व भावसे लड़ सके और	है। यदि जीते जी आत्माको नहीं जान पाये, तो हम
दैववश धर्मयुद्धके बहानेसे ही सही एक ही जगह	'आत्महनन' की ओर बढ़ जाते हैं—
युद्धकी इच्छासे ही एकत्र हुए (समवेता युयुत्सवः)	जो न तरै भवसागर नर समाज अस पाइ।
आततायियोंका थोक भावमें नाश हो जाय। अर्जुनमें	सो कृत निंदक मंदमित आत्माहन गति जाइ॥
जबतक देहबुद्धि थी, तबतक वह अपने आपको, भीष्म,	हम सब आज जाने-अनजाने इसी 'आत्महनन'की
द्रोण आदिको, यहाँतक कि भगवान् कृष्णको भी देहतक	प्रक्रियामें लगे हुए हैं।
ही सीमित समझे हुए था। आत्मचेतनाके आते ही वह	मनुष्यमात्रकी कामयाबीका रहस्य आत्मामें निहित
अपनी भूलके लिये भगवान्से क्षमा माँगने लगता है कि	है। यह रहस्य गीता हमें बतलाती है। लेकिन आज हम
मैं आजतक आपको साधारण सखा समझकर व्यवहार	पुन: आत्माको बिलकुल भूल बैठे हैं। शरीरको ही सब
करता रहा, लेकिन आप तो परमपुरुष हो। आत्माका	कुछ समझे हुए हैं। विज्ञानने भोगोंके प्रचुर साधन सुलभ
ज्ञान नहीं रहनेसे ही हमारे हृदयमें ईश्वरके प्रति मूढ़भाव	कर दिये हैं। लोगोंमें भोगोंको भोगनेकी होड़ मच गयी
रहता है। आत्माका अनुभव होते ही हमारे हृदयमें ईश्वर	है। विज्ञानके विकासने आत्माके मार्गको अवरुद्ध कर
चेतना (God Consciousness) जाग्रत् हो जाती हैं। जैसे	दिया है। संसारमें अनात्मवाद बढ़ गया है। अनात्मवाद
कितना ही घना कोहरा हो, लेकिन सूर्यकी एक किरण	बढ़नेसे अनीश्वरवाद बढ़ गया है। अनीश्वरवादसे अनाचार
दिखते ही सूर्य हमें पूरा-का-पूरा दिख जाता है।	बढ़ गया है। अनाचारसे एक ऐसी अपसंस्कृति आ गयी
गीता कोरा दर्शन नहीं है, बल्कि मानवमात्रके	है, जिसमें कदाचार, दुराचार, भ्रष्टाचार आदि सब
कल्याणमें रत (सर्वभूतिहते रत:) , उद्देश्यपरक,	जायज है। दिशाहीन युवापीढ़ीकी असीम ऊर्जाका कुछ
व्यावहारिक चिन्तन है। जिसको हम अंग्रेजीमें ऑब्जेक्टिव	निहित स्वार्थोंने गलत उपयोग करके उन्हें आतंकवादकी
थिंकिंग (Objective Thinking) कह सकते हैं।	तरफ मोड़ दिया है। मनुष्य पशु बन गया है। ऐसा नहीं
अव्यक्त आत्माके व्यक्त करनेकी मनोवैज्ञानिक	है कि पशुमें आत्मा नहीं रहती, आत्मा पशुकी भी होती
विधि ही गीता है। अन्तर्यामी प्रभु पहले तो अर्जुनके रथको	है, लेकिन पशुको अपनी आत्माका पता तब चलता है,
भीष्म और द्रोणाचार्यके ठीक सम्मुख ले जाकर जानबूझकर	जब वह मर जाता है। तब उसके पास दूसरा जन्म लेनेके

भाग ९६

सिवाय कोई चारा नहीं रहता है। लेकिन मनुष्यको गया है कि हमें आत्माकी बात ही नहीं सुहाती अत:

अपनी आत्माका पता जीते जी भी लग सकता है। यदि गीताको पढनेकी कौन कहे, गीताके ऊपर नजर भी पड जीते जी मनुष्यको अपनी आत्माका पता चल जाय तो जाती है तो हम अपनी नजर फेर लेते हैं कि यह तो

ज्ञानकी पुस्तक है, हमारे किस कामकी! लेकिन गीता मनुष्य मरता नहीं है सिर्फ शरीर छोड़ता है। शरीरमें रहते हुए प्राण छोड़नेको हम मरना कहते हैं, जिसमें मर्मान्तक कोरे ज्ञानकी पुस्तक नहीं, हमारी आत्माका विज्ञान है।

पीड़ा होती है, क्योंकि मन शरीर छोडना नहीं चाहता. गीता इतनी निर्दोष है कि हमें आत्माका 'सत्य' सिर्फ लेकिन आत्मामें रहकर शरीर छोड़नेको हम 'मुक्ति' का दिखाती है, हमपर आरोपित बिलकुल भी नहीं करती।

आत्मा अपदार्थ है, इसलिये दिख जाय यही पर्याप्त है, नाम देते हैं। मृत्यु नहीं कह सकते, क्योंकि फिर उसे

दूसरा जन्म नहीं लेना पड़ता, लेकिन संसारके भोगोंमें अरोपित करनेकी आवश्यकता ही नहीं पड़ती। तभी तो अन्तमें अर्जुनको कह दिया 'यथेच्छिस तथा कुरु'। मनुष्यको इतना रस मिलने लगा है कि उसके लिये वह

कुछ भी करनेके लिये तैयार है, यहाँतक कि मरने-आत्मतत्त्वकी खोज और उसे मनुष्यमात्रको दिखा देना— मारनेके लिये भी तैयार है। हमारा मन भोगोंमें इतना रम यह श्रीमद्भगवद्गीताकी कृपा है।

बोध-कथा

____ भगवद्गीताका अद्भुत माहात्म्य

नर्मदाके तटपर माहिष्मती नामकी एक नगरी है। वहाँ माधव नामके एक ब्राह्मण रहते थे। उन्होंने अपनी

विद्याके प्रभावसे बड़ा धन कमाया और एक विशाल यज्ञका आयोजन किया। उस यज्ञमें बलि देनेके लिये एक

बकरा मँगाया गया। जब उसके शरीरकी पूजा हो गयी, तब बकरेने हँसकर कहा—'ब्रह्मन्! इन यज्ञोंसे क्या लाभ है। इनका फल विनाशी तथा जन्म-मरणप्रद ही है। मैं भी पूर्वजन्ममें एक ब्राह्मण था। मैंने समस्त यज्ञोंका

अनुष्ठान किया था और वेदविद्यामें बड़ा प्रवीण था। एक दिन मेरी स्त्रीने बाल-रोगकी शान्तिके लिये एक बकरेकी मुझसे बलि दिलायी। जब चण्डिकाके मन्दिरमें वह बकरा मारा जाने लगा, तब उसकी माताने मुझे शाप दिया—'ओ पापी! तू मेरे बच्चेका वध करना चाहता है, अतएव तू भी बकरेकी योनिमें जन्म लेगा।'

ब्राह्मणो! तदनन्तर मैं भी मरकर बकरा हुआ। यद्यपि मैं पश्-योनिमें हूँ, तथापि मुझे पूर्वजन्मोंका स्मरण बना है। अतएव इन सभी वैतानिक क्रियाजालसे भगवदाराधन आदि शुद्ध कर्म ही अधिक दिव्य हैं। अध्यात्ममार्गपरायण होकर हिंसारहित पूजा, पाठ एवं गीतादि सच्छास्त्रोंका अनुशीलन ही संसृति-चक्रसे छूटनेकी एकमात्र औषध है।

इस सम्बन्धमें मैं आपको एक और आदर्शकी बात बताता हूँ। 'एक बार सूर्यग्रहणके अवसरपर कुरुक्षेत्रके राजा चन्द्रशर्माने बड़ी श्रद्धाके साथ कालपुरुषका दान करनेकी तैयारी की। उन्होंने वेद-वेदान्तोंके पारगामी एक विद्वान् ब्राह्मणको बुलवाया और सपुरोहित स्नान करने

चले। स्नानादिके उपरान्त यथोचित विधिसे उस ब्राह्मणको कालपुरुषका दान किया।'

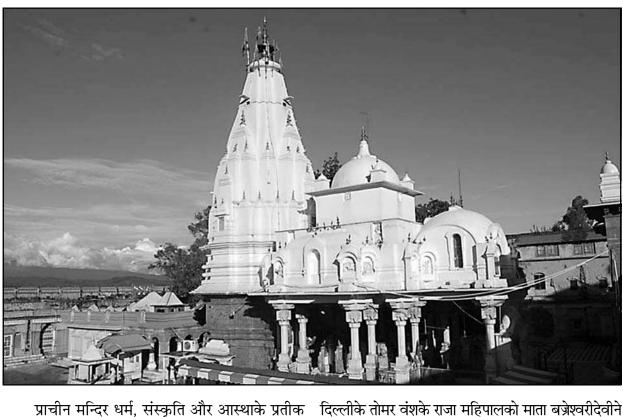
'तब कालपुरुषका हृदय चीरकर उसमेंसे एक पापात्मा चाण्डाल और एक निन्दात्मा चाण्डाली निकली। चाण्डालोंकी यह जोड़ी आँखें लाल किये ब्राह्मणके शरीरमें हठात् प्रवेश करने लगी। ब्राह्मणने मन-ही-मन

गीताके नवम अध्यायका जप आरम्भ किया और राजा यह सब कौतुक चुपचाप देख रहा था। गीताके अक्षरोंसे समुद्भृत विष्णुदुतोंने चाण्डाल जोड़ीको ब्राह्मणके शरीरमें प्रवेश करते देख वे झट दौड़े और उनका उद्योग निष्फल कर दिया। इस घटनाको देख राजा चिकत हो गया और उस ब्राह्मणसे इसका रहस्य पूछा। तब ब्राह्मणने

सारी बात बतलायी। अब राजा उस ब्राह्मणका शिष्य हो गया और उससे उसने गीताका अध्ययन—अभ्यास किया।

इस कथाको बकरेके मुँहसे सुनकर ब्राह्मण बड़ा प्रभावित हुआ और बकरेको मुक्तकर गीतापरायण हो गया।

हिमाचलकी आस्थाकी प्रतीक — श्रीबज्रेश्वरीदेवी (श्रीउदयजी ठाकुर)



बज्रेश्वरीदेवीका है। सतयुगकी देवसृष्टि एवं मानवसृष्टि और जलप्लावनके बाद पृथ्वीके उद्गमका इतिहास भगवती बज्रेश्वरी माताके संग जुड़ा हुआ है। बज्रेश्वरीदेवीके

होते हैं। ऐसा ही एक मन्दिर हिमाचल प्रदेशमें स्थित

संख्या ४]

मूल मन्दिरकी स्थापना किसने की? इस बारेमें कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं है। पौराणिक आख्यान और

जनश्रुतिके आधारपर मन्दिरके निर्माण-सम्बन्धी विभिन्न

उल्लेख प्राप्त होते हैं। चीनी यात्री ह्वेनसांगने अपने यात्रा-विवरणमें बज्रेश्वरी देवीके बारेमें विस्तृत वर्णन किया है। कहते हैं, सर्वप्रथम महमूद गजनवीने १००९

उतबीलेने अपनी पुस्तकमें लिखा है कि इतनी धन-सम्पत्ति और हीरे-जवाहरात लूटकर ले जाये गये कि

ई०में मन्दिरमें धन-सम्पत्तिकी प्रचुरताकी खबर पाकर

आक्रमण किया था। महमूद गजनवीके एक मन्त्री

स्वप्नमें दर्शन देकर राजाको विशाल सेनाके साथ महमूद गजनवीपर आक्रमण करनेको कहा था। फिर राजा महिपालने महमूद गजनवीपर आक्रमणकर उसे

आत्मसमर्पणके लिये मजबूर कर दिया था। पन्द्रहवीं शताब्दीमें कटोच वंशीय राजा संसारचन्दद्वारा

इतिहासकारोंका कथन है। १४२९-३० ई०में उनके पिता राजा कर्मचन्द और पितामह मेघचन्दद्वारा लिखे प्राचीन शिलालेख बज्रेश्वरी मन्दिर-परिसरमें प्राप्त हुए थे।

बज्रेश्वरी मन्दिरका पुन: निर्माण किया गया था। ऐसा

शारदा और देवनागरी लिपिमें ये शिलालेख हैं। सन् १६११ ई०में यूरोपके एक यात्री विलियम फिंचने मन्दिर अवलोकनकर मन्दिरकी देवीका नाम 'जय दुर्गा' लिखा

है। यूरोपीय यात्री थॉमस कोयर्ट १६१५ ई० में और १६६६ ई० में फ्रांसिसी यात्री थैबलोटने मन्दिर देखकर

घोड़े और खच्चरतक कम पड़ गये। कहते हैं कि अपने लेखमें मन्दिरकी बनावटके बारेमें विशेष वर्णन

भाग ९६ ****************** किया है। सिक्खोंके शासनकालमें महाराजा रणजीत जप और विधि-विधान है। प्राय: हिन्दुओंमें एकादशीके सिंहने स्वयं मन्दिरमें आकर श्रद्धापूर्वक सोनेका छत्र दिन चावल खाना वर्जित है, लेकिन यहाँ एकादशीके माता बज्रेश्वरीको भेंटमें चढ़ाया था। बीसवीं सदीमें ४ दिनमें भी देवीको चावल-दालका भोग लगता है। अप्रैल १९०५ को कांगड़ा क्षेत्रमें भीषण भूकम्प आया स्मरण हो कि बज्रेश्वरीदेवीकी पिण्डीमें रखा हुआ। था, जिसमें मन्दिर पूर्णरूपसे ध्वस्त हो गया था। त्रिशूल बहुत प्राचीन है और यह अष्टधातुका बना है। उल्लेखनीय है कि भूकम्पके समय मन्दिरके नजदीक इसपर महाविद्याके दश मन्त्र अंकित हैं। त्रिशूलके नीचे स्थित तारादेवीके मन्दिरको कोई क्षति नहीं हुई। दुर्गासप्तशतीका कवच अंकित है। यह सिद्ध त्रिशूल है। यहाँ मन्दिरमें माघमासमें मकर-संक्रान्तिसे सात पौराणिक सन्दर्भके अनुसार जब भगवान् शिव सतीकी मृतदेह अपने कन्धेपर लेकर ब्रह्माण्डका चक्कर दिनतक विशेष पूजाका आयोजन होता है। कहते हैं कि लगाने लगे तो सतीका वाम वक्ष:स्थल यहाँ गिरनेपर यह जालन्धर दैत्यको मौतके घाट उतारनेके समय माताके स्थान बज्रेश्वरी शक्तिपीठके नामसे जाना जाने लगा। शरीरमें अत्यधिक घाव हुए थे। देवताओंने तब माताके बज्रेश्वरी भगवती माता यहाँ पिण्डीरूपमें हैं। स्वर्णछत्रके शरीरपर घृतका लेपकर उन्हें शीतलता प्रदान की थी। नीचे पिण्डी विद्यमान है। शक्तिपीठकी अधिष्ठात्री देवी इसीलिये यहाँ एक सौ एक किलो देशी घी एक सौ एक त्रिशक्ति काली, तारा और त्रिपुरा हैं। इनमें स्तनपीठाधिष्ठात्री बार जलमें भिगोकर मक्खन बनाकर माताके पिण्डीमें चढ़ाते हैं। यहाँ सभी तरहके मेवा-फल आदि सात श्रीबज्रेश्वरी मुख्य हैं। ऐसी मान्यता है कि मन्दिर स्थापनाके दिन जगह-जगहकी ३६० देवियाँ यहाँ दिनतक पिण्डीके ऊपर चढ़ानेकी परम्परा है। बादमें यही मेवा और फल प्रसादके रूपमें भक्तोंको वितरित कर उपस्थित हुई थीं। बज्रेश्वरी देवीको प्राचीन कालमें बागेश्वरी देवी दिया जाता है। अर्थात् वाणीकी देवी कहते थे। मन्त्र, तन्त्र, पुराणकी हिमाचल सरकारने प्रदेशके प्रमुख प्राचीन मन्दिरोंके देवी ही वाणीश्वरी है अर्थात् लोक-वाणीकी देवी हैं, अच्छे देखभाल, प्रबन्धन एवं चढायी गयी धनराशिको धरा, विद्या, अपराजिता, योग, अध्यात्म विद्याकी अधिष्ठात्री राज्यके विकास-कार्योंमें लगानेहेतु हिन्दू सार्वजनिक धार्मिक संस्थानों एवं मूर्त विन्यास अधिनियम १९८४ देवी होनेसे कालान्तरमें ये 'बागेश्वरी' कहलायीं। प्राचीन समयमें भक्तजन अपनी जिह्वा काटकर देवीको अर्पण पारित किया है। ४ नवम्बर१९८६ को सरकारी एवं करते थे। कहते हैं कि कटी हुई जिह्वा पुन: स्वत: उसी गैर-सरकारी सदस्योंद्वारा गठित न्यासद्वारा ये प्राचीन दशामें फिर दिखायी पड़ती थी। इस अलौकिक चमत्कारका मन्दिर संचालित होते हैं। जिला कांगड़ाके डिप्टी उल्लेख कांगड़ा जिलेके गजेटियर १९२४-२५ ई० में कमिश्नर मन्दिर-न्यास या ट्रस्टके आयुक्त होते हैं भी है। बज्रेश्वरीदेवी नौवीं शताब्दी और दसवीं शताब्दीतक और उपमण्डल मैजिस्ट्रेट कांगड़ा सहायक आयुक्त होते हैं। गैर-सरकारी सदस्योंमें परम्परागत पुजारी तन्त्रविद्याके केन्द्र और जालन्धर पीठके नामसे प्रसिद्ध और नगरके अन्य गणमान्य नागरिक होते हैं। मन्दिरमें थीं। माता बज्रेश्वरी देवीका पूजा-विधान प्राचीन कालमें तान्त्रिक ही करते थे। सर्वप्रथम पहला पूजा करनेवाला चढ़ी दान-दक्षिणाका २० प्रतिशत भाग पूजा-अर्चनामें पुजारी मन्दिर-द्वारके बाहरसे एक हजार जप करनेके खर्च होता है, ४० प्रतिशत भाग पारम्परिक पुजारियोंको पश्चात् मन्दिरके गर्भगृहमें प्रविष्ट होता था। आज भी और ४० प्रतिशत राशि मन्दिरके खातेमें जमा करनेका पूजा-पद्धतिकी प्राचीन हस्तलिखित पाण्डुलिपि पुजारियोंके विधान है, जो कर्मचारियोंके वेतन, श्रद्धालुओंकी सुविधा और विकास-कार्यमें व्यय होती है। यहाँ श्रद्धालुओं के पास है। Hinautism छाडिकास डबाकेल्मासफडमातडर से बुक्तान के वंगालकी प्रमान मार्टिका है Y Avinash/Sha

श्रीनारायणदासजी भक्तमाली 'मामाजी' संत-संस्मरण (परम श्रद्धेय श्रीराधेश्यामजी खेमका, पूर्वसम्पादक 'कल्याण')

श्रीनारायणदासजी भक्तमाली 'मामाजी'

संख्या ४]

वे इस नामसे प्रसन्न होते। श्रीनारायणदासजीका यह आन्तरिक भाव था कि जगज्जननी भगवती श्रीसीताजी उनकी बहन हैं और वे उनके भाई हैं। भगवान् राम सबके

श्रीनारायणदासजी

मामा हो गये। यह सोचकर उन्हें प्रसन्नता होती कि जगज्जननीका भाई होनेके नाते मैं सबका मामा हूँ। इस प्रकार वे 'मामाजी' के नामसे प्रसिद्ध हो गये।

भक्तमालीका

'मामाजी'। उन्हें सभी लोग मामाजीके नामसे पुकारते और

पिता हैं, जगज्जननी सीता सम्पूर्ण जगत्की माता होनेके

कारण सम्बन्धकी दृष्टिसे श्रीनारायणदासजी सम्पूर्ण जगत्के

वे बक्सर-निवासी थे। बक्सर महर्षि विश्वामित्रजीकी तपःस्थली थी। विश्वामित्रजी तथा उनके कुछ शिष्य सन्त वहाँ तपस्या करते और कुछ राक्षसगण यदा-कदा उसमें

विघ्न डालते। विश्वामित्रजीके प्रयाससे भगवान् राम वहाँ

पधारे और उन्होंने ताड़का राक्षसीका वध किया तथा राक्षसोंके आतंकसे उस भूमिको मुक्त किया। श्रीमामाजीने इसी स्थानको

अपना साधना-स्थल बनाया। यहाँ एक भव्य मन्दिरका निर्माण किया गया, जिसमें जगज्जननी भगवती जानकी,

जो इनकी बहन थीं, उन्हें तथा अपने जवाँई (बहनोई)

मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामको स्थापित किया। इनके साथ ही उनके परिकर, भाइयों तथा श्रीहनुमान्जी महाराजके

गया, जहाँ सत्संग और भण्डारे आदि चलते रहते तथा उत्सव-महोत्सव होते रहते। वर्षमें एक बार विवाह-पंचमी (मार्गशीर्ष सुदी

विग्रह स्थापित किये गये। यह भव्य आश्रमका रूप बन

५)-पर भगवान्का विवाह-महोत्सव बड़ी धूम-धामसे बृहत् रूपमें मनाया जाता। इस महोत्सवके उपलक्ष्यमें सात दिनतक किसी सन्त अथवा किसी विशिष्ट

कथावाचककी कथा होती। सायंकाल रामलीला होती। रामलीला किसी मण्डलीके द्वारा नहीं होती, पूज्य मामाजी स्वयं पात्रोंका चयन करते, अपने भावोंके अनुसार उन्हें लीलाके लिये तैयार करते। लीलाका

सुनकर तथा भावपूर्ण लीला देखकर दर्शक भाव-विभोर हो जाते। विवाह-पंचमीके एक दिन पूर्व फुलवारी-लीला होती। विवाहके दिन भगवान्की बारात बड़े धूम-धामसे निकलती, इसमें कई हजार व्यक्ति शामिल होते।

संचालन प्राय: मामाजी स्वयं करते। लीलाके बीचमें

स्वरचित पदोंका गायन करते। मामाजीके मार्मिक पदोंको

विवाह-पंचमीके दिन पूरी रात्रिमें भगवान् श्रीसीतारामका विवाह सम्पन्न होता। साथ-साथ पदोंका गायन होता, दूसरे दिन रामकलेवा तथा युगलसरकारकी विदाई (पहरावनी) होती। देशके विभिन्न भागोंसे सन्त-

विवाह-महोत्सव बड़े भावसे विशिष्ट रूपमें सम्पन्न होता। पूज्य मामाजीमें एक विशेषता थी कि उन्हें भगवानुकी लीलाओंका स्वाभाविक रूपमें चिन्तन होता

महात्मा तथा भक्तगण इसमें सम्मिलित होते। इस प्रकार

था, जिन्हें वे भोजपुरी पदोंमें लिख लेते थे। वे पद बड़े

सुन्दर और लालित्यपूर्ण होते थे। इस प्रकार कई हजार पदोंकी रचना पूज्य मामाजीकी लेखनीद्वारा स्वाभाविक रूपमें प्रसूत हुई। उन्होंने मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् रामका

चरित्र, लीलापुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्णका चरित्र, भक्तमालके आधारपर भक्तोंकी कथा तथा शिव-विवाह

भाग ९६ आदि कई लीलाओंका वर्णन भोजपुरी भाषामें समारोहपूर्वक से तो बडे भोले बाहर पद्यरूपमें प्रस्तुत किया। भीतर में नखड़े निराले, पड़े आज सखिअन के पाले॥ पाहुन०॥ उनके कुछ पदोंकी बानगी यहाँ प्रस्तुत है-पूज्य मामाजी जब भगवान् रामजीकी कथा कहते मिथिलामें सीताजीकी सिखयाँ दुलहा-दुलहिनको और उनके विवाहका वर्णन करते हुए भगवान् रामके देखकर आनन्दित होती हुई अपने भाव व्यक्त करती हैं— प्रति मिथिलाकी नारियोंके व्यंग्य-वचन सुनाते तो श्रोतागण आनन्दसे लोट-पोट होने लगते। सिख, देख ऽ कइसन अँगना में शोर भइले। एक बारकी बात है, अयोध्याके लक्ष्मणिकलाधीश अथोर भइले॥ सखि०॥ मण्डप में अचरज श्रीसीतारामशरणजी महाराजने अयोध्यासे भगवान् श्रीरामकी पहुना के परछाँही से, सियाजी भइली साँवरि। सिय के छाया परत, पहुना अब तऽ गोर भइले॥सिख०॥ बारात मिथिलामें जगज्जननी भगवती सीताकी जन्मस्थली सीतामढी ले जानेका आयोजन किया। यह बारात बडे अइसन अदला-बदली, कतहूँ, देखलीं ना सुनलीं। समारोहपूर्वक चली, जिसमें अयोध्याके तथा अन्य भइले॥ सखि०॥ जइसन आज् परिवर्तन घनघोर स्थानोंके सन्त-महन्त भी शामिल हुए। मार्गमें स्थान-दुलहा आसमानी रंग, दुलहिन रंग पियरी। स्थानपर बारातका स्वागत-सत्कार होता गया तथा दूनो मिलि के हरियर हरियर चारों ओर भइले॥ सिख०॥ ससुरालमें सरहज और सालियाँ अपने पाहनके कीर्तन-भजन-सत्संग भी चलता रहा। साथ हँसी-ठिठोली करती हैं और प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सीतामढीमें लगभग तीन दिनोंतक यह कार्यक्रम रूपमें गालियाँ भी सुनाती हैं, जो सुननेमें बड़ी मनोरम चलता रहा। कीर्तन-भजन और सत्संगका विशेष आनन्द और आकर्षक होती हैं, इन पंक्तियोंमें पूज्य मामाजीने था। रात्रिमें भगवानुके विवाहकी लीला सम्पन्न हुई। इन इसका सजीव चित्रण किया है-सभी कार्यक्रमोंमें पूज्य मामाजी अग्रणी थे। उनके पद-गायन एवं कथा-प्रवचनसे एक समा बँध जाता था। राघव जू कोहवर बिहारी, ढिठाई माफ कीजै हमारी। सभी श्रोता मुग्ध हो जाते थे। वहाँका एक अद्भुत दृश्य हम सब सिया जू की सिखयाँ सहेलियाँ, था, पर इन सबका श्रेय पूज्य मामाजीको था। कोई सरहज कोई सारी, ढिठाई माफ कीजै हमारी॥ राघव०॥ पुज्य मामाजी भागवतकी कथा भी करते, शिव-की छेंकाई यहाँ नेग किछ लागै, जल्दी से दीजै निकारी, ढिठाई माफ कीजै हमारी॥ राघव०॥ चरित भी सुनाते। भूतभावन भगवान् सदाशिव अपनी बारातमें मृगछाला लपेटे, मुण्डमालासे युक्त डमरू-लाये आप मुनि सँग नहिं त्रिशूल धारण किये अपने स्वाभाविक रूपमें थे, परंतु बनि के कमण्डलधारी, ढिठाई माफ कीजै हमारी॥ राघव०॥ विवाहके समय उन्होंने दूल्हेके रूपमें एक अलौकिक दें प्रबन्ध एक युक्ति आप कीजै, सुन्दर रूप धारण कर लिया, जिसकी सानी त्रिलोकमें बेंचहु बहिन-महतारी, ढिठाई माफ कीजै हमारी॥ राघव०॥ पग शीश नहीं थी। इसे देखकर सभी चिकत थे। मामाजीने इस सिया के झुकावहु, प्रसंगका व्यंग्यात्मक रूपमें कितना सुन्दर वर्णन किया है, बनि के प्रेम पुजारी, ढिठाई माफ कीजै हमारी॥ राघव०॥ मिथिलाकी सिखयाँ रामजीसे और भी हँसी-जिसका नमूना देखिये-मजाक करती हैं— बहु रूपिया गौरी के वर सखियो। पाहुन धनुहिया वाले पड़े आज सखियन के पाले। नहीं अइसन दूसर जादूगर सखियो॥ बहु०॥ छन भर पहिले विकट रूप देखलीं। कौसल्या के छैला औ शान्ता के भैया. शृंगी ऋषि के साले पड़े आज सखियन के पाले॥ पाहुन०॥ छन भर में भइले सुघर सखियो॥ बहु०॥ कहाँ गइले डमरु त्रिशूल मुण्डमाला। दशरथ औं गोरी कौशल्या, राजा आप भये क्यों काले, पड़े आज सिखयन के पाले॥ पाहुन०॥ (अब तो) झलके सुमाल मोती लर सखियो॥ बहु०॥

परमात्मा सर्वव्यापक है संख्या ४] फलस्वरूप गीताप्रेसद्वारा श्रीप्रियादासकृत रसबोधिनीटीका छिपि गइले जटा गङ्गधार मृगछाला। एवं विस्तृत हिन्दी व्याख्यासहित सम्पूर्ण भक्तमाल प्रकाशित (अब तो) मौर चमाचम पीताम्बर सखियो॥ बहु०॥ पुज्य मामाजीने लीलापुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्णकी हुआ। इसमें भक्तोंकी अतिशय महिमाका वर्णन है। लीलाओंका भी पदोंमें वर्णन किया है। इसकी भी एक पुज्य मामाजीके इष्टदेव थे आनन्दकन्द ब्रह्माण्डनायक मर्यादापुरुषोत्तम 'श्रीसीताराम'। अतः इनकी लीलाओंका बानगी देखिये— चिन्तन मामाजीको प्रायः विशेषरूपसे होता रहता. दूर दूर से क्यों मन मोहन अधिक अधिक तरसाते हो। इसलिये भगवान् श्रीसीतारामजीकी लीलाओंका वर्णन ज्यों ज्यों आऊँ निकट साँवरे पीछे हटते जाते हो॥ इनके पदोंमें विशेष रूपसे प्राप्त होता है। पुज्य मामाजी पहले तो सम्बन्ध बताकर बरबस खींच लिया मन को। अपने इष्टदेवके प्रति शरणागत थे। उनकी ये धारणा थी कथा ब्याज से बाध्य कर दिया सब विधि आत्म समर्पन को॥ कि परमात्म-प्रभू जहाँ, जैसे और जिस प्रकार रखेंगे; मैं भी खिँचा हुआ-सा आया सुन सुन तेरे गुन गन को। उसीमें मैं प्रसन्न हूँ। संयोगकी बात है, इनकी जीवन-देख मुग्ध-सा फँसा फन्द, अब प्रकट किया छलियापन को।। लीलाका संवरण तब हुआ, जब वे एक कथा-सत्संगसे यह कैसा परिहास? बुलाकर घर में नजर चुराते हो। वापस सडक-मार्गसे लौट रहे थे, मार्गमें इनकी गाडी ज्यों ज्यों आऊँ निकट, साँवरे! पीछे हटते जाते हो॥ एक वाहनको बचानेमें एक वृक्षसे टकराकर दुर्घटनाग्रस्त इस प्रकार भक्त-भगवन्त-गुण-कोर्तन पुज्य मामाजीके स्वभावमें था। वे चलते-फिरते, आते-जाते जब भी हो गयी। इसीमें पूज्य मामाजीका महाप्रयाण हो गया-उन्हें अपनी उपासनास्थली बक्सरमें लाया गया, जहाँ समय मिलता भगवत्सम्बन्धी पद-रचना करने लगते। इसके साथ ही प्राचीन भक्तोंकी महिमाका गुणगान वे उनके अन्तिम दर्शनके लिये भक्तोंका सैलाब उमड़ पड़ा। अपने पदों एवं नाटकोंमें करते। इनके द्वारा गोस्वामी विधिपूर्वक गंगातटपर उनका अन्तिम संस्कार सम्पन्न तुलसीदासजी, चैतन्य महाप्रभु, पीपाजी इत्यादि भक्तोंके हुआ तथा श्राद्ध आदिका कार्य पूर्ण शास्त्रविधिसे चरित पुस्तक-रूपमें लिखे गये। इसके साथ ही मीराबाईका सम्पन्न कराया गया। एक सम्पूर्ण पद्यमय चरित भी लिखा गया जो पूर्वमें आस्तिक जनोंमें पूज्य मामाजीके सत्संगका बड़ा गीताप्रेसद्वारा प्रकाशित हुआ था। वे भक्तमालकी कथा महत्त्व था, इनकी कथाएँ सुननेके लिये प्राय: लोग बडे चावसे करते थे। इन्होंने श्रीनाभादासजीकृत भक्तमालका प्रतीक्षा करते थे। निकट भविष्यमें पुज्य मामाजी-जैसे प्रकाशन गीताप्रेसद्वारा करानेका प्रयास किया। इनकी प्रेरणाके सन्तोंकी क्षति-पूर्ति सम्भव नहीं है। —— परमात्मा सर्वव्यापक है। बोध-कथा— गुरु नानकदेवजी यात्रा करते हुए कराची, बिलोचिस्तानके स्थलमार्गसे मक्का पहुँच गये थे। जब रात्रि हुई, तब वे काबाकी परिक्रमामें काबाकी ओर ही पैर करके सो रहे। सबेरे मौलवियोंने उन्हें इस प्रकार सोते देखा तो क्रोधसे लाल होकर डाँटा—'तू कौन है ? खुदाके घरकी ओर पैर पसारे पड़ा है, तुझे शरम नहीं आती ?' गुरुने आँखें खोलीं और धीरेसे कहा—'मैं तो थका-हारा मुसाफिर हूँ। जिधर खुदाका घर न हो, उधर मेरे पैर मेहरबानी करके कर दीजिये।' मौलवी लोगोंको और क्रोध आया। उनमेंसे एकने गुरु नानकका पैर पकड़कर झटकेसे एक ओर खींचा; किंतु उसने देखा कि गुरुके पैर जिधर हटाता है, काबा तो उधर ही दीख पड़ता है। अब तो वे लोग उन महान् संतके चरणोंपर गिर पड़े। गुरु नानकदेवने उन्हें समझाया—'परमात्मा सर्वव्यापक है। उसका घर किसी एक ही स्थानमें है, यह मानना अज्ञान है।'

गोपालनमें सुधारकी अनिवार्यता गो-चिन्तन— (श्रीमुल्कराजजी विरमानी)

हमारी एक हरियाणाकी ग्रामीण बहन हैं—रेनू सांगवान,

बहुत दु:खकी बात है कि हमारी देशी गायोंकी

संख्या, जो स्वतन्त्रताके समय एक करोड़ थी, आज घटकर

जिनके साक्षात्कारका वीडियो गो-प्रेमियोंमें बहुत दिखाया

लगभग १५ लाखसे भी कम हो गयी है, जबकि

गया। ये अकेली सौ गायोंकी एक गोशाला बहुत सुचारु

ढंगसे चला रही हैं। लगभग दस व्यक्तियोंको नौकरी देकर

हिन्दुस्तानकी जनसंख्या ३० करोडसे बढकर १३० करोडसे

भी अधिक हो गयी है। भावनाओंकी बात नहीं करेंगे कि उनके परिवारका पालन कर रही हैं और अपने लिये अच्छा

'गाय जिस घरमें होती है, वह घर अधिक फलता-फूलता आर्थिक लाभ भी ले रही हैं। कोई नासमझ ही उनके

विचारोंको नहीं मानेगा। एक साक्षात्कारमें उन्होंने कहा, 'गाय

है।' लेकिन ये तो निश्चित है कि गायको हमने

समझबूझकर माताकी संज्ञा दी है; क्योंकि वह हर प्रकारसे

हमपर उपकार करती है। पोषणकी उपयोगिता इसीसे सिद्ध

वे बहुत गलत बोल रही हैं, परंतु उनकी पूरी बात सुनकर

हो जाती है कि गायका दूध तो औषिध है ही, मगर इससे हमारे गोपालोंको समझना चाहिये। रेनू बहन कहती हैं कि साँड अगर अच्छी नस्लका हो और उसका पोषण ठीक हो

बननेवाले अनेकों पदार्थ भी बहुत उपयोगी हैं। गोबरसे

अनेकों वस्तुएँ बनती हैं, गोमूत्र तो प्रामाणिक रूपसे

लाभकारी है ही। मगर दु:खका विषय है कि इसका प्रचार

समाजमें बहुत ही कम हुआ है। इस परिप्रेक्ष्यमें गायको

बचानेके लिये सूझ-बूझके बिना ही प्रयत्न किये गये हैं।

जैसे सरकारी स्तरपर गौशालाओंका निर्माण हुआ है,

लेकिन उनमें गायोंकी देखभाल नहीं-के बराबर है। एक गायके पुजारी, एक महात्माके बहुत बड़े मित्र

हैं। मैं भी उन महात्माको अच्छी तरहसे जानता हूँ। उनसे एक वार्ताके दौरान मैंने पूछा कि ये महात्मा ६-७

गौशालाओंका नियन्त्रण कर रहे हैं और मैं भी इनकी कुछ गौशालाओंमें गया हूँ। इतनी बडी संख्यामें गौशालाओंका

रख-रखाव कठिन ही नहीं, अपितु असम्भव भी है। मैंने उन सज्जनसे पूछा कि महात्माजीका वास्तवमें क्या उद्देश्य

है ? उन्होंने उत्तर दिया 'गाय कसाईके पास नहीं जानी चाहिये, ये एकमात्र लक्ष्य है।' मैंने उनकी गौशालाओंमें

जानेपर देखा कि एक भी गाय जुगाली नहीं कर रही, बैठी

है और इधर-उधर ध्यान लगाकर देखती है कि कहींसे

खानेको और कुछ नहीं तो सूखा भूसा ही मिल जाय।

अब ये कहना तो कठिन है कि गाय भूखी मरे अथवा

कसाईके यहाँ मरे तो क्या ठीक है ? मेरा मत है कि गाय

अगर ठीक ढंगसे पाली जाय तो वह देशकी अर्थव्यवस्थाको

सुदृढ़ करनेमें बहुत योगदान दे सकती है। आज हमने अपनी गलत सोचके कारण गायको बोझ समझकर कसाईके स्थानपर

गाय क्रॉस करवानेके लिये उनके पास आया। रेनुजीने उससे कहा कि मेरे पास तो स्वर्ण कपिलाका साँड़ है, मैं उसको

साधारण कपिला गायके साथ मेल कराकर अपने बैलको

हाथीके समान ऊँचे-लम्बे हैं।

दूध नहीं देती, साँड़ दूध देता है'ये घोषणा ऐसे लगती है कि

तो उसी नस्लकी गायके साथ उसका मिलन (क्रॉस) करवाया

जाय तो कोई कारण नहीं कि उक्त गाय १० से १५ लीटर दुध

न दे, बल्कि वह स्वयं तो २४-२४ लीटरतक कई गायोंसे

दूध प्राप्त करती हैं। कई नस्लोंकी गाय उनके यहाँ १० से

१५ लीटर दूध देती हैं। वे अपने वक्तव्यमें कहती हैं 'बोया

पेड़ बबुल का आम कहाँ ते खाय'। इसका तात्पर्य है कि

हम नस्ल बिगाड़कर और गायकी बछिया-बछड़ेको उसके

आवश्यकतानुसार दूध न पिलाकर गोवंशके साथ बहुत बड़ा

अत्याचार कर रहे हैं। उन्होंने अपने पाले हुए साँडोंको

वीडियोपर दिखाया कि वे कितने हृष्ट-पुष्ट हैं, कई साँड तो

उनका कहना है कि एक व्यक्ति अपनी कपिला नस्लकी

खराब नहीं करना चाहती। उनके सारे गाय-बैल तो दर्शनीय हैं

ही, छोटे बछड़े-बिछया भी हृष्ट-पुष्ट हैं; क्योंकि वे उन्हें

माँका पूरा-का-पूरा दूध पिलानेमें कोई संकोच नहीं करतीं।

वे कहती हैं कि किसान अगर मेहनत नहीं करेगा तो कभी नहीं पनप सकता। वह स्वयं ११ बजे सोकर प्रात:

३ बजे उठकर काममें लग जाती हैं। गौ-पालकोंसे मैं विनम्र प्रार्थना करना चाहता हूँ कि वह इस लेखपर विचार

करें ताकि गाय समाजपर आजकी स्थितिके अनुसार बोझ उमाने क्षामाना जाइके कि उद्देन समहास्कृडे://dsc.gg/dha ने तक्ष कर MADE WITH EDVE BY Avinash/Sha संख्या ४] मृतिपूजा मूतिपूजा (ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीशरणानन्दजी महाराज) कोई भी आस्तिक भक्त मूर्तिकी पूजा नहीं करता, मुझे भगवान् नहीं मिल सकते।' यह मानना भगवान्की वह तो मूर्तिमें अपने इष्टदेवकी पूजा करता है, इसलिये महिमाको न जानकर उनकी कृपाका अनादर करना है; जबतक अपना भास रहे, तबतक अपने इष्टदेवकी पूजा क्योंकि भगवान् अपनी कृपासे प्रेरित होकर ही साधकको करते रहना चाहिये। मिलते हैं। उनकी कृपा प्राप्त करनेका एकमात्र उपाय जब मनुष्य किसी पुस्तक या चिट्ठीको पढ़ता है, उनसे मिलनेकी उत्कण्ठा, उनके प्रेमकी अतिशय लालसा तब कागज या स्याहीको नहीं पढ़ता; किंतु उसमें लिखे ही है। धन, बल, सुन्दरता या किसी प्रकारके साधनके हुए संकेतके द्वारा उसके अर्थको पढ़ता है। कागज, बलसे भगवान् नहीं मिल सकते। साधन उनका या उनके स्याही और अक्षर तो उस अर्थको समझनेके लिये प्रेमका मूल्य नहीं है। साधन तो अपने बनाये हुए चिह्नमात्र हैं। अर्थ तो पढ़नेवालेकी बुद्धिमें परम्परासे दोषोंको मिटानेके लिये है, जो भगवान्द्वारा दी हुई विद्यमान है। इसी प्रकार भक्त मूर्तिको संकेत बनाकर योग्यताका सदुपयोग करनेमात्रसे होता है। अपने इष्टकी पूजा करता है, मूर्तिकी पूजा नहीं करता। मनुष्य चाहे कैसा ही दीन-हीन मिलन क्यों न हो, इसी तरह गीता आदिमें समझ लेना चाहिये। कितना ही बड़ा पातकी क्यों न हो, वह जैसा और जिस पढनेवाला उसे भगवानुकी वाणी समझकर पढता है और परिस्थितिमें है, उसीमें यदि विश्वासपूर्वक भगवानुका हो उसी भावसे उसका आदर करता है। जाय और उनको पानेके लिये व्याकुल हो उठे, श्रीतुलसीदासजी राम-नामका जप करते थे तो भगवान्के वियोगमें उसे किसी प्रकार चैन न पड़े, तो उनके भावमें परमेश्वर और उनके पूर्ण ऐश्वर्य, माधुर्य भगवान् अवश्य मिल जाते हैं। आदि समस्त गुण नाममें भरे हुए थे, वे राम और ब्रह्म भगवान् उसी पतितको मिलते हैं, जो पतित नहीं दोनोंसे नामको बढ़कर मानते थे। उनके विषयमें कोई भी रहना चाहता अर्थात् पुनः पाप नहीं करना चाहता। ऐसे यह नहीं कह सकता कि वे परमेश्वरका स्मरण नहीं कर साधकको भगवान् परम पवित्र बनाकर अपना लेते हैं, रहे थे, शब्दमात्रका जप कर रहे थे। इससे साधकको परंतु जिसको अपने पापोंका पश्चात्ताप नहीं है, जो यह समझ लेना चाहिये कि कोई भी साधन नीचे दर्जेका उनको छोड़ना नहीं चाहता, उसे भगवान् नहीं मिलते। नहीं है। वैसे ही जिसको अपने गुणोंका अभिमान होता है, उसे जिस साधकको जो साधन प्रिय हो, अपनी भी नहीं मिलते। साथ ही यह बात भी है कि जबतक योग्यताके अनुसार जिस साधनको वह सुगमतासे कर साधकके मनमें किसी दूसरी वस्तुकी चाह रहती है, सके, जिसमें उसका पूर्ण विश्वास हो, किसी प्रकारका तबतक भगवान् नहीं मिलते। किंतु उसकी चाहके भी सन्देह न रहे, वही साधन उसके लिये सर्वश्रेष्ठ है। अनुरूप वस्तु और परिस्थिति, यदि उसके पतनमें हेतु न किसी प्रकारका सन्देह न रहनेसे साधककी बुद्धि हो तो प्रदान कर देते हैं। साधनमें लग जाती है। प्रेम होनेसे हृदय द्रवित हो जाता भगवान्की यह शर्त है कि मुझसे मिलनेके बाद है। विश्वास होनेके कारण मनमें किसी प्रकारका अन्य किसीसे साधक नहीं मिल सकता, परंतु ऐसा विकल्प नहीं उठता। उसमें मन लग जाता है। अत: साधक कोई बिरला ही होता है, जो हर समय एकमात्र साधनमें कोई छोटा-बड़ा नहीं है। उन्हींसे मिलनेके लिये इच्छुक रहता हो, जिसके समस्त किसी भी साधकको यह नहीं समझना चाहिये कि काम पूरे हो चुके हों, जिसके मनमें अन्य किसी प्रकारके 'मुझे अमुक प्रकारकी योग्यता प्राप्त नहीं है, इसलिये संयोगकी चाह नहीं रही हो।

सुभाषित-त्रिवेणी

परमात्माका स्वरूप [Form of God]

सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्। सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति॥

वह सब ओर हाथ-पैरवाला, सब ओर नेत्र, सिर और मुखवाला तथा सब ओर कानवाला है; क्योंकि वह संसारमें सबको व्याप्त करके स्थित है।

It has hands and feet on all sides, eyes, head and mouth in all directions, and ears all-

round; for it stands pervading all in the universe. सर्वेन्द्रियविवर्जितम्।

सर्वेन्द्रियगुणाभासं असक्तं सर्वभृच्यैव निर्गुणं गुणभोक्त च॥

वह सम्पूर्ण इन्द्रियोंके विषयोंको जाननेवाला है,

परन्तु वास्तवमें सब इन्द्रियोंसे रहित है तथा आसक्ति-रहित होनेपर भी सबका धारण-पोषण करनेवाला और निर्गुण होनेपर भी गुणोंको भोगनेवाला है।

Though perceiving all sense-objects, it is really speaking devoid of all senses. Nay, though unattached, it is the sustainer of all nonetheless;

and though attributeless, it is the enjoyer of gunas, the three modes of Prakrti. बहिरन्तश्च भूतानामचरं सूक्ष्मत्वात्तद्विज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत्॥

वह चराचर सब भूतोंके बाहर-भीतर परिपूर्ण है और चर-अचर भी वहीं है। और वह सूक्ष्म होनेसे अविज्ञेय है तथा अति समीपमें और दूरमें भी स्थित वही है। It exists without and within all beings, and

constitutes the animate and inanimate creation as well. And by reason of its subtlety, it is incompre-

hensible; it is close at hand and stands afar too. अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम्।

भूतभर्त च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च॥

वह परमात्मा विभागरहित एक रूपसे आकाशके सदृश

परिपूर्ण होनेपर भी चराचर सम्पूर्ण भूतोंमें विभक्त-सा स्थित प्रतीत होता है तथा वह जाननेयोग्य परमात्मा विष्णुरूपसे भूतोंको धारण-पोषण करनेवाला और रुद्ररूपसे संहार करने-

वाला तथा ब्रह्मारूपसे सबको उत्पन्न करनेवाला है। Though integral like space in its undivided aspect, it appears divided as it were in all animate and inanimate beings. And that Godhead,

which is the only object worth knowing, is the sustainer of being (as Visnu), the destroyer (as Rudra) and the creator of all (as Brahma).

ज्योतिषामपि

वह परब्रह्म ज्योतियोंका भी ज्योति एवं मायासे अत्यन्त परे कहा जाता है। वह परमात्मा बोधस्वरूप, जाननेके योग्य एवं तत्त्वज्ञानसे प्राप्त करनेयोग्य है और

सबके हृदयमें विशेषरूपसे स्थित है।

तज्ज्योतिस्तमसः

ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम्॥

That supreme Brahma is said to be the light

of all lights and entirely beyond Maya. That

परमच्यते।

godhead is knowledge itself, worth knowing, and worth attaining through real wisdom, and is particularly abiding in hearts of all. इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं ज्ञेयं चोक्तं समासतः।

एतद्विज्ञाय मद्भावायोपपद्यते॥ इस प्रकार क्षेत्र तथा ज्ञान और जाननेयोग्य परमात्माका स्वरूप संक्षेपसे कहा गया। मेरा भक्त

इसको तत्त्वसे जानकर मेरे स्वरूपको प्राप्त होता है। Thus the truth of the Ksetra and knowledge,

as well as of the object worth knowing, God has been briefly discussed; knowing this in reality. My devotee enters into My being.

[श्रीमद्भगवद्गीता १३। १३ — १८]

व्रतोत्सव-पर्व

व्रतोत्सव-पर्व

सं० २०७९, शक १९४४, सन् २०२२, सूर्य उत्तरायण, ग्रीष्म-ऋतु, ज्येष्ठ-कृष्णपक्ष

तिथि	वार	नक्षत्र	दिनांक	मूल, भद्रा, पंचक तथा व्रत-पर्वादि
प्रतिपदा दिनमें ७। ३८ बजेतक	मंगल	अनुराधा दिनमें १२।२४ बजेतक	१७ मई	मूल दिनमें १२। २४ बजेसे।
तृतीया रात्रिमें २।५३ बजेतक	बुध	ज्येष्ठा ,, १०।५० बजेतक	१८ "	भद्रा दिनमें ४। ६ बजेसे रात्रिमें २। ५३ बजेतक, ध

२० "

२१ "

२२ ,,

दिनमें १०।५० बजेसे।

दिनमें ३।५६ बजे। श्रीशीतलाष्ट्रमीवृत ।

रात्रिमें १।५८ बजेसे।

सोमवती अमावस्या

रम्भावत ।

प्रदोषव्रत, मूल रात्रिमें ३। २० बजेतक।

मिथुनराशि रात्रिमें १०।१२ बजेसे।

मुल रात्रिमें ७।० बजेसे।

सिंहराशि रात्रिमें ९।१ बजेसे।

भद्रा दिनमें ३।१२ बजेतक।

भद्रा दिनमें १।१८ बजेसे रात्रिमें १।४६ बजेतक।

वृषराशि दिनमें ११। १६ बजेसे, वटसावित्रीव्रत।

मुल दिनमें ९। १० बजेतक। मकरराशि दिनमें १।७ बजेसे।

संकष्टी श्रीगणेशचतुर्थीवृत, चन्द्रोदय रात्रिमें १०। २३ बजे,

भद्रा रात्रिमें ७। ४२ बजेसे, सायन मिथुनराशिका सूर्य दिनमें १०। ३० बजे।

भद्रा प्रातः ६।४० बजेतक, कुंभराशि दिनमें ३।५६ बजेसे, पंचकारम्भ

भद्रा दिनमें १।२४ बजेतक, रोहिणीका सूर्य रात्रिमें ७।२९ बजे, मूल

मेषराशि रात्रिमें २। २३ बजेसे, अचला एकादशीव्रत (सबका)।

मूल, भद्रा, पंचक तथा व्रत-पर्वादि

भद्रा दिनमें १०। २२ बजेसे रात्रिमें ११। २० बजेतक, **कर्कराशि**

कन्याराशि प्रात: ५ । ४७ बजेसे, मृगशिराका सूर्य रात्रिमें ६ । ४८ बजेसे ।

भद्रा दिनमें १। ५१ बजेसे रात्रिमें १। १६ बजेतक, तुलाराशि

दिनमें १०। २ बजेसे, वैनायकी श्रीगणेशचतुर्थीव्रत।

भद्रा रात्रिमें ३।३ बजेसे, मूल रात्रिमें १०।३३ बजेतक।

भद्रा रात्रिमें १।५५ बजेसे, **मीनराशि** रात्रिमें ८।९ बजेसे।

चतुर्थी ,, १२।२४ बजेतक | गुरु | मूल । ,, ९।१० बजेतक | १९),

संख्या ४]

पंचमी 🗤 १०।० बजेतक | शुक्र | पू०षा० 🗤 ७। ३१ बजेतक |

उ०षा० प्रात: ५ । ५५ बजेतक

षष्ठी 🗤 ७। ४२ बजेतक 🛮 शनि 🖡 सप्तमी सायं ५।३८ बजेतक रिव

धनिष्ठा रात्रिमें ३।२० बजेतक

अष्टमी दिनमें ३।५२ बजेतक | सोम | शतभिषा <table-cell-rows> २। ३१ बजेतक २३ " २४ "

नवमी 🕠 २।२६ बजेतक | मंगल | पु०भा० 🕠 २।० बजेतक

दशमी 🔑 १ । २४ बजेतक बिुध उ०भा० 🗤 १।५८ बजेतक २५ ,, २६ ,,

एकादशी 🗤 १२।५२ बजेतक 🛮 गुरु रेवती <table-cell-rows> २। २३ बजेतक अश्वनी ,, ३। २० बजेतक

द्वादशी ,, १२।४९ बजेतक शुक्र त्रयोदशी 🔊 १ । १८ बजेतक 🛮 शनि 🖡 भरणी रात्रिशेष ४।४७ बजेतक

२७ ,, २८ " कृत्तिका अहोरात्र कृत्तिका प्रात: ६।४० बजेतक

चतुर्थी ,, २।१५ बजेतक रिव २९ ,, अमावस्या 🔊 ३ । ३९ बजेतक 🛮 सोम 🖡 **ξο** ,,

सं० २०७९, शक १९४४, सन् २०२२, सूर्य उत्तरायण, ग्रीष्म-ऋतु, ज्येष्ठ-शुक्लपक्ष तिथि दिनांक वार नक्षत्र

प्रतिपदा सायं ५।२४ बजेतक मंगल रोहिणी दिनमें ८।५६ बजेतक ३१ मई द्वितीया रात्रिमें ७।२२ बजेतक बुध मृगशिरा "११।२८ बजेतक १ जून २ ,,

तृतीया 🗤 ९ । २५ बजेतक आर्द्रा " २।६ बजेतक गुरु चतुर्थी 🕖 ११। २० बजेतक पुनर्वसु सायं ४। ४१ बजेतक शुक्र

पंचमी 🔑 १२। ५८ बजेतक 🛮 शनि पुष्य रात्रिमें ,, ७।० बजेतक रवि आश्लेषा ,, ९।१ बजेतक

सोम

मंगल

बुध

गुरु

शुक्र

षष्ठी 🕖 २ । १४ बजेतक

सप्तमी <table-cell-rows> ३ । ३ बजेतक

अष्टमी <table-cell-rows> ३। २१ बजेतक

नवमी 🕠 ३। ७ बजेतक 🛭 दशमी 🕠 २। २५ बजेतक एकादशी " १।१६ बजेतक

चतुर्दशी 🔑 ७ । ३९ बजेतक

द्वादशी ^{,,} ११।४२ बजेतक| शनि| स्वाती ,, ११।८ बजेतक त्रयोदशी 🔊 ९ । ४८ बजेतक 🛮 रवि 🛚 पूर्णिमा सायं ५ । १९ बजेतक| मंगल| ज्येष्ठा 🕠 ७ । ६ बजेतक

सोम

विशाखा ,, १०।०१ बजेतक अनुराधा 🗤 ८ । ३९ बजेतक

मघा "१०।३३ बजेतक

पु०फा 🦙 ११। ३८ बजेतक

उ०फा० ,, १२। १२ बजेतक

हस्त 🕠 १२।१६ बजेतक

चित्रा "१५।१३ बजेतक

११ ,,

१२ " १३ " १४ ,,

3 ,,

8 ,,

ξ,,

८ ,,

१० "

श्रीगंगादशहरा।

दिनमें १२। ४ बजेसे, निर्जला (भीमसेनी) एकादशीव्रत (सबका)।

वृश्चिकराशि सायं ४। १७ बजेसे, प्रदोषव्रत। भद्रा रात्रिमें ७। ३९ बजेसे, व्रत-पूर्णिमा, मूल रात्रिमें ८। ३९ बजेसे। भद्रा प्रातः ६। २८ बजेतक, धनुराशि रात्रिमें ७। ६ बजेसे, पूर्णिमा।

र्गुराशि

कृपानुभूति श्रीदुर्गासप्तशतीके अनुष्ठानसे माँके दिव्य दर्शन यह घटना सन् १९७० ई० के नवरात्रकी है, जब दरवाजा दोनों बन्द कर लिये और धुआँ निकलनेके लिये खिडिकयाँ खोलकर तन्मयतापूर्वक हवनके लिये मैं श्रम-मंत्रालय (भारत-सरकार)-द्वारा संचालित अभ्रक खान श्रमहितकारी कोष भीलवाड़ामें उपवैद्यके पदपर प्रस्तुत हुआ। यह रात्रि ११-१२ बजेकी घटना है। जिस समय मैं आहुति दे रहा था, तभी नीचे एवं

ऊपरके दोनों द्वारोंके किवाड़ अपने-आप खुल गये

नियुक्त हुआ था। घरवालोंसे दूर रहकर प्रथम बार पृथक्

नवरात्र-पूजन करनेका कार्यक्रम बनाया। इससे पूर्व पूजन की पारिवारिक परम्परानुसार छोटे-बडे हम सभी और पाटेके ऊपर एक षोडशी कन्या बैठी हुई दीख लोग श्रद्धापूर्वक सम्मिलित रूपसे दुर्गा माँकी जोत लेते पड़ी, जो मन्द-मन्द मुसकुरा रही थी। उसके शरीरपर लाल वस्त्र चमक रहे थे, और वह मुझे देख रही

और एक बार भोजन करते रहे थे। में दुर्गापाठमें अभी पूर्ण पारंगत नहीं हुआ था, अत: दुर्गा-उपासक पिताजीने निर्देश दिया कि अपने

शासकीय कार्यकालके अतिरिक्त सुबह या अपराह्नमें चण्डीपाठ (साधारण) एवं आपदुद्धारक बटुकपाठ-सहित यथाशक्ति 'ॐ हीं नमः' मंत्रका जप करना है।

हो सके तो अष्टमीकी रात्रिको इसी मंत्रकी एक मालाका हवन करना है।

में अपने कार्यस्थल भाद ग्राममें एक वैश्यबन्धुके मकानमें अकेला रहता था। कार्यक्रमानुसार प्रात: शौच-स्नानादि कार्योंसे निवृत्त होकर पाटेपर स्थापित माँके

चित्र एवं कलशकी पूजा करके बोये जँवारोंको सींचता और जोत देखता था। अपना पूजाकार्य समाप्तकर तथा चाय-दूध-फलाहार लेकर कार्यस्थलपर पहुँच जाता

था। अपराह्न घर आनेपर पुनः स्नानकर पाठ एवं जप पूर्ण कर लेता था। सायंकाल भोजनके पश्चात् पुनः यथाशक्ति 'ॐ हीं नमः' का जपकर सो जाता था।

आठ दिनतक यह कार्य अनवरत सुगमतापूर्वक चला। अष्टमीकी रात्रिको कुछ हवन-सामग्री एवं घी लेकर

आहृति देनेकी तैयारी की।

हवनमें बैठनेसे पूर्व जीनेका दरवाजा एवं कमरेका

पीछे देखा तो कमरेके और जीनेके दरवाजे पूरी

तरहसे खुले हुए थे। परिवारके सब लोग सोये हुए थे। किसीको इस घटनाका ज्ञान नहीं हुआ—मैं इस बातसे अत्यन्त विस्मित होकर विश्राम करने लगा।

दो दिन बाद दशहरेकी छुट्टी थी, उसमें मैं घर चला

आया। मैंने पिताजीको सम्पूर्ण घटनासे अवगत कराया तो वे हँसने लगे और बोले—'धन्य है! बेटा! तूने तो पहली बारमें ही दर्शन कर लिया। माँ अपने छोटे और अज्ञानी बेटेपर अधिक ध्यान देती हैं। तू परीक्षामें

थी। मैं भी अपलक होकर उसे देखता रहा, मन्त्र

आहृति रुक गयी। कुछ क्षणोंके बाद वह अदृश्य हो

गयी, मैं डर-सा गया था। शरीर पसीनेसे तर-बतर हो गया। जैसे-तैसे आहुतिकार्य सम्पूर्णकर जब मैंने

तो उत्तीर्ण हो गया।' जीवनके द्वितीय पड़ावका वह अलौकिक दृश्य, भगवतीके श्रीविग्रहका प्रकाश एवं उनकी सुन्दरताकी छटाका स्मरणकर मैं आज भी रोमांचित एवं मुग्ध हो

जाता हुँ। 'बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति' —सुरेशचन्द मिश्र

सर्वमङ्गलमङ्गलये शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।। हे नारायणि! तुम सब प्रकारका मंगल प्रदान करनेवाली मंगलमयी हो। कल्यादायिनी शिवा हो। सब पुरुषार्थींको

पढो, समझो और करो संख्या ४] पढ़ो, समझो और करो २-एक बार कम्पनीके कार्यसे जलगाँवसे कलकत्ता (१) तेजपुर होते हुए एक टी गार्डेनका निरीक्षण करने उत्तरी सत्साहित्यके पठनसे जीवन-निर्माण आसाम जाना था, साथमें एक आई०आई०टी०से एम०टेक० मैं कक्षा ६-७ में था, थोडा-सा पैसा कहीं मिलता किये इंजीनियर तथा एक सहायक था। कलकत्तासे तेजपुर तो पैदल चलकर रेलवे-स्टेशनसे गीताप्रेसकी सस्ती पुस्तकें जाते समय रात्रिमें १२ बजे मेरी डीलक्स बस फरक्का खरीद लाता और पूरा पढ़ डालता, इसी क्रममें मैंने 'भाईजी' पहुँची थी; मैं खिड़कीके किनारे विद्युत् परियोजना क्षेत्र लिखित 'तुलसीदल', गोयन्दकाजीकी 'तत्त्व-चिन्तामणि', देख रहा था, कि अन्त:प्रेरणासे मैंने रामरक्षास्तोत्रका स्मरण पढी तथा तभीसे कल्याणका नियमित ग्राहक बन गया। किया और अन्तिम श्लोक 'राम रामेति रामेति रमे रामे मुझे लेख पढ़ने एवं पुस्तकोंके संग्रहकी लत-सी पड़ गयी, मनोरमे। सहस्त्रनाम तत्तुल्यं राम नाम वरानने॥' आते परिणाम यह हुआ कि सामान्य कार्य करते हुए निरन्तर ही श्रद्धासे नेत्र उन्मीलित करके सिर झुकाया ही था, भगवन्नाम विशेषकर 'हरे रामः" हरे हरे 'का स्मरणात्मक तभी दायीं तरफके चक्के एक गहरे गड्ढेमें गये तथा उपांशु जप श्वास-प्रश्वासद्वारा होने लगा। शास्त्रानुशीलनका गाड़ीकी तीव्र गति होनेके कारण निकल भी गये, परंतु प्रत्यक्ष परिणाम यह रहा कि इसे प्रमाण मानकर कार्य-गाड़ीमें तीव्र झटका लगनेसे दो इंचका खिड़की उठानेवाला अकार्य (उचित-अनुचित)-का निर्णय एवं कर्तव्यानुपालनमें मोटा राड पूरे वेगसे मेरी दायीं आँखमें पूरा घुस गया। मेरा दृढ़ निश्चय बना रहा। असह्य पीड़ाके साथ पूरा गाल-गला आदि अश्रुओंसे भीग नामस्मरण तथा शास्त्रानुशीलनके अद्भुत प्रभावके गया, भयाक्रान्त हुआ कि पुरे जन्म अन्धा रहना पडेगा, बहुतसे अवसर मेरे जीवनमें आये, प्रत्येक घटनाके बाद बगलके इंजीनियर और सहायकको बतानेकी हिम्मत नहीं विश्वास बढ़ता गया। यहाँ अबतक कभी, किसीके लिये हुई, थोड़ी देर बाद काँपते हाथोंसे आँखको टटोला तो प्रकट न की गयी, कतिपय घटनाओंका स्मरण 'कल्याण' दर्दके बीच सब ठीक मिला। के पाठकोंके हितार्थ विज्ञापित किया जा रहा है— ३-ए०आर०एस० तथा तीन बार असिस्टैण्ट प्रोफेसर १-घटना १९८२ ई० की है, मैंने हाईस्कूलकी परीक्षा पदपर चयनके बाद भी ज्वाइन न कर सका। मेरठमें दी, मेरी गणना गाँव एवं स्कूलके अच्छे छात्रोंमें की जाती साधारण नौकरी शुरू की। पत्नी गर्भवती थी, दो थी, परंतु समाचार-पत्रोंमें रिजल्ट आया, तो मैं उत्तीर्ण नहीं परीक्षणोंमें सब कुछ सामान्य होते हुए भी अन्तिम था, फिर क्या था; घर-समाज सर्वत्र उलाहनोंकी बौछार परीक्षणमें डाक्टरोंने पत्नीके बच्चेदानीकी पानीकी थैलीके होने लगी, मैंने सब कुछ सहन किया और बढ़ा दिया 'हरे सूखने/फटनेकी बात तथा जच्चा-बच्चाके जानका खतरा रामः हरे हरे का स्मरण। उस समय अंकतालिका बहुत बताकर घबड्वा दिया, अपने गुरुके सुझावसे सन्तानगोपाल विलम्बसे आती थी, एक दिन पिताजी शहरसे सायकिलद्वारा मन्त्र तथा नारायण-कवचका पाठ करने लगा, समयपर सीधे वहाँ पहुँचे, जहाँ मैं गाँवके बुजुर्गोंके मध्य घोर दुपहरीमें पूर्ण स्वस्थ बच्चा घरपर बिना ऑपरेशन पैदा हुआ। भैंस चरा रहा था। पहुँचते ही उन्होंने सबके पैर छूनेको ४-नौकरीमें एक बार सलेमपुरमें ट्रान्सफार्मर जल कहा, मैंने बिना कुछ समझे और प्रतिवादके आदेशका जानेके कारण गर्मीसे राहतके लिये 'गण्डकी-तट' पर जा अनुपालन किया। तब उन्होंने बताया कि 'पूरे विद्यालयमें रहा था, जैसे ही स्कूटर स्टेशनके सामने हनुमान्जीकी तुम्हारेसहित दो लोग ही प्रथम श्रेणीमें पास हुए हैं, मैंने एक मूर्तिके सामनेसे गुजरा, संस्कारवश ढाई-तीन वर्षका ईश्वरको धन्यवाद दिया, बादमें यह क्रम एम०एस-सी०, एक बच्चा बोला—'जै बजरंग बली', स्कूटरसे चलते हुए पी-एच०डी० तक बना रहा।'

भाग ९६ ************************* मैंने भी शब्द दुहराये, तबतक १०-१५ लोग चिल्लाये, मेरे मानवताके उच्च प्रतीक थे। संवत् १८६९ की बात है, कुछ समझते-समझते २५-३० सेमी मोटी एक शीशमकी गुजरातमें महान् दुष्काल पड़ा। अन्नके अभावसे बहुत-से टहनी हम लोगोंके ऊपर गिरी। हुआ यह कि बिजली लोग मर गये। शेष लोग किसी प्रकार जीवन बचानेके विभागके लोग डालियाँ काट रहे थे, इसे बजरंगबलीका लिये दूसरे प्रान्तोंमें मजदूरी करने निकल पड़े। घेला भक्त भी सौराष्ट्रसे सुरतकी ओर चले। जाते-जाते मार्गमें उनको चमत्कार कहें या संयोग। पत्तियों तथा सहायक टहनियोंका हिस्सा नीचे गिरा, और मोटा तना मेरे पीछे पत्नीके आगे एक सोनेका हार दीख पड़ा। उनकी स्त्री पीछे-पीछे आ बीचमें बैठे बच्चेकी पीठपर रगड़कर स्कूटरकी सीटपर रही थी। घेला भक्तके मनमें तो उस हारको लेनेका संकल्प टिक गया, बच्चा बेहोश हो गया, राजकीय चिकित्सालय भी न हुआ, पर उनके मनमें यह विचार उठा कि पीछे ले गया, सम्पूर्ण परीक्षण हुआ, बच्चा पूर्णतः स्वस्थ था। पत्नी आ रही है, वह कदाचित् दुष्कालरूपी आपत्काल ५-सन् २००५ ई० की बात है, निवास-अधिकारी और स्त्री-स्वभावके वश उसे लेनेका संकल्प करे, तो यह हॉस्टेल से दूर नये प्लॉटपर मैं पड़ोससे तार खींचकर ठीक न होगा। यह सोचकर उस भक्तने चलते-चलते सब्जियोंकी सिंचाई कर रहा था, प्लॉटमें पानी भरा था, सुवर्णके हारको पैरसे धूल इकट्ठी करके ढक दिया। उनकी एकाएक डिलीवरी पाइप निकल जानेके कारण एक हाथमें पत्नी दूरसे ही यह तमाशा देख रही थी। पास जाकर पाइप, दूसरे हाथसे टुल्लूको ज्यों ही मैंने पकड़ा, एक नंगे पतिसे उस विषयमें पूछ-ताछ करनेपर उसके पतिने कहा— तारसे सम्पर्कमें आनेके कारण उसमें प्रवाहित विद्युत्से मैं 'तेरे मनमें परद्रव्य लेनेका संकल्प न हो, इसलिये मैंने इस स्वर्णके हारको मिट्टीसे ढक दिया।' टुल्लूसे चिपककर निश्चेष्ट हो गया, आवाज भी जाती रही, बचनेका कोई प्रयास सफल नहीं हो पा रहा था, यह सुनकर पत्नीने कहा—'स्वामी! परधन तो विष्ठाके समान माना गया है; आपने उसको अपने पैरसे अकेलेमें तथा 'अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम्। विष्णुपादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते॥' का भाव स्पर्श किया है, इसलिये अपना पैर धोकर शुद्ध करें।' मनमें आया। मन चीत्कारा कि क्या मुझ नियमित विष्णु-आगे जाकर एक वृक्षके नीचे दोनों विश्राम करनेके लिये पादोदकका सेवन करनेवालेकी अकालमृत्यु सम्भव है ? न बैठे। इतनेमें एक घोडेपर सवार होकर कोई भलेमानस जाने कहाँसे शक्ति आयी, पूरे जोरसे मोटरसे चिपके हाथको वहाँ आ पहुँचे और उनसे पूछा कि, 'क्या तुमलोगोंने खींचने लगा, तभी मोटरके बार-बार हिलनेसे नंगा तार रास्तेमें कोई सोनेका हार देखा है ?' घेला भक्तने कहा— क्षणभरके लिये अलग हुआ, मैं छिटककर दूर गिरा, भगवानुको 'हाँ, मैंने उसे धूलसे ढक दिया है।' उस भलेमानसके धन्यवाद दिया और यह रहस्य गोपनीय रखा, जो आज आग्रह करनेपर भक्तने जाकर उस स्थानको दिखला प्रथम बार प्रकट हो रहा है। अन्य घटनाओंको विस्तार-दिया। अपनी खोयी वस्तु पाकर वे भलेमानस बहुत प्रसन्न भयसे देना समीचीन नहीं प्रतीत होता है। कहना केवल हुए और साथ ही भक्तकी ईमानदारीपर चिकत हो उठे। इतना ही है कि सत्साहित्यसे अच्छे संस्कारोंका निर्माण उन्होंने पूछा कि, 'तुम कौन हो, कहाँ जा रहे हो?' जब होता है और इससे जीवनकी राह आसान हो जाती है। भक्तने अपनी कथा कह सुनायी, तब उन्होंने फिर पूछा— 'ऐसे संकटमें पड़कर भी रास्तेमें पड़े हुए सोनेके हारको —दिनेशचन्द्र उपाध्याय तुमने क्यों नहीं उठाया?' भक्तने उत्तर दिया कि 'हमारे (२)

परायी वस्तुका लोभ न करो गुरु श्रीस्वामिनारायण महाप्रभुकी यह आज्ञा है कि परायी सौराष्ट्रमें लोया गाँवके कोली जातिके एक भक्त

घेला। निम्न समझे जानेवाले कुलमें उत्पन्न होनेपर भी वे

वस्तुपर कभी जी न ललचाओ। चाहे कैसा ही संकट क्यों महाप्रभु श्रीस्वामिनारायणके शिष्य थे। उनका नाम था न हो, परायी वस्तुको स्पर्श न करो।'

धन्य है गरीब भक्तकी ईमानदारी और निर्लोभ

पढो, समझो और करो संख्या ४] वृत्तिको। समाजमें इस प्रकारकी ईमानदारी और परायी हुए थोड़े ही दिन हुए थे। जबिक पंडितजीका घर बन वस्तुके प्रति लोभहीनताकी प्रवृत्तिमें वृद्धि हो तो कहीं रहा था एवं उन्हें रकमकी आवश्यकता थी। धन्य हैं दु:ख देखनेको भी न मिले। - शास्त्री हरिबलदास पंडितजी-पंडितानीजी एवं उनकी ईमानदारी। ऐसे लोगोंके सुकर्मींपर ही धरती टिकी है। —शारदा सिंघानिया क्रोध महान् शत्रु है स्वामी तोतापुरीजी और श्रीरामकृष्ण परमहंस एक निर्भीक पत्रकारका धर्म बार वेदान्तकी चर्चा कर रहे थे। बीसवीं शताब्दीके पत्रकारोंमें बाबू रामानन्द चटर्जीका तभी चिलमके लिये धूनीमें-से आग लेने बगीचेका बड़ा नाम था। अहिन्दीभाषी होते हुए भी उन्होंने कोलकातासे १९२६ में हिन्दीके दैनिक अखबार 'विशाल भारत' का एक नौकर आया। तोतापुरी उसपर बिगड़कर चिमटेका प्रहार करने ही प्रकाशन आरम्भ किया था। स्वतन्त्रता और निष्पक्षताके जा रहे थे कि रामकृष्ण परमहंस हँस पड़े—छि:! छि:! लिये यह अखबार बहुत प्रसिद्ध हुआ। महात्मा गाँधीका कैसी शर्मकी बात है यह! चटर्जी साहबसे आत्मीय सम्बन्ध था। एक बार कोलकातामें तोतापुरी चौंके तो परमहंसदेव बोले, 'मैं आपके कांग्रेस अधिवेशनके दौरान महात्मा गाँधीने उन्हें दुरसे ही ब्रह्मज्ञानकी गम्भीरता देख रहा था। आप अभी कह रहे थे देख लिया। किसी व्यक्तिको उनके पास भेजा कि उन्हें कि ब्रह्म ही सत्य है और सारा जगत् उसीका रूप है, पर मंचपर ले आओ। चटर्जी बाबूने उत्तर दिया, 'मैं अपने क्षणभरमें आप सब भूल गये और उस आदमीको मारने साथियोंके साथ पत्रकारोंकी गैलरीमें बैठनेमें ही अपना दौड पडे।' गौरव मानता हूँ।' अंग्रेजी सरकारकी कोपदृष्टिके कारण तोतापुरीजीने अपनी गलती महसूस की और बोले— 'विशाल भारत' में लगातार घाटा होता रहा, परंतु वह 'सचमुच मैं तमोगुणके वशीभूत हो गया था। क्रोध वस्तुत: अखबार बन्द नहीं हुआ। विश्वगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुरकी महान् शत्रु है। अब उसे कभी अपने पास न फटकने कहानियाँ और कविताएँ प्रत्येक अंकमें छपती थीं। दुँगा।' —कृष्णदत्त भट्ट बाबू रामानन्द चटर्जी एक बार काशी-भ्रमणपर आये थे, यहाँ गंगाजीमें स्नान कर रहे थे। तभी पैर फिसल गया (8) ईमानदारीका उदाहरण और गोता खाने लगे। एक युवकने गंगामें कृदकर उन्हें बचा लिया। बाबूजीने कृतज्ञता प्रकट की। उसे अपना नाम आजके घोर कलियुगमें भी ईमानदारीकी मिसाल पेश करती हूँ। हमारे घरके पंडितजी श्रीप्रभुदयालजी और पता दे दिया और कहा कि अगर कभी कोलकाता (बिसरावाले)-को मुझे चार हजार रुपये देने थे। मैंने आना हुआ तो मुझसे जरूर मिलना और मेरे लायक सेवा अपने पासकी रुपयेकी दो गडुडी, एक दस हजारकी, हो तो वह भी जरूर बताना। इस घटनाके एक वर्ष पश्चात् एक पाँच हजारकी, में एक गड्डीमें से जो कि दस वह युवक कोलकाता पहुँचा और तलाश करके चटर्जी हजारकी थी, एक हजार रुपये निकालकर चार हजारके साहबसे मिला। अनौपचारिक वार्तालापके बाद उसने अपनी भरोसे नौ हजार रुपये पंडितजीको दे दिये। घर जाकर एक स्वरचित कविता उन्हें दी और कहा, 'कृपा करके इस कविताको आप विशाल भारतके रविवारके अंकमें जब पंडितानीजी सुशीला भाभीजीने देखा तो तुरंत पंडितजीको हमारे घर रुपये वापस देने भेजा और छाप दीजियेगा।' चटर्जी बाबूने कविता पढ़ी और कहा, कहलाया कि 'मानसिक संतुलन बनाये रखें, जिम्मेदारियाँ 'भाई! इस कविताको तो मैं नहीं छाप सकता, अगर तुम बढ गयी हैं, शान्त, स्थिर चित्तसे घर सम्हालें।' ऐसा चाहो तो मुझे ले चलकर हुगली नदीमें डुबो सकते हो।' उन्होंने इसलिये कहा; क्योंकि मेरे पतिका गोलोकवास —उमेश प्रसाद सिंह

मनन करने योग्य तृष्णा ही दुःखका कारण चन्द्रवंशमें नहुष नामके एक चक्रवर्ती सम्राट् थे। प्राप्त हुए यथेच्छ विषयोंको अपने उत्साहके अनुसार उनके यति, ययाति, संयाति, आयाति, वियाति और धर्मपूर्वक भोगा और अपनी प्रजाका भली प्रकार पालन कृति-नामक छ: महाबलविक्रमशाली पुत्र हुए। यतिने किया। फिर शर्मिष्ठा और देवयानीके साथ विविध राज्यकी इच्छा नहीं की, इसलिये ययाति ही राजा हुआ। भोगोंको भोगते हुए 'मैं कामनाओंका अन्त कर दूँगा'— ययातिने शुक्राचार्यजीकी पुत्री देवयानी और वृषपर्वाकी ऐसा सोचते-सोचते वे क्षुब्धचित्त हो गये तथा उन्होंने कन्या शर्मिष्ठासे विवाह किया था। देवयानीने यदु और इस प्रकार अपना उदुगार प्रकट किया— तुर्वसुको जन्म दिया तथा वृषपर्वाको पुत्री शर्मिष्ठाने दुह्य, 'भोगोंकी तृष्णा उनके भोगनेसे कभी शान्त नहीं अनु और पुरुको उत्पन्न किया। होती, बल्कि घृताहुतिसे अग्निके समान वह बढ़ती ही

जाती है। सम्पूर्ण पृथ्वीमें जितने भी धान्य, यव, सुवर्ण,

ययातिको शुक्राचार्यजीके शापसे युवावस्थामें ही

बुढ़ापेने घेर लिया था। पीछे शुक्रजीके प्रसन्न होकर आज्ञा देनेपर उन्होंने अपनी वृद्धावस्थाको ग्रहण करनेके लिये बड़े पुत्र यदुसे कहा—'वत्स! तुम्हारे नानाजीके

शापसे मुझे असमयमें ही वृद्धावस्थाने घेर लिया है, अब उन्हींकी कृपासे मैं उसे तुमको देना चाहता हूँ। मैं अभी

विषय-भोगोंसे तृप्त नहीं हुआ हूँ, इसलिये एक सहस्र वर्षतक मैं तुम्हारी युवावस्थासे उन्हें भोगना चाहता हूँ। इस विषयमें तुम्हें किसी प्रकारकी आनाकानी नहीं करनी चाहिये।' किंतु पिताके ऐसा कहनेपर भी यदुने वृद्धावस्थाको

ग्रहण करना न चाहा। तब पिताने उसे शाप दिया कि तेरी सन्तान राजपदके योग्य न होगी। फिर राजा ययातिने तुर्वस्, द्रह्य और अनुसे भी

अपना यौवन देकर वृद्धावस्था ग्रहण करनेके लिये कहा, तथा उनमेंसे प्रत्येकके अस्वीकार करनेपर उन्होंने उन सभीको शाप दे दिया। अन्तमें सबसे छोटे शर्मिष्ठाके पुत्र

पूरुसे भी वही बात कही तो उसने अति नम्रता और आदरके साथ पिताको प्रणाम करके उदारतापूर्वक कहा— 'यह तो हमारे ऊपर आपका महान् अनुग्रह है।' ऐसा

कहकर पूरुने अपने पिताकी वृद्धावस्था ग्रहणकर उन्हें अपनी युवावस्था दे दी।

कामना होती है। अत: अब मैं इसे छोडकर अपने चित्तको भगवान्में ही स्थिरकर निर्द्वन्द्व और निर्मम होकर वनमें विचरूँगा।'

यदा न कुरुते भावं सर्वभूतेषु पापकम् । समदृष्टेस्तदा पुंस: सर्वा: सुखमया दिश:॥

वापस लेकर उसकी युवावस्था लौटा दी। फिर उन्होंने दक्षिण-पूर्व दिशामें तुर्वसुको, पश्चिममें दुह्युको, दक्षिणमें यदुको और उत्तरमें अनुको (पूरुके

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma जीर्यतः क्ष्मां ज्ञान्यज्ञाः स्मिन्नेत्राभिपूर्यते । HLOVE BY Avinash/Shariff जीर्यतः क्ष्मां दन्ता जीर्यतः जीर्यतः । धनाशा जीविताशा च जीर्यतः ॥ (वि०पु० ४।१०।२३—२७)

अधीनस्थ) माण्डलिकपदपर नियुक्त किया तथा पूरुको सम्पूर्ण भूमण्डलके राज्यपर अभिषिक्तकर स्वयं वनको राजा ययातिने पूरुकी युवावस्था लेकर समयानुसार चले गये।

* न जातु काम: कामानामुपभोगेन शाम्यति । हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते ॥ यत्पृथिव्यां व्रीहियवं हिरण्यं पशवः स्त्रियः । एकस्यापि न पर्याप्तं तस्मात्तृष्णां परित्यजेत्॥

पशु और स्त्रियाँ हैं, वे सब एक मनुष्यके लिये भी पर्याप्त नहीं हैं, इसलिये तृष्णाको सर्वथा त्याग देना चाहिये। जिस समय कोई पुरुष किसी भी प्राणीके लिये पापमयी भावना नहीं करता, उस समय उस समदर्शीके लिये सभी दिशाएँ

सुखमयी हो जाती हैं। दुर्मतियोंके लिये जो अत्यन्त दुस्त्यज है तथा वृद्धावस्थामें भी जो शिथिल नहीं होती, बुद्धिमान् पुरुष उस तृष्णाको त्यागकर सुखसे परिपूर्ण हो जाता है। अवस्थाके जीर्ण होनेपर केश और दाँत तो जीर्ण

हो जाते हैं, किंतु जीवन और धनकी आशाएँ उसकी जीर्ण होनेपर भी जीर्ण नहीं होतीं। * विषयोंमें आसक्त रहते हुए

मुझे एक सहस्र वर्ष बीत गये, फिर भी नित्य ही उनमें मेरी

तदनन्तर राजा ययातिने पूरुसे अपनी वृद्धावस्था

नवीन विशिष्ट प्रकाशन—शीघ्र प्रकाश्य

चित्रमय श्रीरामचरितमानस (कोड 2295) [ग्रंथाकार, सटीक चार रंगोंमें आर्ट पेपरपर] जिज्ञासु पाठकोंकी विशेष माँगपर 300 आकर्षक रंगीन चित्रोंके साथ पहली बार प्रकाशित हो रहा है। मूल्य ₹ 1600



छं०—परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई तपपुंज सही। देखत रघुनायक जन सुखदायक सनमुख होइ कर जोरि रही॥ अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहिं आवइ बचन कही। अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुगल नयन जलधार बही॥

श्रीरामजीके पिवत्र और शोकको नाश करनेवाले चरणोंका स्पर्श पाते ही सचमुच वह तपोमूर्ति अहल्या प्रकट हो गयी। भक्तोंको सुख देनेवाले श्रीरघुनाथजीको देखकर वह हाथ जोड़कर सामने खड़ी रह गयी। अत्यन्त प्रेमके कारण वह अधीर हो गयी। उसका शरीर पुलिकत हो उठा; मुखसे वचन कहनेमें नहीं आते थे। वह अत्यन्त बड़भागिनी अहल्या प्रभुके चरणोंसे लिपट गयी और उसके दोनों नेत्रोंसे जल (प्रेम और आनन्दके आँसुओं) की धारा बहने लगी॥१॥

धीरजु मन कीन्हा प्रभु कहुँ चीन्हा रघुपति कृपाँ भगति पाई। अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी ग्यानगम्य जय रघुराई॥ मैं नारि अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु जन सुखदाई। राजीव बिलोचन भव भय मोचन पाहि पाहि सरनहिं आई॥

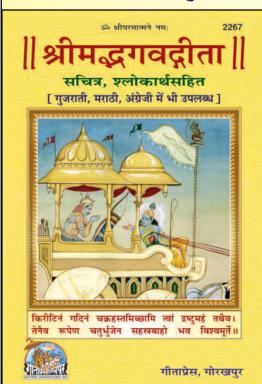
फिर उसने मनमें धीरज धरकर प्रभुको पहचाना और श्रीरघुनाथजीकी कृपासे भक्ति प्राप्त की। तब अत्यन्त निर्मल वाणीसे उसने [इस प्रकार] स्तुति प्रारम्भ की—हे ज्ञानसे जानने



LICENSED TO POST WITHOUT PRE-PAYMENT LICENCE No. WPP/GR-03/2020-2022

श्रीमद्भगवद्गीता—सचित्र, श्लोकार्थसहित

[हिन्दी, गुजराती, मराठी तथा अंग्रेजीमें उपलब्ध]



विश्व-साहित्यमें श्रीमद्भगवदीताका अद्भितीय स्थान है। मनुष्यमात्रको कर्तव्य और मुक्तिको शिक्षा प्रदान करनेवाला यह एक अलौकिक एवं प्रासादिक ग्रन्थ है। इसमें स्वयं भगवानने अर्जुनको निमित्त बनाकर मनुष्यमात्रके कल्याणके लिये उपदेश दिया है। इस छोटे-से ग्रन्थमें भगवानुने अपने हृदयके बहुत ही विलक्षण भाव भर दिये हैं, जिनका आजतक कोई पार नहीं पा सका और न पा ही सकता है।

प्रस्तुत ग्रन्थमें श्रीगीताके मुल श्लोकोंके साथ सरल भाषामें उसका अर्थ और अन्तमें आरती दी गयी है। साथ ही प्रसङ्गानुकूल यथास्थान बहुत ही मनोरम 129 आकर्षक चित्रोंको भी दिया गया है।

आशा है. इसके स्वाध्यायसे सामान्य-से-सामान्य व्यक्ति भी गीताके भावोंको आसानीसे हृदयंगम कर अपने जीवनको धन्य कर सकता है।

(कोड 2267) हिन्दी मृ०₹250 (कोड 2269) गुजराती मृ०₹250 (कोड 2271) मराठी मृ०₹250 (कोड 2283) अंग्रेजी मृ०₹250

अप्रैल 2021 से मार्च 2022 तक प्रकाशित नवीन प्रकाशन

कोड	पुस्तक-नाम	मू०₹	कोड	पुस्तक-नाम	मू०₹	कोड	पुस्तक-नाम	मू०₹	कोड	पुस्तक-नाम	मू०₹	
2267	श्रीमद्भगवद्गीता सचित्र		2285	श्रीज्ञानेश्वरी सटीक	150	2292	अच्छे बनो	10		नेपाली —		
	श्लोकार्थसहित	250	2286	सचित्र सुन्दरकाण्ड		2293	सत्संगका प्रसाद	10	2273	अध्यात्मरामायण	150	
2270	अयोध्या-दर्शन	25		मूल बेड़िआ रंगीन	30		असमिया		2272	गीता-माहात्म्यसहित	70	
	गुजराती —			बँगला	\vdash	2277	गीता-साधक-संजीवनी	450		ENGLISH		
2269	श्रीमद्भगवद्गीता सचित्र		2275	ब्रह्मचर्य विज्ञान	60		मराठी 📉		2283	Śrīmadbhagavadgītā		
	श्लोकार्थसहित	250	2274	श्रीचैतन्यभागवत	200	2271	श्रीमद्भवगद्गीता सचित्र			(with Sanskrit Text		
2276	कूर्मपुराण	170	2288	श्रीश्रीगीता एवं			श्लोकार्थस हित	250		and English		
2290	मत्स्यमहापुराण	380		रामायण	15		तेलुगु			Translation in		
2284	सुन्दरकाण्ड मूल		2289	भागवत नवनीत	200	2287	श्रीललिताविष्णुसहस्रनाम-			four colour)	250	
	बृहदाकार टाइप	60	2291	जीवनका सत्य	10		स्तोत्र मंजरी	40				

booksales@gitapress.org थोक पुस्तकोंसे सम्बन्धित सन्देश भेजें। gitapress.org सूची-पत्र एवं पुस्तकोंका विवरण पढ़ें।

मँगवानेके लिये गीताप्रेस, कुरियर/डाकसे गोरखप्र—273005 book.gitapress.org/gitapressbookshop.in

If not delivered; please return to Gita Press, Gorakhpur—273005 (U.P.)